[illegible] दयानन्द महिला [illegible]

सत्यमेव जयते । नानृतम् ।

पौराणिक-मत

* विचित्र लीला *

प्रथम भाग ।

लेखक व प्रकाशक

आर्यवीर पं० गोपालसिंह-विद्यावाचस्पतिः

धर्माध्यापक डी. ए. वी. हाईस्कूल, हिसार ।

Saraswati Printing Press, BHIWANI.

यतो धर्म ॥ ॐ ॥ स्ततो जयः ।

पौराणिक मत विचित्र लीला

*** प्रथम भाग ***

लेखक व प्रकाशक—

आर्यवीर- पं०गोपालसिंह 'विद्यावाचस्पतिः'

धर्माध्यापक—

सी, ए, वी, हाई स्कूल

हिसार ।

आर्य समाज पुस्तकालय
पुस्तक नं....... ५
हिसार
९
82

पं० रामनाथ शर्म्मा " त्रिपाठी „ के प्रबन्ध से—

सरस्वती प्रिन्टिङ्ग प्रेस भिवानी में मुद्रित ।

प्रथमवार ००० | विक्रमी सम्वत् १९८१ | मूल्य— ॥=)

लेखक व प्रकाशक—

आर्य वीर पं० गोपाल सिंह " विद्यावाचस्पतिः "

पुस्तक मिलने का पूरा पता—

आर्यवीर पं० गोपालसिंह " विद्यावाचस्पतिः "

धर्माध्यापक—

सी०ए०वी०हाई स्कूल

हिसार ।

मुद्रक—

पं० रामनाथ शर्म्मा " त्रिपाठी "

दी सरस्वती प्रिन्टिङ्ग प्रेस हालुबाजार

हिसार ।

❀ वक्तव्य ❀

बहुत दिनों से इस प्रकार की पुस्तक की बड़ी भारी आवश्यक्ता अनुभव की आरही थी कि जिस पुस्तक में पौराणिक मत की विचित्र लीलाओं का चित्र प्रमाण सहित संग्रह रूप में उपस्थित हो। सो इस पुस्तक में पुराण, महाभारत, स्मृति, बाल्मी की रामायण आदि जो की पौराणिक मत के विशेष माननीय ग्रन्थ माने जाते हैं, बिना किसी टीका टिप्पणी के उनर ग्रन्थों के पुरे पते सहित प्रमाण देकर अर्थ मात्र ही किया गया है। और बिना किसी पक्ष पात के सत्या सत्य तथा धर्मा धर्मका निर्णय करनेके लिये जनताके सन्मुख जैसा की पौराणिकमतके ग्रन्थोंमें है रखदिया है जोलोग आर्यसमाज को निरर्थक ही कोसा करते हैं वह कृपया

"सप्त मर्यादा कवयस्त तक्षुस्तासामेकामिदभ्यंऽहुरोगात,, अथर्व वेद,

इस मन्त्र का भाष्य करते हुवे यास्काचार्य जी लिखते हैं कि– (स्तेयं) चोरी (तल्पारोहणं) व्यभिचार (भ्रूणहत्या) गर्भपात (ब्रह्महत्या) ज्ञानीकावध वा ज्ञान प्रचार में प्रतिबन्ध डालना (सुरापानं) शराब पीना (दुष्कृतस्य कर्मणः पुनः पुनः सेवा) पाप कर्मों को बार २ करते जाना (पातकेऽनृतोद्यमिति) पाप करने पर उस को छिपाने केलिये झूठ बोलना। जो इन मर्य्यादा ओं में से एक का भी उल्लंघन करता है वह महा पापी होता है " अक्षैर्मा दीव्यः ,, जुआ मत खेल इत्यादि से वेद ने कैसा पवित्र उपदेश दिया है। सो इस वेद के उपदेश की ओर ध्यान देकर विचार करें कि संसार में मनुष्य मात्र का कल्याण वेद से हो सकता है या पुराणों से जब कि पुराणों में इन सब महापापों का विधान पाया जाता है।

इस पुस्तक में पांच प्रकरण हैं। १–मांस प्रकरण २–मद्य (शराब) प्रकरण ३–व्यभिचार प्रकरण ४–द्यूत (जूआ) प्रकरण ५–विविध प्रकरण (भिन्न२विषयों के प्रमाणों का संग्रह) पूर्वोक्त ग्रन्थों में मांस, शराब, व्यभिचार, जूआ इत्यादि महापापों का विधान है और महापुरुषों पर इन महापापों का कलंक लगाया है परन्तु फिर भी इन पाप कर्मों को पौराणिक हठधर्मी इन बातों की पुष्टि करके सदाचारी जनों का आचरण बतलाते हैं। परन्तु आर्य समाज इन सब बातों को पूर्वजों पर कलंक लगाया है। इस प्रकार से महावाम मार्ग का प्रचार किया गया है और किया जारहा है। ऐसा मानता है (कोई एक सज्जनों का कथन है कि क्यों जी पुराणों में जहां २ इस प्रकार की बातें आती हैं उन्हें छोड़ दो और उन में से अच्छी २ शिक्षा ग्रहण कर लो ॥ इस का उत्तर स्पष्ट है कि यह कभी नहीं हो सकता क्योंकि विषयुक्त अमृत भी हो वह मृत्यु का ही कारण होगा। सो इस पुस्तक को पढ़कर अत्यन्त विषैले और महावाम मार्ग की शिक्षा देने वाले पौराणिक मत और पुराणादि ग्रन्थों का शीघ्र परित्याग करें और लौकिक तथा पारलौकिक सुख प्राप्त कराने वाले, और अमर जीवन देने वाले सत्य सनातन पवित्रता के स्रोत वेदों को अपनायें और अपने जीवन को पवित्र और सफल बनावें इसी आवश्यकता को समझ कर इस पुस्तक का निर्माण किया गया है आशा है सब सज्जन इस पुस्तक से लाभ उठायेंगे ॥

विनीतः—

गोपालसिंह "विद्यावाचस्पतिः"

* ओ३म् *

पौराणिक मत विचित्र लीला

प्रथम भाग ।

[मांस प्रकरण]

* मनुस्मृति जैसे पवित्र धर्म शास्त्र में ब्राह्मणों के लिये मांस भक्षण का विधान *

श्लोक–हविर्यं चिर रात्राययच्चानन्त्याय कल्प्यते ।
पितृभ्यो विधि वद्दत्तंतत्प्रवक्ष्याम्य शेषतः ॥

मनु० अ० ३–२६६

अर्थ—जो हवि पितरों के लिये विधि से दिया जाता है वह बहुत काल की तृप्ति के लिए होता है । सो मैं सम्पूर्णता से कहूंगा । २६६

१-[एक मास तक पितरों को तृप्त करने का भोजन]

श्लोक–तिलैर्व्रीहियवै र्माषैरद्भिर्मूल फलेन वा ।

दत्तेन मांसं तृप्यन्ति विधिवत्पितरो नृणाम् ३-२६७

अर्थ—तिल, धान, जौ, काले उड़द, जल मूल और फल इनमें से कोई एक शास्त्र के अनुसार श्राद्ध में दिया जाय उससे मनुष्यों के पितर एक महीने तक तृप्त रहते हैं ॥ २६७ ॥

२-[पांच मास तक तृप्त रखने वाला पितरों का भोजन]

श्लोक—द्वौ मासौ मत्स्य मांसेनत्रीन्मासान्हारिणेन तु औरभ्रेणाथ चतुरःशाकुनेनाथ पञ्च वै ॥ २६८

अर्थ—मछलियों के मांस से दो महीने तक पितर तृप्त रहते हैं। हरिणों के मांस से तीन महीने तक, मेंढ़े के मांस से चार महीने तक, और द्विजाति के भक्ष्य पक्षियों के मांस से पांच महीने तक पितर तृप्त रहते हैं ॥ २६८ ॥

३-[नौ मास तक पितरों को तृप्त रखने वाला भोजन]

श्लोक—षण्मासांच्छाग मांसे न पार्षतेन च सप्त वै अष्टावेणस्य मांसेन रौरवेण नवैव तु ॥ २६९

अर्थ—बकरे के मांस से ६ महीने तक तृप्त रहते हैं और पृषत नाम चित्र मृग के मांस से सात महीने तक,हरिण के मांस से आठ महीने तक और रुरु नाम के मृग मांस से नौ महीने तक तृप्त रहते हैं ॥ २६९ ॥

४-[एक वर्ष से बारह वर्ष तक पितरों को तृप्त रखने वाला भोजन]

श्लोक—संवत्सरंतु गव्येन पयसा पायसेन च।
वार्ध्रीणसस्य मांसेन तृप्ति र्द्वादश वार्षिकी ॥२७१

अर्थ—एक वर्ष तक गौ के दूध से अथवा उससे बनी हुई खीर से सन्तुष्ट रहते हैं और नदी आदि में पानी पीनेसे जिसके दोनों कान और जीभ जल को छूवे ऐसे सफेद बुड्ढे बकरे को त्रिपिब और वार्ध्रीणस कहते हैं उस बकरे के मांस से १२ वर्ष की तृप्ति होती है ॥ २७१ ॥

५-[ग्यारह मास तक पितरों को तृप्त रखने वाला भोजन]

श्लोक-दश मासांस्तु तृप्यन्ति वराह महिषा मिषैः
शश कूर्मयोस्तु मांसेन मासानेकादशैवतु ॥२७०

अर्थ—जङ्गली सूअर और भैंसे के मांस से दश महीने तृप्त रहते हैं और खरगोश तथा कछुवे के मांस से ग्यारह महीने तक तृप्त रहते हैं ॥ २७० ॥

६-❀पितरों की अनन्त तृप्ति करने वाला भोजन❀

श्लोक-काल शाकं महाशल्काः खंग लोहा मिषं मधु। आनन्त्यायैव कल्प्यन्ते मुन्यन्नानि च सर्वशः ॥ २७२ ॥

अर्थ—काल शाक नाम का एक प्रकार का शाक, महाशल्क एक प्रकार की मच्छली, खड्ग गैंडा, लोहामिष लाल बकरा इनके मांस और शहद सब मुनियों के अन्न यह सब अनन्त तृप्ति के लिये होते हैं ॥ २७२ ॥

७—❀ब्राह्मण के लिये मांस खाने की विधि❀

श्लोक—प्रोक्षितं भक्षयेन्मांसं ब्राह्मणानां च काम्यया। यथा विधि नियुक्तस्तु प्राणानामेव चात्यये ॥ मनु०५-२७

अर्थ—प्रोक्षण नाम संस्कार से शुद्ध किये हुवे और यज्ञ से बचे हुवे मांस को ब्राह्मण भक्षण करे और जो ब्राह्मणों को मांस खाने की ईच्छा होय तो भी नियम से एकबार खाय तथा श्राद्ध में और मधुपर्क में गृह वचन के अनुसार नियम से मांस खाना चाहिये। और दूसरा आहार न मिलने से प्राणों का नाश होता हो या रोग का कारण हो तो नियम से मांस खाय ॥ २७ ॥

८-❀ प्रजापति ने सब कुछ प्राणी का अन्न बनाया है ❀

श्लोक—प्राणस्यान्न मिदं सर्वं प्रजापतिर कल्पयत्। स्थावरं जंगमं चैव सर्वं प्राणस्य भोजनम् ॥ ५-२८ ॥

अर्थ—प्रजापति ने यह सब प्राणी का अन्न बनाया जैसे जङ्गम पशु आदि और स्थावर, धान, जव आदि यह सब उसके भोजन हैं अतः प्राणों की रक्षा के लिये जीव मांस को खाय ॥ २८ ॥

९—❀ब्राह्मण को संस्कृत पशु खाने की आज्ञा❀

श्लोक—असंस्कृतान् पशून् मन्त्रैर्नाद्याद्विप्रः कदाचन। मन्त्रैस्तु संस्कृता नद्याच्छाश्वतं विधिमास्थितः॥ ३६॥

अर्थ—मन्त्रों से संस्कार न किया हुवा पशु ब्राह्मण को कभी नहीं खाना चाहिये। परन्तु मन्त्रों से संस्कार किये हुवे पशु को नित्य विधि पूर्वक खाया करे॥ ३६॥

१०❀ श्राद्ध में मांस न खाने वाला मर के २१ जन्मों तक पशु योनि में ❀

श्लोक—नियुक्तस्तु यथान्यायं यो मांसं नात्ति मानवः। स प्रेत्य पशुतां याति सम्भवानेक विंशतिम्॥ ३५॥

अर्थ—श्राद्ध में तथा मधुपर्क में शास्त्र के अनुसार जो पुरुष मांस को नहीं खाता है वह मर के इक्कीस जन्मों तक पशु होता है॥ ३५॥

११ ❀ परम पवित्र कर्मों में पशु वध ❀

श्लोक—मधुपर्के च यज्ञे च पितृदैवत कर्मणि।
अत्रैव पशवो हिंस्या नान्यत्रेत्यब्रवीन्मनुः॥ ४१

अर्थ—"समांसो मधुपर्कः" मांस समेत मधुपर्क होता है इस वचन से मधुपर्क में यज्ञ कर्म में और अग्निष्टोम आदि पित्र्य तथा दैव कर्म मे पशु मारने योग्य हैं। अन्यत्र नहीं, यह मनु जी का कहना है॥ ४१॥

१२ ❀ मांस मद्य मैथुन का सेवन मनुष्य का स्वाभाविक धर्म है ❀

श्लोक—न मांस भक्षणे दोषो न मद्ये न च मैथुने। प्रवृत्तिरेषाभूतानां निवृत्तिस्तु महा फला॥ ५६॥

अर्थ—मांस, मदिरा और मैथुन इनके सेवन में कोई दोष नहीं है। यह तो प्राणियों का स्वाभाविक धर्म है॥५६

१३ ❀ वेदवेत्ता ब्राह्मण और पशुओं के स्वर्ग प्राप्ति का साधन ❀

श्लोक—एष्वर्थेषु पशुन्हिन्सन्वेद तत्वार्थविद्द्विजः
आत्मानं च पशुं चैव गमयत्युत्तमां गतिम् ॥४२

अर्थ—पूर्वोक्त इन मधुपर्क आदि पदार्थों में पशुओं को मारता हुवा वेद के तत्व अर्थ का जानने वाला द्विज आपको तथा पशु को उत्तम गति अर्थात् स्वर्ग में पहुंचाय देता है ॥ ४२ ॥

१४❀ब्राह्मणों को श्राद्ध और यज्ञ में अच्छे २ पशु मारने चाहियें ❀

श्लोक—यज्ञार्थं ब्राह्मणैर्वध्याः प्रशस्तामृग पक्षिणः
भृत्यानां चैव वृत्त्यर्थं मगस्त्यो ह्याचरत्पुरा ॥ २२

अर्थ—यज्ञ के लिये और अपने माता पिता आदि के पोषण के लिये ब्राह्मणों को अच्छे २ मृग पक्षी आदि मारने चाहियें। क्योंकि पहिले अगस्त्य मुनि भी ऐसा ही करते रहे हैं ॥ २२ ॥

१५ ❀ मांस खाने की पवित्र विधि ❀

श्लोक—यज्ञायजग्धि मांमस्येत्येष दैवो विधिः

स्मृतः ॥ ३१ ॥ क्रीत्वा स्वयंवाप्युत्पाद्य परोप कृत मेव वा। देवान्पितृंश्चार्चयित्वा खादन्मांसं न दुष्यति ॥ ३२ ॥

अर्थ—यज्ञ के लिये मांस का खाना देवताओं की विधि मानी जाती है ॥ मोल लेकर अपने आप तैयार करके अथवा किसी अन्य द्वारा लाये हुये मांस को देवता तथा पितरों को देकर शेष बचे हुवे को खाता हुवा पुरुष पाप को प्राप्त नहीं होता है ॥ ३२ ॥

पुराणों में ऋषि मुनि और ब्राह्मणों पर मांस भक्षण का दोष।

१–[श्राद्ध में मांस भक्षण]

श्राद्धे देवान् पितॄन् प्रार्च्य खादन्मांसं न दोष भाक् ॥ गरुड़ आचार कां०अ० ९६ श्लोक७२

अर्थ—श्राद्ध में देवता और पितरों को पूजकर मांस खाता हुवा दोषी नहीं होता ॥

२—❀कथावाचक ब्राह्मणों को मांस का दान❀

तस्मात्पूज्योनृप श्रेष्ठ प्रथमं वाचको बुधैः ॥१४८
हिरण्यं च सुवर्णं च धनं धान्यं तथैव च॥१५०
अन्नं चापि तथा पक्वं मांसं च कुरुनन्दन।
दातव्यं प्रथमं तस्मै श्राबकै नृप सत्तम ॥ १५१
भविष्य पुराण ब्रह्मपर्व अ० २१६

अर्थ—हे अर्जुन! बुद्धिमानों को पहिले कथा करने वाले ब्राह्मण की पूजा करनी चाहिये ॥ १४८ ॥

सुवर्ण, धन, अनाज पका हुवा अन्न, तथा पका हुवा मांस, हे कुरुनन्दन! पहिले कथा करने वाले इस ब्राह्मण को देना चाहिये ॥ १५१ ॥

३-❀सत्यव्रत का वसिष्ठ मुनि की गौ को मार कर खाना❀

पितश्चापरितोषेण गुरोदोग्ध्री वधेन च।

अप्रेक्षितोपयोगेन च त्रिविधस्ते व्यतिक्रम ॥१४
त्रिशंकुरिति हो वाच त्रिशंकुरिति स स्मृतः ५

यह सारी कथा शिवपुराण उमासंहिता अ० ३७ श्लोक ४८ से अ० ३८ श्लोक १६ तक है।

अर्थ—पिता को रुष्ट करने से, गुरू को गौ मारने से, और गौ को बिना शास्त्र की विधि के मार कर खाने से तेरे यह तीन अपराध हैं। अतः तेरा नाम त्रिशंकु होगा।

इस प्रकार वसिष्ठ ने सत्यव्रत को शाप दिया परन्तु सत्यव्रत कुछ भाग विश्वामित्र के कुटुम्ब को भी दे आया करता था इस पर विश्वामित्र ने प्रसन्न होकर उसको वरदान दिये।

४-[विश्वामित्र का सत्यव्रत को वरदान]

अनावृष्टि भये चास्मिञ्जाते द्वादश वार्षिके।
अभिषिच्य पितुराज्ये याजयामास तं मुनिः ।१७
मिषतां देवतानाञ्च वसिष्ठस्य च कौशिकः।
स शरीरं तदा तं तु दिवमारोहयत् प्रभुः ॥ १८

अर्थ—उस राज्य में बारह वर्ष वर्षा न होने से विश्वामित्र ने सत्यव्रत को पिता के राज्य पर बैठाकर यज्ञ करवाया और देवता तथा वसिष्ठ के विरुद्ध होने पर भी उस शरीर सहित स्वर्ग में पहुंचा दिया॥ १८॥

यह वही सत्यव्रत है जिसकी स्त्री का नाम सत्यरथा था जिससे सत्यवादी हरिश्चन्द्र उत्पन्न हुआ।

५—❀विश्वामित्र के पुत्रों का गर्ग की गौ चुरा कर खाना❀

परिचय—विश्वामित्र के पुत्र गर्ग ऋषि के शिष्य थे वह गुरुकी गौंको चुरालिया करते थे। गौके साथ उसका बछड़ा भी होता था। एक दिन मार्ग में भूखसे तड़पते हुवे बालकपन और प्रमाद से इनकी इच्छा गौ को मार कर खाने की हो गई तब इनमें से जो छोटा था वह पितरों का बड़ा भगत था। उसने कहा कि यदि तुम इस काम को आवश्यकीय समझते हो तो पितरों के लिये श्राद्ध करते हुवे इस गौ का हनन करो क्योंकि—

एव मेपात्र गौ धर्मं प्राप्स्यते नात्र संशयः।

पितृनभ्यर्च्यधर्मेण नाधर्मो नो भविष्यति ॥ १८
एवमुक्ताश्चते सर्वे प्रोक्षयित्वा च गां तदा।
पितृभ्यः कल्पयित्वा तु ह्युपायुंजत भारत ॥१९
शिवपुराण उमासंहिता अ० ४१

अर्थ—इस प्रकार यह गौ धर्म को प्राप्त होवेगी इसमें कुछ भी संशय नहीं और धर्म पूर्वक पितरों की पूजा करके हमको भी पाप न लगेगा। इस प्रकार कहने पर उन सबने शास्त्र की विधि के अनुसार उस गौ का प्रोक्षण करके और पितरों के निमित्त कल्पना करके उसका मांस भक्षण किया॥१९

इस गौ के भक्षण करने के अनन्तर सब भाई गुरु के समीप आकर कहने लगे कि गौ को तो सिंह ने मार दिया बाकी यह बछड़ा आप सम्भाल लीजिये। गर्ग ने पुनः दुःखी मन से उस बछड़े को सम्भाल लिया फिर—

मिथ्योपचारतः पापमभूत्तेषां च गोघ्नताम् ॥ २१

गौ के मारने वाले विश्वामित्र के पुत्रों को झूठ बोलने का पाप लगा और मृत्यु के अनन्तर सातों भ्राता उस पापके कारण पशुओं की योनि में गये परन्तु इनको अपने पिछले

जन्म का ज्ञान रहा क्योंकि—

विप्रयोनौ तु यन्मोहान्मिथ्याऽपचरितं गुरौ।
तिर्यग्योनौ तथा जन्म श्राद्धाज्ज्ञानं च लेभिरे ३५
पितृप्रसादाद्युष्माभिसम्प्राप्तं सुकृतं भवेत्।
प्रोक्षयित्वा धर्मेण पितृभ्यश्चोप कल्पिताः ॥ ५०

अर्थ—ब्राह्मण की योनि में होते हुवे जो उन्होंने गुरु के साथ झूंठा का व्यवहार किया अतः उनका जन्म पशु योनि में हुआ। क्योंकि उन्होंने श्राद्ध किया था इसीलिये उनको अपने पिछले जन्म का ज्ञान रहा॥

६—❀गोवध की आज्ञा❀

अश्वमेधं गवालंभं संन्यासं पल पैतृकम् ॥११२
देवरेण सुतोत्पत्तिं कलौ पञ्च विवर्जयेत् ॥११३

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण कृष्ण जन्म खण्ड ४ अ० ११५

अर्थ—घोड़े का यज्ञ में वध करना, गौ का यज्ञ में मारना, संन्यास लेना, श्राद्ध में मांस का उपयोग करना, देवर से नियोग द्वारा सन्तानोत्पत्ति करना, कलियुग में यह पांच विवर्जित हैं॥

७-❀आदि मनु का नित्य ३ करोड़ ब्राह्मणों को गो मांस का भोजन देना❀

आद्यो मनु ब्रह्मपुत्रः शतरूपा पतिव्रता।
धर्मिष्ठानां वरिष्ठश्च गरिष्ठो मनुषु प्रभुः ॥ ४५
स्वायम्भुवः शंभु शिष्यो विष्णुव्रत परायणः।
जीवन्मुक्तो महाज्ञानी भवतः प्रपितामहः ॥४६
राजसूय सहस्रं च चक्रे वै नर्मदा तटे।
त्रिलक्षमश्वमेधं च त्रिलक्षं नरमेधकम् ॥ ४७
गो मेधं च चतुर्लक्षं विधिवन्महदद्भुतम्।
ब्राह्मणां त्रिकोटिश्च भोजयामास नित्यशः ॥ ४८
पञ्चलक्ष गवां मांसैः सुपक्वैर्घृत संस्कृतैः।
चर्व्यैश्चोष्यैर्लेह्यैर्यये मिष्टद्रव्यैः सुदुर्लभैः ॥ ४९

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण प्रकृतिखण्ड अ० ४५ से ४९ तक ॥

अर्थ—आदि मनु ब्रह्मा का पुत्र था और उसकी पतिव्रता स्त्री शतरूपा थी। प्रभु आदि मनु धर्मात्मा और श्रेष्ठों-मे भी श्रेष्ठ थे। महादेव का शिष्य, विष्णु का भक्त, ब्रह्मा

का पुत्र, आपका परदादा आदि मनु बड़ा ज्ञानी और जीवन्मुक्त था। इसने नर्मदा के तट पर एक हजार राजसूय यज्ञ तीन लाख अश्वमेध, तीन लाख नरमेध, और चार लाख गोमेध जो बड़े अद्‌भुत और विधि के अनुकूल किये गये थे वह तीन करोड़ ब्राह्मणों को नित्य प्रति पांच लाख गौओं के अच्छी प्रकार पकाये हुवे मांस और चबाने, चूसने, चाटने और पीने के दुर्लभ मीठे पदार्थों से भोजन कराया करते थे।

८-❀राजा चैत्र का नित्य प्रति ब्राह्मणों को गौ मांस का भोजन देना❀

बभूव राजा चित्रायां चैतरो वै मण्डलेश्वरः ॥९५
सप्त द्वीपवतीं पृथिवीं शास्ति वै धार्मिकोबली।
शतंनद्यो घृतानां च दध्नां नद्यः शतानि च॥९६
शतानि नद्यो दुग्धानां मधु नद्यश्च षोडशः।
दश नद्यश्च तैलानां शर्करा लक्षराशयः॥ ९७
मिष्टान्नानां स्वस्तिकानां लक्षराशिश्च नित्यशः
पञ्चकोटि गवां मांसं सापूपं स्वन्नमेवच॥ ९८

एतेषां च नदी राशीर्भुञ्जते ब्राह्मणा भुने ॥६६

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण प्रकृतिखण्ड २ अध्याय ६१।

अर्थ—चित्रा में प्रतापीराजा चैत्र पैदा हुआ जो बड़ा धर्मात्मा और बली था। सात द्वीपों समेत पृथिवी पर राज्य करता था। सौ नदियां घृत की, सौ नदियां दही की, सौ नदियां दूध की, सोलह नदियां मधु की, दश नदियें तैल की, और एक लाख शक्कर के ढेर मीठे और कल्याण करने वाले एक लाख पकवान के ढेर, पांच करोड़ गौओं का मांस पूड़ों तथा उत्तम अन्न सहित इन वस्तुओं के नदी तथा ढेरों को नित्य प्रति उसके यहां ब्राह्मण भोजन किया करते थे।

९-* रुक्मणी के विवाह का सामान *

गवां लक्षं छेदनं च हरिणानां द्विलक्षकम्।
चतुर्लक्षं शशानां च कूर्माणां च तथा कुरु ॥६१
दश लक्षं छागलानां भेटानां तच्चतुर्गुणा।
पर्वणि ग्राम देव्यै च बलि देहि च भक्तितः ॥६२
एतेषां पक्वमांसं च भोजनार्थं च कारय।

परिपूर्णं व्यंजनानां सामग्रीं कुरु भूमिप ॥ ६३

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण कृष्ण जन्मखण्ड ४ अ० १०५।

अर्थ—एक लाख गौओं को छेदन करो, दो लाख हरिणों को काटो, चार लाख खरगोशों को हनन करो इसी प्रकार चार लाख कछुओं को मारो, दश लाख बकरों को और चालीस लाख मीठों का वध करो। अच्छे पर्व के दिन ग्राम की देवी के लिये भक्ति से बलिदान दो। इन उपरोक्त जानवरों के मांस को पकाओ, और भोजन के लिये तैय्यार करो। हे राजन्! पूर्ण नमकीन शाकादि सब सामग्री को इस प्रकार तैय्यार करो।

इस प्रकार रुक्मणी के भाई ने रुक्मणी के विवाह के लिये आवश्कीय वस्तुएं अपने पिता को गिनवाईं।

१०❀राजा ने पुत्र के कथनानुसार ही सामान तैयार किया ❀

राजा संभृत संभारो बभूव मत्वरंमुदः।
निमन्त्रणं च सर्वत्र चकार च सुताज्ञया ॥ ६६

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण कृष्ण जन्मखंड अ० १०५ ।

अर्थ—राजा ने अपने पुत्र के कथनानुसार सब सामान तैय्यार कर लिया और सब जगह निमन्त्रण दिया।

यह सारा कृष्ण के विवाह का हाल इसी पुराणमें १०६ अध्याय तक पढ़ो, जिसमें देवता, ब्राह्मण, ऋषि, मुनि, भीष्म, युधिष्ठर, पांडव आदि सम्मिलित हुवे थे।

११ ❀विधि से की हुई हिंसा,हिंसा नहीं होती❀

गरुड़ पुराण आचारखंड अ० २३८ में।

विधिना या भवेद्धिंसा सात्वहिंसा प्रकीर्त्तिता ॥३

अर्थ—जो हिन्सा विधि से की जाती है वह हिन्सा नहीं कहाती।

१२ ❀ब्राह्मणों की आज्ञा से मांस खाने वाला दोषी नहीं होता❀

प्राणात्यये प्रोक्षितं च श्राद्धे च द्विज काम्यया।
पितृन्देवांश्चार्पयित्वा भुंजन्मांसं न दोष भाक् २६

भविष्य पुराण ब्रह्म पर्व अ० २३८

अर्थ—प्राणों के संकट में, श्राद्ध में, ब्राह्मणों की इच्छा से पितरों और देवताओं को अर्पण करके मांस खाने वाला दोष का भागी नहीं होता।

बाल्मीकी रामायण में श्री रामचन्द्र जी पर मांस भक्षण का दोष।

१ ❀ श्रीरामचन्द्र जी का मृग मांस से हवन करना ❀

एणेयं मांसमाहृत्य शालांयक्ष्यामहे वयम् ॥ २२

बा० रामा० अयो० कां० सर्ग ५६ ॥

हे लक्ष्मण ! मृग के मांस को लाकर हम अपनी कुटी में हवन करेंगे। क्योंकि बड़ी आयु के चाहने वालों को इस प्रकार करना आवश्यक है। हे लक्ष्मण ! शीघ्र मृग मार कर लाओ ताकि शास्त्र विधि से कार्य किया जाये। लक्ष्मण मृग मार कर लाया और उसका मांस तैयार किया पुनः राम ने उस मांस से मन्त्रोचारण करके हवन किया ॥

२ ❀ श्रीरामचन्द्र जी का सीता को मांस से प्रसन्न करना ❀

तां तथादर्शयित्वा तु मथिली गिरिनिम्नगाम्।
निषसाद गिरिप्रस्थे सीतां मांसेन छन्दयन् ॥१
इदंमेध्यमिदं स्वादु निष्ट पृमिदमग्निना।
एवमास्ते स धर्मात्मा सीतया सह राघवः ॥ २

बा० रामा० अयो० कां० सर्ग ६६।

पर्वत से नीचे उतरती हुई मन्दाकिनी नदी की सैर सीता को दिखाते हुवे रामचन्द्र जी सीता को मांस से प्रसन्न करते हुवे पहाड़ की चोटी पर बैठ गये। और कहने लगे कि यह बड़ा पवित्र है स्वादिष्ट है और अग्नि से भुना हुवा है इस प्रकार कहकर धर्मात्मा रामजी सीता सहित बैठ गये।

३ ❀राम और लक्ष्मण ने भूख के कारण चार मृग मारे❀

तौ तत्र हत्वा चतुरो महा मृगान्वराह मृश्यं पृषतं महारुरुम्। आदाय मध्येत्वरितं बुभक्षितौ वासाय कालेययतुर्वनस्पतिम् ॥

बा० रामा० अयो० कां० सर्ग ५२ श्लोक ५६

अर्थ—वहां वह दोनों राम लक्ष्मण, वराह, ऋश्य,पृषत महारुरु इन चार मृगों को मार मांस को जल्दी लेकर सायंकाल वास के लिये एक वनस्पति के नीचे गये।

४❀राम और लक्ष्मण ने अनेकों मृगोंको मारा❀

क्रोश मात्रं ततोगत्वा भ्रातरौ राम लक्ष्मणौ।
बहून्मेध्यान्मृगान् हत्वाचेरतुर्यमुना वने। ३२।

वा० रामा० अयो० कां० सर्ग ५५

अर्थ—अब आगे कोश भर जाकर दोनों भाई राम लक्ष्मण यमुना वन में बहुत मेध्य मृगों को मार कर विचरते भये।

५ ❀ भीलों के अधिपति गूह की भरत को मांस की भेंट ❀

इत्युक्त्वो पायनं गृह्यमत्स्यमांस मधूनि च।
अभिचक्राम भरतं निषादाधिपतिर्गुहः॥ १२

वा० रामा० अयो० का० सर्ग ८४

अर्थ—यह कह कर वह भीलों का अधिपति गुहमत्स्य,

मांस और शहद की भेंट लेकर भरत की ओर सत्कारार्थ गया।

❀श्रीरामचन्द्र का मारीच का शिकार खेलना❀

स भृशं मृगरूपस्य विनिर्भिद्यशरोत्तमः।
मारीचस्यैव हृदयं बिभेदाशनि संनिभः। २७।

वा० रामा० अरण्य काण्ड सर्ग ४४

अर्थ—वह बिजली के सदृश उत्तम बाण मृग के बनावटी रूप को फोड़कर मारीच के हृदय को बींध गया॥

७❀सीता का रावण को सत्कारार्थ मांस का संकेत❀

समाश्वस मुहूर्त्तं तु शक्यं वस्तुमिहत्वया।
आगमिष्यति मे भर्त्ता वन्यमादाय पुष्कलम् ॥२३

वा०रामा० अरण्यकांड सर्ग ४७

अर्थ—थोड़ी सी देर प्रतीक्षा या इन्तजार कीजिये आप यहां ठहरने योग्य हैं। अभी मेरा पति पुष्कल जंगली आहार वा बहुत सा मांस लायेगा।

गुरु विरजानन्द दण्डी
मन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण कमांक 2862
दयानन्द महिला म... पुस्तकालय

१❀राजा विचरव्नुके समय में गोवध ❀

अत्राप्युदाहरन्तीममितिहासं पुरातनम् ।
प्रजाना मनुकम्पार्थं गीतं राज्ञा विचरव्नुना ॥१
छिन्नस्थूणं वृषं दृष्ट्वा विलापं च गवां भृशम् ।
गो ग्रहे यज्ञ वाटस्य प्रेक्षमाणः स पार्थिवः ॥२
स्वस्ति गोभ्योऽस्तु लोकेषु ततो निर्वचनं कृतम् ।
हिंसायां हि प्रवृत्ताया माशीरेषा तु कल्पिता ॥३

महाभारत शान्तिपर्व अध्याय २६५

अर्थ—प्राचीन इतिहास इस प्रकार कहा है—एक समय यज्ञ करने के स्थानमें एक बैल को मारा गया था इस गोमेध यज्ञ में गौओं का वध हो रहा था। तब दूसरी गाय बड़ा विलाप करने लगी। यह देखकर तथा क्रूरकर्मा ब्राह्मणों को यज्ञ में सहायता करते देखकर राजा ने निश्चय पूर्वक यह वचन कहा कि जगत् में गौओं का कल्याण हो अर्थात् यज्ञ में गौओं की हिंसा नहीं करनी चाहिये। जब हिन्सा धर्म चल रहा था तब उस राजा ने इस प्रकार आशीर्वाद वचन कहा था।

धर्मात्मा पुरुषों पर महाभारत में मांस भक्षण का दोष

२ ❀ धर्मराज युधिष्ठिर के यज्ञ का वर्णन ❀

ततो नियुक्ताः पशवोयथा शास्त्रं मनीषिभिः।
तंतं देवं समुद्दिश्य पक्षिणः पशवश्च ये ॥ ३३
रिषभाः शास्त्र पठितास्तथा जलचराश्चये।
सर्वां स्तानभ्य युञ्जस्ते तत्राग्निंचय कर्माणि ॥३४
यूपेषु नियता चासीत्पशूनां त्रिंशति तथा।
अश्व रत्नोत्तरा यज्ञे कौन्तेयस्य महात्मनः ॥३५

महाभारत आश्वमेधिक पर्व अध्याय ॥ ८८ ॥

अर्थ– भिन्न२ देवताओं के लिये जो २ पक्षी नियत किये गये थे उन पशु और पक्षियों को विद्वान ब्राह्मणों ने वहां २ बांधा। ३३।

फिर शास्त्र में कहे हुवे गुणों वाले जो ऋषभ ( ) और जलचर थे उन सब का अग्नि चयन करने के कर्म में उपयोग किया गया । ३४ ।

उस महात्मा युधिष्ठिर के यज्ञ में उस श्रेष्ठ घोड़े के साथ तीन सौ पशु यूपो के साथ बांधे गये थे । ३५ ।

श्रपयित्वा पशूनन्यान् विधिं वद् द्विज सत्तमाः ।
तं तुरंगं यथाशास्त्र मालभन्त द्विजातयः ॥१॥
ततः संज्ञप्य तुरगं विधिवद्यावजकास्तदा ।
उपसंवेश यत्राजस्ततस्तां द्रुपदात्मजाम् ॥२॥
कलाभिस्तिसृभि राजन् यथा विधि मनास्विनीम् ।
उद्धृत्यतु वपान्तस्य यथा शास्त्रं द्विजातयः ॥३
श्रपयामासुरुग्रया विधिवद्भरतर्षभ ।
तं वपांधुम्र गन्धं तु धर्मराजः सहानुजैः ॥ ४ ॥
उपजिघ्रद्यथाशास्त्रं सर्वपापापहन्तदा ।
शिष्टान्यङ्गानि यान्यासंस्तस्याश्वस्यनराधिप ॥५
तान्यग्नौ जुहुवुर्धीराः समस्ताः षोडशार्त्विजः ।

संस्थाप्यैवं तस्य राज्ञस्तं यज्ञं शतेजसःक्र ॥६॥
व्यासः सशिष्यो भगवान् वर्द्धयामास तं नृपम्॥७

महाभारत आश्वमेधिक पर्व अध्याय । ८६ ।

अर्थ– उन उत्तम ब्राह्मणों ने अन्य पशुओं का विधि के अनुसार संश्रपण करने के अनन्तर उस घोड़े का विधी पूर्वक आलभन किया । १ । फिर याजकों ने विधी के अनुसार उस घोड़े का संज्ञपन किया हे राजन् ? फिर द्रोपदी को समीप में बैठाया । २ । हे राजन् विधि पूर्वक तीन कला (मन्त्र, द्रव्य श्रद्धा) वाली विचार शीला द्रौपदी को बैठा कर ब्राह्मणों ने उस घोड़े की वपा (चर्बी) को विधि से निकालना आरम्भ किया । ३ । हे भरत सत्तम ! सावधान मन वाले ब्राह्मणों ने विधि पूर्वक उस वपा का रांधना आरम्भ किया फिर अपने भाईयों सहित धर्मराज ने उस वपा के धूएँ का गन्ध जो सब पापों का हरने वाला था उस को शास्त्र की विधि से सूंघकर हे राजन् ! उस घोड़े के जोर २ से अंग शेष रहे थे उनको धैर्य्यवान् सोलह ऋत्विजों ने होम दिया । इन्द्र के तुल्य तेज वाले उस राजा के यज्ञ को इस प्रकार समाप्त करके शिष्यों सहित भगवान् व्यास जी

ने उस राजा की वृद्धि करना आरम्भ कर दिया ॥ ७ ॥

एवं बभूव यज्ञः स धर्मराजस्य धीमतः।
बहुन्न धन रत्नौघः सुरामैरेय सागरः ॥ ३८ ॥

महाभारत आश्वमेधिकपर्व अध्याय ८६ ॥

अर्थ—इस प्रकार बुद्धिमान धर्मराज का बहुत से धन अन्न और रत्नों के प्रवाह वाला तथा सुरा और मैरेय नामक पीने योग्य पदार्थों के सागर वाला यह यज्ञ पूरा होगया ॥३८

भक्ष्य खाण्ड रागाणां क्रियतां भुज्यतां तथा।
पशूनां बध्यतां चैव नान्तं ददृशिरे जनाः ॥४१
मत्त प्रमत्त मुदितं सुप्रीत युवती जनम्।
मृदंग शंख नादैश्च मनोरममभूत्तदा ॥ ४२ ॥

महाभारत आश्वमेधिक पर्व अ० ८६ ॥

अर्थ—खाने के पदार्थों का और खाण्डव तथा राग बनाने वालों का तथा खाने वालों का और वध होते हुवे पशुओं का मनुष्यों ने अन्त ही नहीं देख पाया ॥ ४१ ॥

उस उत्तम सुरापान से मत्त, प्रमत्त तथा मौज करते हुवे मनुष्य परम प्रसन्न हुई युवतियें और मृदंग तथा शंखों के शब्द

इन सबसे यज्ञ मत को बड़ा ही आनन्द देता था ॥ ४२ ॥

३-❀ धर्म व्याध ने भाण्डा फोड़ा ❀

निमित्त भूताहि वयं कर्मणोस्य द्विजोत्तम।
येषा हतानां मांसानि विक्रीणामहि वै द्विज ॥४
तेषामधि भवेद्धर्म्म उपयोगेन भक्षणे।
देवता तिथि भृत्यानां पितृणां चापि पूजनम् ॥५
ओषध्यो वीरुधश्चैव पशवो मृग पक्षिणः।
अन्नाद्यभूतालोकस्य इत्यपि श्रूयते श्रुतिः ॥६॥
आत्म मांस प्रदानेन शिविरौशीनरो नृपः।
स्वर्गं सुदुर्गगम प्राप्तः क्षमावान् द्विज सत्तम ॥७
राज्ञो महानसे पूर्वं रन्ति देवस्य वै द्विज।
द्वे सहस्रे तु वध्येत पशूनामन्वहं तथा ॥८॥
स मांसं ददतो ह्यत्रं रन्ति देवस्य नित्यशः॥९
अतुला कीर्त्ति रभवन्नृपस्य वै दिज सत्तम।
चातुर्मास्ये च पशवो वध्यन्त इति नित्यशः ॥१०॥

अग्नयो मांस कामाश्च इत्यपि श्रूयेत श्रुतिः।
यज्ञेषु पशवो ब्रह्मन् बध्यन्ते सततं द्विजै॥११
संस्कृताः किल मन्त्रैश्चते ऽपि स्वर्गमवाप्नुवन्।
यदि नैवाग्नयो ब्रह्मन् मांस कामा भवन पुरा॥१२
भक्ष्यं नैवा भवन्मांसं कस्यचिद द्विज सत्तम १३
अत्रापि विधि रुक्तश्चमुनिर्भिमांस भक्षणे।
देवतानां पितृणाञ्च भुंक्ते दत्वापि य सदा॥
यथा विधि यथा श्रद्धं न प्रदुष्यति भक्षणात्॥१४
सौदासेन तदा गङ्गा मानुषा भक्षिता द्विज॥१६

महाभारत शान्ति पर्व अध्याय २६॥

अर्थ—धर्म व्याध ने एक द्विज से कहा हे द्विजोत्तम! हम भी इसी कर्म में निमित्त ही हैं। मैं इन मरे हुवे प्राणियों के मांस को बेचता हूं और उन मरे हुवे प्राणियों को खाने के काम मे लाने मे पुण्य होता है। क्योंकि उनका मांस देवता अतिथी पितर और सेवकों के पूजन आदि में उपयोगी होता है। ४-५। श्रुति में भी सुनते हैं

औषधियें लताएं पशु मृग तथा पक्षी जगत के भोज्य तथा भक्ष्य पदार्थ हैं। ६। हे द्विज सतम क्षमावान् उशीनर का पुत्र राजा शिवि अपना मांस देकर ही तो अगम्य स्वर्ग में गया था ॥ ७ ॥

४-❀ राजा रन्ति देव की रसोई में २ हजार पशु और २ हजार बैलों का नित्य प्रति रांधा जाना ❀

और हे ब्राह्मण ! पहिले राजा रन्ति देव को रसोई में प्रति दिन दो सहस्र पशु और दो सहस्र बैल मार कर रांधे जाते थे। और राजा रन्ति देव सदा वह मांस अतिथियों को देता था जिस से उसको बड़ी कीर्ति होगई थी। तैसे ही चातुर्मास्य यज्ञों में भी सदा पशुओं का वध किया जाता है ॥ ८—१० ॥ और यह भी सुना जाता है कि अग्नियों को मांस अति प्रिय है, यज्ञ में ब्राह्मण सदा पशुओं का वध करते हैं ॥ ११ ॥ और मन्त्रों से संस्कार किया जाता है इस कारण वह पशु स्वर्ग में जाते हैं। हे द्विजोत्तम ! यदि पहिले अग्नियों को मांस प्रिय नहीं होता तो कोइ भी मांस नहीं

खाता ॥ १२—१३ ॥ मुनियों ने मांस भक्षण की विधि कही है । कहा है कि जो मनुष्य यज्ञ में श्राद्ध में देवताओं को तथा पितरों को विधि के अनुसार उनका भाग अर्पण करने के पीछे उसे भक्षण करता है तो उसे मांस भक्षण का दोष नहीं लगता है ॥ १४ ॥ सौदास नामक राजा ने मनुष्यों का मांस खाया था ॥ १६ ॥

५—❀ राजा रन्ति देव के पास बलिदान के लिये पशुओं की प्रार्थना ❀

उपतिष्ठंश्च पशवः स्वयं तं संशित व्रतम् ।
ग्राम्यारण्या महात्मानं रन्तिदेवं यशस्विनम् ११२
महानदी चर्मराशे रुत्क्लेदात् समृजे यतः ।
ततश्चर्मण्वतीत्येवं विख्याता सा महानदी ॥१२३

महाभारत शान्ति पर्व अध्याय २६ ।

अर्थ— उस महात्मा के पास ग्रामों के तथा वन के पशु आकर कहते थे कि-तुम हमें बलिदान में दो, बलिदान में दो । १२२ । राजा रन्तिदेव के यज्ञों में मारे हुवे पशुओं के

चमड़े के ढेरों में से निकले हुवे रक्त प्रवाह से एक नदी उत्पन्न होगई थी। जो चर्मण्वती नाम से प्रसिद्ध हुई थी । १२३

६-❀राजा रन्तिदेव के रसोइयों की पुकार❀

तत्रस्म सूदाः क्रोशन्ति सुमृष्ट मणि कुण्डलाः ।
सूपं भुयिष्ठ मश्नाध्वं नाद्य मांसं यथा पुरा ॥१२८

महाभारत शान्ति पर्व अध्याय । २६ ।

अर्थ- उस राजा के रसोइये कानों में सोने के कुण्डल पहने कर खड़े २ बारम्बार पुकारते थे कि आज इच्छानुसार पकवान खाओ, पहिले के समान आज मांस का भोजन नहीं मिल सकेगा ॥

७-❀ऋषि विश्वामित्र ने कुत्ता और अगस्त्य मुनि ने वातपि राक्षस को खाया ❀

विश्वामित्र चाण्डाल से कहता है:—

अगस्त्येनासुरोजग्धो वातापि: क्षुधितेन ।
व अहमापग्दतः क्षुत्तो भक्षयिष्ये श्वजाघनीम् ।७१

महा भारत शान्ति पर्व अ० । १४१ ।

अर्थ-हे चाण्डाल! अगस्त्य मुनि ने भूख से वातापी नामक असुर को खाया था क्योंकि मैं भूखा हूं अतः निश्चय से मैं इस कुत्ते की जांघ को खाऊंगा॥

८—❀ नक्षत्रों को मांस का दान ❀

रोहिण्यां प्रसृतैर्माषैर्मांसैरन्नेन सर्पिषा।
पयोन्नपानं दातव्यं मनुष्याणां द्विजातये॥ ६॥
पूर्वभाद्रपदा योगे राजमांसान्प्रदायतु।
सर्व भक्ष्य फलोपेतं स वै प्रेत्य सुखी भवेत्। ३२
औरभ्रमुत्तरायोगे यस्तु मांसं प्रयच्छति।
स पितॄन् प्रीणयति वै प्रेत्य चानन्त्यमश्नुते।३३

महा भारत अनुशासन पर्व अध्याय। ६४।

ब्राह्मण ऋण से मुक्त होने के लिये रोहिणी नक्षत्र को दूध अन्न, घृत, वा घृत से बना हुआ अन्न तथा मांस का दान देना चाहिये। और जो पूर्वा भद्रापदा के योग में सब भक्ष्य फलादि सहित पदार्थ और राज मांसों को देता है वह निश्चय से मर कर सुखी होता है।

इसी प्रकार उत्तरा भाद्रपदा के योग में जो मांस का दान करता है वह निश्चय पूर्वक अपने पितरों को प्रसन्न करता है और मर कर अनन्त सुख को प्राप्त होता है॥ अर्थात् जहां सब नक्षत्रों का दान बताये वहां इन पूर्वोक्त नक्षत्रों के दान मांस बताये हैं॥

९- * यज्ञ में पशु वध *

वृथा पशु समालम्भं नैव कुर्यान्न कारयेत।
अनुग्रहः पशूनां हि संस्कारो विधिनोदितः॥२८

महा भारत शान्ति पर्व अध्याय ३४॥

अर्थ-निरर्थक पशु हिंसा न करे तथा किसी को पशु हिंसा की उत्तेजना भी न देवे। यदि यज्ञ में पशु की हिंसा की जाती है तो उस पशु पर अनुग्रह करने के समान है। क्योंकि यज्ञ में वध होने से पशु, पशु योनी से छूट जाता है॥ २८॥

१०- * देवताओं का यज्ञ में सूर्य्य के पुत्र यम को प्राणियों के वध के लिये नियत करना *

पुरावै नैमिषारण्ये देवाः सत्रमुपासते।
तत्र वैवस्वतो राजन् शांमित्र मकरोत्तदा ॥१॥

महा० आदि० अ० १६७

अर्थ—पहिले नैमिषारण्य में देवों ने यज्ञ आरम्भ किया था उस समय वहां सूर्य के पुत्र यम को बलिरूप से काम में आने वाले प्राणियों का वध करने के लिये नियत किये गये थे॥ १॥ वहां यज्ञ के उपयोगी पशुओं को वध करने के काम में दीक्षाली थी।

११—❀ राजा पाण्डु का मृग मारना और धर्म बताना और अगस्त्य मुनि का शिकार खेलना ❀

शत्रूणं स्या वधेवृत्तिः सा मृगाणां वधे स्मृता।१२
अगस्त्यः सत्रमासीनश्चकार मृगया ऋषिः ॥१४
अगस्त्याभिचारेण युष्माकं च वपा हुता ॥१५

महा० आदि० अध्याय ११८॥

अर्थ—राजा मृग से कहता है हे मृग! शत्रुओं के मारने का राजाओं का जैसा स्वभाव होता है वैसा ही मृगों के मारने का भी

स्वभाव होता है ॥ अतः तुम मोह के कारण मेरी निन्दा करते थे यह योग्य नहीं ॥ १२ ॥ मृग को छुपकर कपट से अथवा चेतावनी देकर स्पष्ट रीति से मारना यह राजाओं का धर्म है ॥ १३ ॥

नुष्ठान मे बैंठे हुवे अगस्त्य मुनि ने बडेभारी बन में सकल मृगों को प्रोक्षन कर के शिकार खेला था अगस्त्य ने न्त्रों द्वारा केले का गोभ के समान तुम्हारा वपा (चर्बी) ग्नी में होमा था ॥ १४ ॥

(इति मांस प्रकरण समाप्तम्)

❀ ॐ ❀

❀ मांस प्रकरण ❀

समाप्तम् ।

ॐ

मध्य प्रकरण

प्रारम्भः ।

[मद्य प्रकरण]

* बड़े २ महात्माओं और देवियों पर मद्यपान का दोष *

१-❀श्री कृष्ण महाराज का शराब पीना❀

कृष्ण जी की एक स्त्री का नाम जाम्बूती था उसके पेट से एक सामब नाम का पुत्र जो बड़ा ही सुन्दर था। जब कभी नारद जी श्री कृष्ण महाराज के पास द्वारकामें जाते तो सब बालक नारद का सत्कार करते थे परन्तु सामब नारद का सत्कार नहीं करता था अतः नारद बदला लेने की ताड़ में था। एक दिन का समाचार है कि—

तस्मिन्नहनि देवो ऽपि सहान्तः पुरकैः जनैः।
अनुभूय जलक्रीड़ां पानमासवतेरहः॥ १७॥

भवि० ब्रह्मपर्व अ० ७३ से आरम्भ

अर्थ—उस दिन श्री कृष्ण जी भी अपनी सब रानियों के साथ जल क्रीड़ा करने के बाद पृथक् होकर शराब पी रहे थे और उस सुन्दर बागीचे में अपनी स्त्रियों के साथ रमण कर रहे थे। और खेलते हुवे—

२-❀श्री कृष्ण को स्त्रियों का शराब पीना❀

ताभिः संपीयते पानं शुभगन्धन्वितं शुभम् ॥२१
एतस्मिन्नन्तरे बुद्धा मद्यपानात्ततः स्त्रियः ॥२२
भवि० ब्र० प० ७३ ॥

अर्थ—उन स्त्रियों के साथ सुगन्धयुक्त शराब पीरहे थे। इतने में ही शराब पीने के अनन्तर स्त्रियों को होश आई। तब नारद ने जाकर सामब से कहा कि हे कुमार! तुम्हें कृष्ण जी बुला रहे हैं। वह नारद के कपट को न समझ कर नारद के कहे को सत्य मान कर वह श्री कृष्ण महाराज के पास बागीचे में चला गया। उसने वहां जाकर श्रीकृष्ण जी तथा सब माताओं को प्रणाम किया। उस समय सामब को देख कर सब स्त्रियों का मन डावांडोल होगया। क्योंकि वह सामब के सौन्दर्य्य पर आसक्त होगईं। इस अवस्था में—

३-सामब की सुन्दरता पर आसक्त माताओंकी दशा

मद्य दोषात्ततस्तासां स्मृति लोपात्तथा नृप ॥२६
स्वभावतोऽल्प सत्वानां जघनानि विसुस्रुवुः ॥२७

भवि० ब्रह्म० अध्याय ७३ ॥

अर्थ—शराब के पीने से उन स्त्रियों की स्मृति ठीक न रहने के कारण.....शक्ति हीन होने से जांघें टपकने लगीं ॥

४-❀बलदेव और अन्य यादवों ने शराब पी❀

वारुणीं मदिरां पीत्वा मदोन्मथित चेतसः ॥

महा भारत ॥

बलदेव तथा कृष्ण सहित अन्य सभी यादव शराब पी पी कर उन्मत्त चित्त वाले होगये ॥

५-❀ शुक्राचार्य का उपदेश ❀

सीधु प्रयुक्तं शुक्रेणसततं साधु हीच्छता ।
मद्य न पेय मत्यर्थं पुरुषेण विपश्चिता ॥३१॥

भवि० ब्रह्म० अ० ९३

अर्थ—शुक्राचार्य ने शराब पी कर लोगों की भलाई

के लिये उपदेश किया कि बुध्दिमान मनुष्यों को अधिक शराब नहीं पीनी चाहिये ॥

नारद भी सामब के पीछे २ गया, नारद को आते देख कृष्ण जी और उनकी स्त्रियां अचानक एक दम खड़ी होगईं क्यों कि वह शराब के नशे में चूर थीं इसलिये-

६—* शराब से चूर उन स्त्रियों का..... गिरने के कारण कृष्ण का शाप देना *

तासामथो स्थितानां तु वासुदेवस्य पश्यतः।
भित्वा वासांसि शुभ्राणि पत्रेषु पतितानि त ॥३४

भवि० ब्रह्म० अ० ७३ ॥

अर्थ—उन स्त्रियों के उठते हुये कृष्ण के सम्मुख ही कपड़ों में से छन छन कर उन का वीर्य पृथिवी पड़े हुवे घास तथा पत्तों पर गिर पड़ा। यह दशा देखकर कृष्ण को क्रोध आया तो सामब को शाप दिया कि तू कोढ़ी होजा।

७—❀ भारद्वाज ने भरत का अतिथि सत्कार कैसे किया ❀

सुरां सुरापाः पिबत पायसं च बुभुक्षिताः ।
मांसानि च सुमेध्यानि भक्ष्यन्तां यो यदिच्छति।५२

बा० रामा० अयो० सर्ग ६१ ॥

अर्थ—शराब पीने वाले शराब पीवें, भूखे लोग खीर खावें और पवित्र मांसों में जिस की जो इच्छा हो खावे ॥

८-❀ सीता माता ने भी शराब तैय्यार करने को कहा ❀

यक्ष्ये त्वांगोसहस्रेण सुराघट शतेन च ।
स्वति प्रत्यागते रामे पुरीमीक्ष्वाकु पालिताम् ।२०

बा० रामा० अयो० सर्ग ५५ ॥

अर्थ—राम के अयोध्या नगरी को सुख पूर्वक लौट आने पर मैं सौ घड़े शराब और एक हजार गौओं से तेरा यज्ञ करूंगी ॥

८—❀ बली की मद्य मांस से पूजा ❀

मद्य मांस सुरा लेह्य चोष्य भक्ष्योपहारकैः ॥५१

प० उत्तर काण्ड अ० १२४ में

अर्थात् बली को मद्य, मांस, शराब, चाटने, चूसने और भिन्न २ भक्ष्य पदार्थों द्वारा पूजा करनी चाहिये ॥

१०—❀शराब पीने वाले देवता, न पीने वाले राक्षस

वरुणस्य ततः कन्या वारुणी रघुनन्दन।
उत्पपात महाभाग मार्गमाणा परिग्रहम् ॥३६॥
दितेः पुत्रा न तां राम! जगृहुर्वरुणात्मजाम्।
अदितेस्तु सुता वीर! जगृहुस्ता मनिन्दिताम् ।३७
असुरास्तेन दैतेयाः सुरास्तेना ऽदितेस्सुताः।
हृष्टाः प्रमुदिताश्चासन् वारुणी ग्रहणात्सुराः ॥३८

वा० रामा० बाल० सर्ग ४५ ॥

अर्थ—हे रामचन्द्र! जब वरुण की कन्या वारुणी महा प्रताप अपने ग्राहक को ढूंढती हुई थक कर आई तो हे राम! उस वारुण की पुत्री को दिति पुत्रों ने ग्रहण नहीं किया। वे वीर! उस अनिन्दिता पवित्र (मदिरा शराब) को अदिति पुत्रों अर्थात् देवताओं ने ग्रहण कर ली। इसी लिये अर्थात्

मद्य (शराब) को छोड़ने से ही दिति पुत्र (दैत्य) असुर कहाये और अदिति पुत्र (देवता) सुर कहाये।

११—❀ कुलार्णवतन्त्र में शराब मुक्ति का साधन ❀

पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत्पतति भूतले।
पुनरुत्थाय वै पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥

शराब को पीवे खूब पीवे जब तक पीने वाला भूमि पर न गिरे पीता रहे। होश आनेपर उठकर फिर पीवे जो इस प्रकार शराब को पीता रहता है वह आवागमन के बन्धन से छूट जाता है॥

(इति मद्य प्रकरण समाप्तम्)

❀ ॐ ❀

व्यभिचार प्रकरण

आरम्भः ।

[व्यभिचार प्रकरण]

* ऋषि मुनि महात्मा राजा महाराजा और योगिराजोंपर व्यभिचार का दोष *

१-❀पुत्री माता बहिन भतीजी से विवाह❀

यातु ज्ञानमयी नारी वृणेद्य पुरुषं शुभम् ।
कोऽपि युत्र पिता भ्राता स च तस्याः पतिर्भवेत् ॥२६
स्वकोयां च सुतां ब्रह्माविष्णुदेवः स्वमातरम् ।
भगिनीं भगवाञ्छवुर्हीत्वा श्रेष्ठतामगात् ॥२७
इति श्रुत्वा वेद मर्यं वाक्यं चादिति संभवः ।
विवस्वान् भातृजां संज्ञां गृहीत्वा क्षेष्टवानभृत २८

भविष्य पुराण प्रति सर्ग पर्व ३ खण्ड ४ अध्याय १८

अर्थ—जो भी ज्ञान वाली स्त्री है वह किसी भी शुभ पुरुष

वर ले। वह चाहे उसका पिता, पुत्र, भाई कोई भी क्यों न हो वह उसका पति हो जाता है ॥ २६ ॥

ब्रह्मा अपनी पुत्री को तथा विष्णु अपनी माता को और महादेव अपनी बहिन को ग्रहण कर के श्रेष्ठता को प्राप्त हो गये ॥ २७ ॥

इस वेदानुकूल वाक्य को सुन कर अदिति का पुत्र सूर्य भी अपनी भतीजी संज्ञाको ग्रहण करके श्रेष्ठताको प्राप्त होगये॥२८

२–* ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों अनुसूया को.....दिखाते हैं *

किसी समय अत्रि मुनि अपनी स्त्री अनुसूया के साथ गंगा के तट पर बड़ा भारी तप कर रहे थे। ब्रह्मा विष्णु और महादेव जो अपने २ वाहन पर सवार हो कर अत्रि मुनि के पास आये और बोले कि वर मांगो। लेकिन ब्रह्मा की भक्ति में अत्रि इतना मस्त था कि उन की बात सुन कर कुछ भी नहीं बोले तब—

तस्य भावं समालोक्य त्रयो देवा सनातनाः।
अनुसूयां तस्य पत्नीं समागम्य वचो ब्रवीत्॥७०

लिंग हस्तः स्वयं रुद्रो विष्णुस्तद्वस वर्द्धनः।
ब्रह्मा काम ब्रह्म लोपः स्थितस्तस्यावशंगतः ॥७१
रतिं देहि मदाघूर्णे नो चेत प्राणांस्त्यजाम्यहम् ॥७२
नैव किञ्चिदूचः प्राह कोपभीता सुरान् प्रति।
मोहितास्तत्र ते देवाः गृहीत्वा तां बलात्तदा ॥
मैथुनाय समुद्योगं चक्रुः माया विमोहिता ॥७३

भवि० पुराण प्रतिसर्ग पर्व ३ खण्ड ४ अ० १७ ॥

अर्थ—उस अत्रि मुनि के भाव को देख कर तीनों सनातन धर्म के देवता उस की स्त्री अनुसूया के पास आकर बोले लिङ्ग को हाथ मे पकड़ कर महादेव जी और उस के रस को बढ़ाते हुवे विष्णु और काम वश हो कर वेद का लोप किये हुवे ब्रह्मा जी, तीनों इस के वश होकर बैठे और बोले हे कामग्नि से मस्त आंखों वाली अपने यौवन का दान दे, नहीं तो हम तीनों यहीं पर अपने प्राण छोड़ देंगे। पतिव्रता अनुसूया ऐसी बुरी पाप की बात सुनकर देवताओं के क्रोध से डरती हुई कुछ न बोली।

तब वहां वह देवता मोहित होकर उस को जबरदस्ती पकड़

कर व्यभिचार करने की कोशिश करने लगे ॥

तब अनुसूया ने क्रोध में आकर उन तीनों को शाप दिया कि तुम मेरे पुत्र बनोगे। महादेव का लिंग, ब्रह्मा का शिर, और विष्णु के पांव पूजे जायेंगे ॥

३—❀ब्रह्मा का अपनी पुत्री से यौवन दान की याचना।

रतिं देहि मदापूर्णे रक्ष मां काम विह्वलम्।

भवि० प्रतिसर्ग पर्व ३ खण्ड ४ अ० १३ ॥

अर्थ—काम से विह्वल होकर ब्रह्मा अपनी पुत्री से कहता है हे मस्त नयनों वाली! यौवन का दान कर और मुझ कामी के प्राणों की रक्षा कर ॥

४—❀ब्रह्मा का अपनी पुत्री पर मोहित होना❀

नैतत्पूर्वैः कृतं ब्रह्मन् करिष्यन्ति चापरे।
यत्त्वं दुहितरं गच्छेर निगृह्याङ्गजं प्रभो ॥

श्री भागवत्—

अर्थ—हे ब्रह्मन्! जो कुछ तुमने अपनी पुत्री पर मोहित होने का कर्म किया है ऐसा कर्म अब तक न तो किसी ने

किया और न कोई आगे को करे ही मा ॥

५-* ब्रह्मा से भयभीत सन्ध्या हरिणि बनी, तो ब्रह्मा हरिण *

देखिये-प्रजानाथं नाथ प्रसभमभि कंस्वां दुहितरं,
गतं रोहितभूतां रिरमयिषुमृक्षस्य वपुषा ॥
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्रा कृतममुम् ।
त्रसन्ते तेऽद्यापि त्यजति न मृग व्याध रभसः ॥

महिम्नस्तोत्र श्लो० २२ ॥

अर्थ—हे नाथ ! तुम्हारा बान ब्रह्मा को आज तक नहीं छोड़ता ब्रह्मा अपने शरीर को त्याग कर हरिण का रूप धारण कर लिया और आकाश में जा बैठा। कामदेव जिस को पीड़ित कर रहा है और अपनी पुत्री के साथ जिस की रमण करने की इच्छा है। बेटी ने बचने के लिये हरिणी का रूप धारण किया तो ब्रह्मा जी भी हरिण का रूप धारण कर पीछे २ दृश्य पहुंचे और कहने लगे—तू हिरणी होगई है तो मैं भी हरिण होकर तुम्हारे पास आ पहुंचा। तब पुत्री कहने

लगी कोई ऊपर है वा नहीं ? हे नाथ ! हे शिव ! धनुष बाण हाथ में ले चाप का तीर खोटे कर्म करने की इच्छा वाले ब्रह्मा जी के बदन को फाड़ कर साफ निकल गया सो आज तक ब्रह्मा जी उस बाण से त्रास हो रहा है। हे शिवजी ! संध्या नाम वाली ब्रह्मा जी की पुत्री की फर्याद तुमने ही सुनकर यह सजा ब्रह्मा जी को दी ॥ २२ ॥

६—❀ महादेव और पार्वती के विवाह करवाते ब्रह्मा का वीर्य्यस्खलि होना ❀

ततस्तद्दर्शनात्सद्यो वीर्यं मे प्रच्युतद्भुवं ॥७
रेत राक्षरता तेन लज्जितो ऽहं पिता महः ।
मुने-ऽयमर्दं ताच्छिश्नं चरणाभ्यां हि गोपयन् ॥१८

शिव रुद्र संहिता पार्वती खण्ड अध्याय ४६ में

अर्थ—यह बात ब्रह्मा स्वयं नारद को कहता है कि—तब इस पार्वती को देख कर बहुत शीघ्र मेरा वीर्य पृथिवी पर गिर पड़ा। हे मुनि मैं ब्रह्मा वीर्य के इस प्रकार झरने से होगया तब मैंने अपने लिंग को छिपा कर वीर्य को वहीं पैरों से मसल दिया ॥

७-❀ ब्रह्मा स्वयं अपने आप को अनाचारी मानता है ❀

पाहि मां परमात्मंस्ते प्रेषणेनासृजं प्रजाः।
ता इमा यभितुं पापा उपक्रामन्ति मां प्रभो॥

श्रीमद् भागवत स्कन्द ३ अ० २० श्लोक २६ में ब्रह्मा जी ने विष्णु के पास जाकर कहा कि—

हे प्रभो! परमात्मन्! तुम मेरी रक्षा करो आप की आज्ञा से जो मैंने प्रजा उत्पन्न की है। यह पापी हो कर मैथुन करने के निमित्त मेरे पीछे २ लग रही है। अर्थात् मेरा अनुकरण कर रही है।

८—❀ ब्रह्मा का अपनी पुत्री पर और ब्रह्मा के पुत्रों का भगिनी सन्ध्या पर आसक्त होना तथा सन्ध्या का रक्षार्थ महादेव से प्रार्थना करना ❀

शिव पुराण रुद्र संहिता सती खण्ड ३ अ० में लिखा है कि—ब्रह्मा के मन से एक सुन्दर स्त्री पैदा हुई जिस का नाम

सन्ध्या था उस की सुन्दरता को देख कर ब्रह्मा और उसके पुत्र– मेरीची, उत्तरो, पुलहा, वषिष्ट, नारद, भृगु आदि सब उस स्त्री पर होहित होगये। और उस के साथ बुरा काम करने को तैयार हुवे तो सन्ध्या ने महादेव जी से संरक्षार्थ प्रार्थना की—

रक्ष रक्ष महादेव पापान्मां दुस्तरादितः।
मत्पिता ऽयं तथा क्षेमे भ्रातरः पाप बुद्धयः॥

अर्थ—हे महादेव! मेरी रक्षा करो, रक्षा करो, क्यों कि मेरे पिता और भाई पाप बुद्धि वाले होगये हैं। इस प्रार्थना सुनकर महादेव जी प्रगट हुवे और ब्रह्मा को इस तरह डांटा–

६–❀ महादेव की ब्रह्मा को डांट ❀

अहो ब्रह्म स्तव कथं काम भावस्समुद्धतः।
दृष्टवा च तनयां नैव योग्यं वेदानुसारिष्भम्॥
यथा माता च भगिनी भ्रातृपत्नी तथा सुता।
एताः कुदृष्टया द्रष्टव्या न कदापि विपश्चिता॥

अर्थ—हे ब्रह्मा! तुम्हारे अन्दर यह कैसे काम भाव

पैदा होगये ? वेदों के अनुसार चलने वालों के लिये यह योग्य नहीं कि पुत्री को देख कर मोहित हो जावें। हे ब्रह्मा? जैसे माता, बहिन और भाई की स्त्री वैसे ही पुत्री को समझना चाहिये बुध्दिमान को चाहिये कि इन सब को कभी भी दुरी दृष्टि न देखे।

विष्णु भगवान की लीला *

१०—❀ विष्णु ने वृन्दा के पतिव्रत धर्म को बिगाड़ा ❀

वृन्दामालिङ्ग्य तद्वक्त्रं चुचुम्बे प्रीतिमानसः।
अथ वृन्दापि भर्त्तारं दृष्टवा हर्षितमानसा ॥२४
रेमे तद्वनमध्यस्था तद्युक्ता बहुवासरम्।
कदाचित्सुरतस्यान्ते दृष्टवा विष्णुं तमेव हि ॥२५
निर्भर्त्स्य कोधसंयुक्ता बृन्दावचन मब्रवीत् ॥२६

वृन्दोवाच—

धिक् त्वदीय हरे! शीलं परदाराभि गामिनः।

ज्ञातोऽसि त्वं मया सम्यक् मायी प्रत्यक्षतापसः।२६।२७

पद्म पुराणान्तर्गत कार्तिक महात्म्य अ० १६ ॥

अर्थात् यहां विष्णु भगवान् ने जलन्धर के रूप में! वृन्दा के पतिव्रत धर्म को बिगाड़ा। और पर स्त्री गमन किया। वृन्दा को आलिंगन करके प्रसन्न मन हो चुम्बन करते भये। अनन्तर वृन्दा पति को देख मनमें हर्षित होती भई। उसबागमें रह कर पति समेत बहुत दिनों तक विहार करती भई।

नारद बोले—कभी भोग के अन्त में उसी पति को विष्णु के रूप में देखती भई। वृन्दा बोली हे हरे! पराई स्त्री के साथ भोग करने हारे जो तुम हो तिनकी आदत को धिक्कार है। प्रत्यक्ष रूप में तपस्वी रूप के धारण करने हारे० तुम भली भांति मायावी जाने गये। २६—२७॥ इसके अनन्तर वृन्दा शाप देकर मर गई और उसकी भस्म मे विष्णु लोटने लगे—यथा—

ततो हरिस्तामनु संस्मरन् मुहुर्बृन्दाचिता-
यस्मरजोऽवगुण्ठितः। तत्रैव तस्थौमुनिसिद्धसंधै
प्रबोध्यमानोपि ययौ न शांतिम् ॥ ३१ ॥

अर्थ—तो पीछे हरि वृन्दा को बार २ स्मरण करते हुवे उसकी चिता की भस्म में लोटने लगे और वहीं स्थित रहे। मुनियों तथा सिद्धों के समूह द्वारा समझाने पर भी शान्ति को प्राप्त न हुवे ॥ ३१ ॥

शिवजी की लीला

११-❀ शिवजी का लिंग को हाथ मे पकड़ ऋषि स्त्रियों को मोहित करना ❀

एवं सेवां प्रकुर्वन्तो ध्याग्न मार्ग परायणाः।
ते कदाचिद्वने याताः समिदाहरणाय च ॥८॥
एतस्मिन्नन्तरे साक्षाच्छंकरो नील लोहितः।
विरूपं चसमास्थाय परिक्षार्थं समागतः ॥ ९ ॥
दिगम्बरोऽति तेजस्वी भूति भूषण भूषितः।
चेष्टां चैव कटाक्षञ्च हस्ते लिङ्ग च धारयन् ॥१०
मनांसि मोहयन् स्त्राणामाजगामहरः स्वयम्।
तं दृष्टवा ऋषि पत्न्यस्ता परं त्रासमुपागताः॥११

विह्वलाविस्मिताश्चैव समाजग्मुस्तथा पुनः ।
आलि लिगुस्तदा चान्याः करं धृत्वा तथा पराः।१२
एतास्मिन्नेव समये ऋषि वर्य्यः समागतमन् ।
विरूद्ध वृत्तकं दृष्ट्वा दुःखिता क्रोध मूच्छिता १३
तदा दुःख मनु प्राप्ताः कोऽयं कोऽयं तथाब्रुवन् ।
यदा चनोक्तवान् किञ्चित्तदा ते परमर्षयः ॥१४
ऊचुस्तं पुरुषं तेवै विरुद्ध क्रियते त्वया ।
त्वदीय चैव लिङ्गञ्च पततां पृथिवि तले ॥१५॥
इत्यक्ते तु तदा तैस्तु लिंगं च पतितं क्षणात ॥१६
अवधूतस्यतस्याशुः शिवस्या द्भुत रूपिणः ॥१८
तल्लिगं चाग्नि वत्सर्वं यद् दाह पुरः स्थितम् ।
यत्र यत्र चतत्याति तत्र तत्र दहेत्पुनः॥ १९ ॥
आराध्य गिरिजां देवी प्रार्थयन्तु सुराः शिवम्
योनिरूपा भवेच्चेद्वै तदा तत्स्थिरतां व्रजेत् ॥३२
इत्युक्तास्ते द्विजा देवाः प्रणिपत्य पितामहम् ।

शिवं तं शरणं प्राप्ताः सर्व लोक सुखे प्सया ॥४३
पूजितः परयाभक्त्या प्रार्थितः शकरस्तदा ।
सुप्रसन्नस्ततो भूत्वा तानु वाच महेश्वरः ॥४४॥
हे देवाः ऋषयः सर्वे मद्वचः शृणुता दरात ।
योनि रूपेण मल्लिगं धृत चेत्स्या त्तदा सुखम् ॥४५
पार्वतीं च बिना नान्या लिंगं धारापितु क्षमा।
तया धृतं च मल्लिगं द्रुतं शान्तिम् गमिष्यति ४६
तच्छ्रुत्वा ऋषिभिर्देवैः सुप्रसन्नै र्मुनिश्वराः ।
गृहीत्वा चैव ब्राह्मणं गिरिजा प्राथिता तदा ॥४७
प्रसन्नां गिरिजां कृत्वा वृषभध्वजमेव च ।
पूर्वोक्तं च विधि कृत्वा स्थापितंलिंगमुत्तमम् ॥४८

शिव पुराण अध्याय ४१ में ॥

अर्थ—एक दारू नामक वन था। जिसमें शिव भक्त परायण ऋषि लोग शिवजी की पूजा किया करते थे। एक दिन वे ऋषि लोग समिधा लेने जगल को गये। इसी समय

परीक्षा करने के लिये नील लोहित साक्षात् शंकर भयानक रूप धारण किये हुवे नङ्गे बदन तेजस्वी भस्म रमाये हुवे, हंसते हुवे, नेत्रों से कटाक्ष करते हुवे, लिंग को हाथमें पकड़े हुवे, ऋषि स्त्रियों के मनों को मोहित करते हुवे उस वन में आये। जहां वह ऋषि रहते थे। उसको देख ऋषियों की स्त्रियां हाथ से हाथ मिलाकर सब आलिङ्गन करने लगीं। इतने में ऋषि लोग आ गये और शिवजी के विरुद्ध वृत्त को देख दुःखित हुवे। क्रोध से विह्वल हो कहने लगे कि यह कौन है। जब शिवजी कुछ न बोले तब ऋषियों ने शाप दे दिया कि तुमने बहुत बुरा किया तुम्हारा लिंग कट कर गिर पड़े। इतना कहते ही क्षणमात्र में लिंग कट कर पृथिवी पर गिर पड़ा। अद्भुत रूप धारी उस अवधूत शिव का लिंग शीघ्र ही अग्नि के समान जो कुछ सामने आया उसको जलाने लगा जहां २ वह जाता था उसको ही वह जला देता था ॥ १६ ॥ सब दुःखी हुवे ऋषि ब्रह्माजी के पास गये। ब्रह्मा जी को प्रणाम करके सारा वर्णन कह सुनाया। ब्रह्मा ने कहा कि जब तक यह लिंग कायम न होगा तब तक तीनों लोकों में शान्ति नहीं होगी। तो तुम्हें इसको शान्त करने की विधी

बतलाता हूं। हे देवताओ पार्वती को प्रसन्न करके शिव की प्रार्थना करो यदि पार्वती योनि रूप से तैय्यार हो जावे तो तब यह लिंग स्थापित हो जावे ॥ ३२ ॥ यह सुन सब देवता और ऋषि ब्रह्मा को प्रणाम करके संसार के सुख के लिये शिवजी की शरण में आये। तब महादेव जी पूजे हुवे प्रसन्न होकर बोले ॥ ४४ ॥ हे देवताओं! हे ऋषियों! मेरी बात को आदर से सुनो यदि लिंग योनि में स्थापित हो जावे तब तब सुख हो सकता है ॥ ४५ ॥ पार्वती के बिना कोई स्त्री मेरे लिंग को धारण नहीं कर सकती। उससे धारण किया हुवा मेरा लिंग तत्काल शान्त हो सकता है ॥ ४६ ॥ यह सुन कर ऋषि और देवताओं ने प्रसन्न होकर ब्रह्मा को साथ में लेकर तब पार्वती की प्रार्थना की ॥ ४७ ॥ पार्वती को प्रसन्न करके और महादेव को भी खुश करके पूर्वोक्त विधि के अनुसार उस उत्तम लिंग को स्थापित कर दिया गया ॥ ४८ ॥

२१—❀ महादेव का ऋषियों और देवताओं से क्रीड़ा करना, कामातुर होने पर रह न सकना

सकना ❀

एक बार महादेव जी देवताओं और ऋषियों से क्रीड़ा कर रहे थे कि कामातुर होगये उसी समय नन्दी को बुलाकर कहा कि पार्वती को सजा कर लाओ। नन्दी गया और पार्वती को सन्देश दिया कि आपको सभा में शीघ्र बुलाया है। पार्वती ने कहा मैं आती हूं आप चलें। नन्दी चला गया परन्तु महादेव को चैन कहां वह तो आपे से बाहिर हो रहे थे। उन्हों ने नन्दी को फिर भेजा।

बाढ़मित्युक्त्वासतां गत्वा गौरीमाहसुलोचनाम्।
द्रष्टुमिच्छति ते भर्त्ता कृत वेषां मनोरमम् ॥४२
शंकरो बहुधा देवि विहर्त्तुं प्रतीक्षते।
एवं यतौ सुकामर्त्ति गम्यतां गिरि नन्दिनी॥४३
अथ सा पार्वती देवी कृत कौतुक मण्डना।
सदन संनिधि मागत्यचिक्रीडतेन शम्भुना ॥६१

शिव रुद्र संहिता २ युद्ध काण्ड ४ अध्याय ५१

अर्थ—बहुत अच्छा यह कह कर सुन्दर नेत्रों वाली

पार्वती के पास जाकर बोला तुमको तुम्हारा पति सजी हुई देखना चाहता है। महादेव जी बहुत बेकरारी के साथ क्रीड़ा करने को आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं तुझे जरूर चलना चाहिये। पुनः पार्वती ने सज धज कर और महादेव के पास खूब काम क्रीड़ा की॥

१३—❀ विष्णु का मोहनी रूप धारना और महादेव का मैथुन के लिये उस के पीछे भागना ❀

तस्यानुधावतो रेत श्चस्कन्दामोघ रेत सः।
शुष्मिणो युथपस्येव वामिता मनुधावतः॥३०
यत्र २ अपतन् मह्यां रेतस्तस्य महात्मनः।
तानि रूप्यस्य हेम्नश्च क्षेत्राण्यासन् महीपेत॥ ३३

श्री मद्भागवत स्कन्द ८ अ० १२।

(यह सब कथा श्लोक १७ से ४७ तक है)

अर्थ—विष्णु के मोहनी रूप को धारण करते ही महादेव उस के साथ मैथुन करने को दौड़े। और जब वह

वह विष्णु के पीछे २ भागने लगा तब भागते २ वहां पृथिवी पर उस महादेव का वीर्य्य गिर पड़ा तब जहां २ पर पृथिवी पर वीर्य्य पात हुआ था वहीं २ उस वीर्य से सोने और चांदी के क्षेत्र पैदा होगये ॥

१४–❀ शिवजी का कञ्जरी से समागम ❀

शिव पुराण शत रुद्र संहिता अ० २६ से आगम–

"नन्दी ग्राम में कोई महानन्द नाम की वेश्या रहती थी वह शिव की बड़ी भक्त थी और साथ ही बड़ी सुन्दर भी थी उस ने बड़े सुन्दर आभूषण धारण किये हुवे थे वह गान विद्या में बड़ी चतुर थी उस के गाने से राजा लोग बड़े प्रसन्न होते थे। एक दिन शिव जी महाराज भी वैश्य का रूप धारण कर के उसकी परीक्षा लेने के लिये उसके मकान पर गये। उस वैश्य को आते देख कर कन्जरी बड़ी प्रसन्न हुई। उसको अच्छे स्थान पर बैठाया इस वैश्य के हाथ में में एक सुन्दर कंगन देख कर कंजरी ने कहा यह कंगन मेरे मन को हरता है वैश्य ने कहा यदि यह कंगन तुम्हें भाता है तो तुम पहिन लो परन्तु तुम इस की कीमत में मुझे क्या दोगी। पुनः कंजरी ने उत्तर दिया—

वयं हि स्वैर चारिण्यो वेश्यास्तु न पति व्रताः।
अस्मत्कुलोचितो धर्मो व्यभिचारो न संशयः ॥२९

अर्थ—हम व्यभिचार करने वाली स्त्रियां वेश्यां हैं पतिव्रता नहीं हैं हमारे कुल में उचित धर्म व्यभिचार ही है इस में संशय नहीं ॥ यदि आप का मन चाहे तो मैं तीन दिन तक आपकी धर्मपत्नी बन सकती हूं। वैश्य ने स्वीकार कर लिया। और कंगन देदिया। और साथ ही एक रत्नों से बना हुवा शिव लिंग भी कंजरी को सम्भाल कर रखने के लिये दिया सो उस ने सम्भाल कर रख दिया और दोनों समागम पर लग पड़े।

सा तेन संगता रात्रौ वैश्येन विट धर्मिणा।
सुखं सुष्वाय पर्य्यंके मृदु तल्पोप शोभते ॥३०॥

अर्थ—वह कंजरी इस वैश्य के साथ रात्रि को एक ही पलंग पर इकट्ठी सुख से नरम बिछोने पर सोई ॥

१५-* श्री कृष्ण महाराज की लीला *

❀ युधिष्ठिर का श्री कृष्ण से वेश्याओं का धर्म तथा स्वर्ग का साधन पूछना ❀

युधिष्ठिर ने श्री कृष्ण महाराज से इस प्रकार प्रश्न किया—कि—

वर्णाश्रमाणां प्रभवः पुराणेषु मया श्रुतः।
पण्य स्त्रीणां समाचारं श्रोतुमिच्छामि तत्वतः॥१

भविष्य पुराण की कथा—

हे महाराज! मैं ने वर्णाश्रमों के धर्मों को पुराणों में सुन लिया है अब मैं ठीक २ वेश्याओं के धर्मों को सुनना चाहता हूं। उन का देवता कौन? उन का व्रत क्या है? और किस धर्म पालन करने से वह स्वर्ग को जाती हैं?

श्री कृष्ण जी ने उत्तर दिया कि हे युधिष्ठिर! मेरी सोलह हजार रानियां इतनी सुन्दर हैं कि मानों कामदेवता

का घर हैं। उन के साथ एक बार बगीचे में मैं तालाब के किनारे पर शराब पीने में मस्त था। उन समय इन मेरी स्त्रियों ने समीप ही जाते हुये कामदेव के समान साम्ब को देखा उस मेरे पुत्र को देखने से इन स्त्रियों में काम देव की अधिकता हो गई और सब अंगों में विकार पैदा हो गया। इस सारी बात को ज्ञान की आंख से देख कर मैं ने शाप दे दिया कि तुम डाकुओं के हाथों में चली जावोगी। यह सब मेरी मृत्यु के उपरान्त होगा यह बचन सुन कर श्री कृष्णजी के सम्मुख हो सब स्त्रियां पूछने लगीं। हे गोविन्द! यह कैसे होगा। आप जैसे पति और द्वारका जैसी पुरी, रत्नों से भरे हुये घरों, द्वारका के रहने वालों और सब कुमारों को छोड़ कर हम सब दुनियां से भोग करने वाली कैसे बनेंगी। और उस समय क्या हालत और क्या धर्म होगा! हमारी आजीविका क्या होगी रोती हुई अपनी युवा स्त्रियों को मैं ने कहा—आप सन्ताप न करें। एक बार नारद को भी तुमने प्रणाम नहीं किया था अतः नारद के और मेरे शाप से—

चौरं रएहृता: सर्वा वेश्या त्वं ममत्राप्स्यथ ॥१८

तुम सब चारों ओर से हरी जाकर वेश्या बनोगी। उस समय तुम्हारा धर्म होगा कि तुम को एक के साथ भोग न करना होगा। जो तुम को पैसे देवे उस की देवता के समान पूजा किया करो। जो कोई तुम्हें फाँस दे वह सुन्दर हो या न हो तुम को उस से भोग करना होगा। यदि इससे छल करोगी तो तुम को ब्रह्म हत्या का पाप लगेगा। तुम सब देवताओं के मन्दिरों में और ब्राह्मणों के घरों में निवास करोगी। उनकी दास बन कर रहोगी। परन्तु कभी अपने स्वामी ब्राह्मणों से व्यभिचार न करना। तुम्हारी सन्तान उनकी सन्तान कहावेगी अब तुम्हारी मुक्ति के लिये व्रत बताता हूं। जिस दिन रविवार हो उस दिन अच्छी प्रकार स्नान करके कामदेव की मूर्ति की पूजा करो और कामदेव को इस प्रकार भलीभांति पूजा करके—

अत्राहूय धर्मज्ञं ब्राह्मणं वेद पारगम्।
अव्यं गावयवं पूज्य गन्ध पुष्पादिभिस्तदा ॥४२
यथेष्टाहार भुक्तं च तमेव द्विज सत्तमम्।

रत्यर्थं कामदेवोऽयमिति चित्ते ऽवधार्य च ॥४४
यद्यदिच्छति विप्रेन्द्र स्तत्तत्कुर्या द्विलासिनी।
सर्व भावेन चात्मानं अर्पये त्स्मितभाषिणी ॥४५
एवमादित्य वारेण तदा सद्व्रतमाचरेत।
तण्डुल प्रस्थ दानं च यावन्मासांस्तु द्वादश ॥४६

अर्थ—वहां पर एक धर्मात्मा वेद पाठी जिस के सब अंग ठीक हों ऐसे ब्राह्मण को बुला कर इस को सुगन्धि वाले फूलों से पूजा कर के भोजन करवावे। जब वह भली प्रकार भोजन कर चुके तब इसी ब्राह्मण को भोग करने के लिये यह काम देव ही है ऐसा विचार करके जैसी २ ब्राह्मण की ईच्छा हो उसी प्रकार उस के साथ भोग विलास करे और सम्पूर्ण भक्ति से अपनी देह को उसके अर्पण करदे इस प्रकार प्रति रविवार को यह व्रत करे। और चावलों का एक प्रस्थ दान भी बारह मास तक देती रहे। तेरहवें मास में इस ब्राह्मण को बहुत सा दान देकर और इस ब्राह्मण की—

क इत को ऽदात् इसमन्त्र से पूजा करे। वह सब सामान ब्राह्मणों के घर पहुंचा देवे।

१६—❀ वेश्याओं की मुक्ति ❀

ततः प्रभृतिभ्यो ऽन्यो ऽपि रत्यर्थं गृहमागतः।
स सम्यक् सूर्य्यवारेण समं पूज्यो यथेच्छया ॥५५
एवमेकं द्विजं शान्तं पुराणज्ञं विचक्षणम्।
तमर्चयेत च सदा अपरं वा तदाज्ञया ॥५६॥
करोति या शेष मखण्ड मेतत् कल्याणिनी।
माधव लोक संस्थी सा पूजिता देवगणैः॥
रशेषैरानन्द कृत्स्थान मुपैति विष्णोः ॥६२॥

अर्थ—इस से अन्य जो कोई भी काम भोग की इच्छा से घर पर आजावे उस की भी रविवार की भांति हो इच्छानुसार पूजा करे। इस प्रकार एक शान्त स्वभाव पुराणों के ज्ञाता बुद्धिमान ब्राह्मण की या इस की आज्ञा से दूसरे की नित्य प्रति पूजा करती रहे। जो वेश्या इस प्रकार सम्पूर्णतया इस विधि को करती है वह कृष्ण लोक में सब देवताओं से पूजी जाकर विष्णु के सुख धाम (मुक्ति) को प्राप्त होती है।

१७—❀ श्री कृष्ण का विरजा के गर्भ धारण करना ❀

विरजा सा रजो युक्ता धृत्वा वीर्य्यममोघकम्।
सद्यो बभूव तत्रैव धन्यागर्भवती सती ॥

ब्रह्मवैवर्त्त पुराण खं० ४ अध्याय ३ श्लोक १७

अर्थ—रज से युक्त वह विरजा कृष्ण के निरर्थक न जाने वाले वीर्य्य को धारण कर गर्भवती हो वहीं सौभाग्यवती होगई ॥

१८— * श्रीकृष्ण जी ने गोपियों के वस्त्र चुरा कर कहा कि पानी से बाहर आकर कपड़े लो पुनः— ❀

ततो जलाशया स्सर्वा दारिका शीत वेपिताः।
पाणिभ्यां योनिमाच्छाद्य प्रेतिरः शीतक शिताः ॥

भागवत स्कन्द १० अ० २२ श्लोक १७

अर्थ—सब जाड़े से दुःखी और कांपती हुई वह गोप कन्याऐं सब की सब अपने हाथों से अपनी योनि को ढांक

ब्रह्म वैवर्त्त पुराण जन्म खण्ड अ० १०६ में—

कृष्ण के भोग करने के कारण कुब्जा मरी और वस्त्रों के कारण धोबी मरा। इस से आगे उसी पुराण और उसी ११५ वें अध्याय श्लोक १६२ में—

आगत्य मथुरां कुब्जां जघान मैथुनेन च ॥६२

अर्थात् कृष्ण जी ने मथुरा में आकर अभिचार द्वारा कुब्जा को मार दिया। इसी प्रकार जनमेजय की स्त्री यज्ञ के घोड़े को देखने गई तो इन्द्र ने घोड़े की आड़ में ही उस स्त्री को पकड़ लिया और उस से इतना संभोग किया कि वह मर गई। यह बात (ब्रह्मवैवर्त्त पुराण कृष्ण जन्म खण्ड अध्याय १४ श्लोक ४८ से ५१ तक है) ऐसा क्यों न हो जबकि-ब्रह्म वैवर्त्त कृष्ण जन्मखण्ड अ० ३० श्लोक ८८ में-

२२- * आई हुई स्त्रियों को ग्रहण कर लेना चाहिये *

ग्राह्या चोपस्थितास्त्री च गृहीणा न तपस्विना।
त्यागे दोषः कामनीनां शापभाक् पापभाग् गृही ।८८

अर्थ—आई हुई स्त्री को ग्रहण कर लेना चाहिये यह

नियम गृहस्थियों के लिये है तपस्वियों के लिये नहीं। यदि वह आई हुई स्त्री को ग्रहण न करे तो शाप और पाप का भागी होगा।

२३—❀ राधा की कृष्ण को डांट ❀

हे कृष्ण विरजा कान्त गच्छम त्पुरतो हरे।
कथं दुनोषि मां लोलरहि चौराति लम्पट॥
हे सुशीले शशी कले हे पद्मावती माधवि।
निवार्यतां च धूर्त्तोऽयं किमस्यात्रप्रयोजनम्॥

ब्रह्मवैवर्त्त खण्ड ४ अ० ३ श्लोक ५६–६३

अर्थ—राधा ने कहा—हे कृष्ण! हे प्रजा के प्यारे! मेरे सामने से चला जा। हे कंचल कामी और लम्पट! मुझे क्यों दुःख दे रहा है। हे शशी कला! हे पद्मावती! हे सुशीला! हे माधवी! इस धूर्त्त को बाहर निकालो इस का यहां क्या काम है॥

२४-❀गोपाल सहस्र नाम में कृष्ण महाराज❀

"चौर जार शिखामणि:"

श्री कृष्ण महाराज चौर और जारों के शिरोमणी थे।

ऐसा बताया है ॥

२५- * समर्थ जो चाहे सो करें उन पर कोई दोष नहीं *

संस्थापनाय धर्मस्य प्रशमायेतरस्य च।
अवतीर्णो हि भगवानंशेन जगदीश्वरः ॥१॥
स कथं धर्म सेतूनां वक्ता कर्त्ताभि रक्षिता।
प्रतीप माचरद्ब्रह्मन् परदाराभि मर्शनम् ॥ २ ॥

भागवत स्कन्द १० अ० ३३ में।

परिक्षित ने कहा कि—जिस ने दूसरों की स्त्रियों से व्यभिचार किया, वह ईश्वर कैसे हो सकते हैं। शुक देव ने उत्तर दिया— समर्थ चाहे सो करें उन पर कोई दोष नहीं लगता यथा—

२६- * समर्थ उल्टे ही चला करते हैं *

धर्म व्यतिक्रमो दृष्टः ईश्वराणां च साहसम्।
तेजीयसां न दोषाय वह्नेः सर्व भुजो यथा ॥

भागवत स्कन्द १० अ० ३३ श्लोक ३० ॥

अर्थ—जो समर्थ पुरुष होते हैं वे धर्म से उल्टे चलते हैं इस से उन को कोई दोष नहीं लगता। जैसे अग्नि में डाला हुवा सब कुछ भस्म हो जाता है॥

२७-❀ एकान्त में आई हुई स्त्री को ग्रहण न करने से नरक वास ❀

रहस्युपस्थितां कान्तां न भजेद्यो जितेन्द्रियः।
गात्र लोम प्रमाणाब्दं कुंभी पाके वसेद्ध्रुवम् ॥७७

ब्रह्म वैवर्त्त कृष्ण जन्म खण्ड अ० ३०॥

अर्थ—जो जितेन्द्रिय एकान्त में आई हुई स्त्री को छोड़ देता है वह शरीर पर जितने बाल हैं निश्चय से इतने वर्ष तक कुम्भी नरक में निवास करता है। और देखिये—

२८-❀ काम पीड़िता का काम न करने पर दोनों लोकों में दुःख ❀

यदि तद् भारते दैवात् कामिनी समुपस्थिता॥५२
स्वयं रहसि कामार्त्ता न सा त्याज्या जितेन्द्रियैः।
त्यक्त्वा परत्र नरकं व्रजेदतिविडम्बितः ॥५३॥

ब्रह्म वैवर्त्त कृष्ण जन्म खण्ड ३३ ॥

अर्थ—यदि भारत वर्ष में दैव योग से अचानक कोई स्त्री एकान्त में उपस्थित हो अथवा स्वयं काम से पीड़ित हो कर एकान्त में आजावे तो जितेन्द्रिय लोगों को उसे छोड़ना नहीं चाहिये। यदि छोड़ दे तो निन्दा को प्राप्त हो कर यहां भी और परलोक में भी दुःख पाता है॥

* ययाति की लीला *

२६-❀ स्त्री के याचना करने पर आशा पूरी न करने वाला ब्रह्म हत्यारा होता है ❀

ऋतुं वै याचमानाया नददाति पुमानृतुम्।
भ्रूण हेत्युच्यते ब्रह्मन् स इह ब्रह्मवादिभिः ॥३३
अभिकामां स्त्रियं यश्च गम्यां रहसि याचितः।
नोपैति स च धर्मेषु भ्रूणहेत्युच्यते बुधैः ॥३४॥

महाभारत आदि पर्व अ० ८३ में श्लो० २६ से ३४ तक

अर्थ—हे ब्रह्मन्! वेद पाठियों ने कहा है कि—ऋतु काल आने पर स्त्री याचना करे और पुरुष उसको ऋतुदान

न देवे तो वह पुरुष इस जगत् में ब्रह्म हत्यारा कहाता है॥ ३३ ॥

और कामना वाली ऋतुमती जिस का पति पहिले कोई भी न हो ऐसी गमन करने योग्य स्त्री के याचना करने पर जो पुरुष उस की आशा पूरी नहीं करता उस को धर्म के विषय जानने वाले विद्वान ब्रह्म हत्यारा ही कहते हैं॥ ३४ ॥

३०—❀ इसी बात को धर्म समझ कर ययाति ने शर्मिष्ठा को वीर्य दान दिया ❀

स समागम्य शर्मिष्ठां यथा काम मवाप्य च।
अन्योऽन्यं चाभिसु पूज्य जग्मतु स्तौ यथागतम्।२५

महाभारत आदि पर्व अ० ८२ में सारी कथा देखो।

अर्थ—इस प्रकार राजा ययाति शर्मिष्ठा के साथ समागम कर के अपनी कामना के अनुसार फल पा परस्पर एक दूसरे का यथोचित सन्मान कर जैसे आये थे तैसे चले गये॥ २५ ॥

३१—❀ ययाति जी स्वयं मानते हैं ❀

ययाति उवाच—

ऋतु वै याचमानाया भगवन्नान्य चेतसः।
दुहितुर्दानवेन्द्रस्य धर्म्य मेतत्कृतं मया ॥३२॥

महाभारत आदि पर्व अ० ८३

अर्थ—हे भगवन्! दानवेन्द्र की बेटी शर्म्मिष्ठा ने ऋतु काल प्राप्त होने पर मुझ से वीर्य दान मांगा सो मैंने केवल धर्म समझकर ऐसा कर दिया मेरे चित्त में और कोई बात नहीं थी ॥ ३२ ॥

३०—❀ विषय सुख भोगने के लिये ययाति का अपने पुत्र पुरु से यौवन की याचना करना ❀

न च तृप्तो ऽस्मि यौवने पुरो त्वं प्रतिपद्यस्व पाप्मानं जरया सह। कंचित कालं चेरयं वै विषयान् वमया तव ॥ २८ ॥

महाभारत आदि पर्व अ० ८५ में ॥

अर्थ—मैं अभी तक यौवन के सुख से तृप्त नहीं हुवा हूं अतः हे पुरु! तू मेरे शक्ति हीन बुढ़ापे को लेकर अपनी

जवानी मुझे दे दे । तब मैं यौवन से कुछ समय तक अनेकों प्रकार के विषयों को भोगूं ॥

३३–❀ यौवन ले कर ययाति विषय भोगने लगा ❀

विश्वाच्याः सहितो रेमे व्यभाजन्नन्दने वने ॥८॥

महा भारत आदि पर्व अ० ८५ ॥

अर्थ—राजा ययाति विश्वाची अप्सरा के साथ रमण करने लगा ॥

* देवताओं के गुरु बृहस्पति की लीला *

३४-❀ बृहस्पति का गर्भवती ममता से जबरदस्ती संभोग करना ❀

उतथ्यस्य यवीयांस्तु पुरोधास्त्रिदिवौकसाम् ।
बृहस्पतिर्बृहत्तेजा ममतामन्व पद्यत ॥ १० ॥
उवाच ममता तन्तु देवरं वदतां वरम् ।

अन्तर्वत्नीत्वहं भ्राता ज्येष्ठो नारभ्यतामिति॥११
अयञ्च मे महाभाग कुक्षावेव बृहस्पते।
औतथ्यो वेद मात्रापि षडङ्गमत्यधीयत ॥ १२ ॥
अमोघ रेतास्त्वञ्चापि द्वयो र्नास्त्यत्र संभवः।
तस्मादेवं गते त्वद्य उपारमितु मर्हसि ॥१३॥
एवमुक्तस्तदा सम्यक् बृहस्पति रुदारधिः।
कामात्मानं तदात्मानं न शशाक नियच्छितुम्॥१४
स बभूव ततः कामी तया सार्द्ध मं कामया।
उत्सृजन्तन्तु तं रेतः स गर्भो ऽभ्यभाषत ॥१५
भोस्तात मागमः कामं द्वयो र्नास्तीह सम्भवः।
अल्पावकाशो भगवन् पूर्वं चाहमिहागतः ॥१६
अमोघ रताश्च भवान्न पीड़ां कर्त्तु मर्हसि।
अश्रुत्वैव तु तद्वाक्यं गर्भस्थस्य बृहस्पतिः॥१७
जगाम मैथुनायैव ममतां चारु लोचनाम्।
शुक्रोत्सर्गं ततो बुद्ध्वा तस्या गर्भगतो मुनिः॥१८

पद्भ्या मरोधय न्मार्गं शुक्रस्य च बृहस्पतेः ।
स्थान मप्राप्त मथतच्छुक्रं प्रतिहतं तदा ॥१९॥
पपात सहसा भूमौ ततः क्रुद्धो बृहस्पतिः ।
तं दृष्ट्वा पतितं शुक्रं शशाप स रुषान्वितः ॥२०
उतथ्य पुत्रं गर्भस्थं निर्भत्स्य भगवानृषिः ।
यन्मां त्वमीदृशे काले सर्व भूतेप्सिते सति ॥२१
एवमात्थ व चस्तस्मा त्तमोदीर्घं प्रवेक्ष्यसि ।
स वै दीर्घ तमा न्नाम शापादृषि रजायत ॥२२॥

महाभारत आदि पर्व अ० १०४ ॥

अर्थ—एक दिन उतथा ऋषि का महा तेजस्वी छोटा भाई बृहस्पति जो देवताओं का गुरु कहलाता है। उस को काम की अभिलाषा हुई। इस कारण वह अपनी भाभी ममता के पास गया ॥ १० ॥ तब बोलने वालों में श्रेष्ठ अपने देवर बृहस्पति से ममता कहने लगी कि हे बृहस्पति ! तुम्हारे बड़े भाई से मुझे गर्भ रह गया इस कारण तुम दूर रहो ॥ ११ ॥ और हे महाभाग बृहस्पति ! मेरे गर्भ में औतथ्य नाम का पुत्र है वह गर्भ में ही अंगों सहित पड़ा हुवा है ॥१२

और हे बृहस्पति ! तुम अमोघ वीर्य वाले हो इस कारण यह एक गर्भ तो है ही, और दूसरे तुम्हारे गर्भ धारण न कर सकेंगी ! इस कारण आप को यह काम बन्द रखना चाहिये ॥ १३ ॥ अपनी भाभी के ऐसे उत्तम वचन सुन कर उदार बुद्धि वाले बृहस्पति जी अपने कामातुमार मन को वस में न कर सके ॥ १४ ॥

और उस स्त्री की इच्छा नहीं थी तो भी वह उस के साथ समागम करने में तत्पर हुवे और वीर्य पात करने लगे उस समय गर्भ में का बालक उनसे कहने लगा कि ॥ १५ ॥

हे तात बृहस्पति जी ! तुम काम व्यापार को त्याग दो । हे भगवन् ! इस गर्भ स्थान में मैं पहिले ही आया हुवा हूं । इस कारण अवकाश भी थोड़ा ही है ॥ १६ ॥

और आप का वीर्य अमोघ है । तथा जिस में मुझे पीड़ा हो ऐसा काम आपको करना उचित नहीं है । गर्भ में से बालक की इन बातों को कुछ भी न गिन कर बृहस्पति जी ॥ १७ ॥ अपनी भाभी सुन्दर नेत्रों वाली के साथ गमन करने लगे । और वीर्य पात होना ही चाहता है यह जान कर गर्भ में से मुनि ने अपने दोनों पैरों से बृहस्पति का वीर्य गिरने के मार्ग

को रोक रखा वीर्य के गिरने का मार्ग रुक जाने के कारण बृहस्पति का वीर्य गर्भस्थान में न जाकर भूमि पर गिर पड़ा। बृहस्पति अपने वीर्य को भूमि पर गिरा देख-कर क्रोध में भर गये। और भगवान बृहस्पति गर्भ में स्थित औतथ्य का तिरस्कार कर के उसको शाप देते हुवे कहने लगे कि हे गर्भ! तूने मुझे सब प्राणियों के प्रिय काम व्यापार के विषय में ऐसे वचन कहे हैं और अड़चन डाली है इस कारण तू अन्धा होगा। तिस के पीछे महा कीर्त्ति वाले बृहस्पति के शाप से वह पुत्र अन्धा हुवा और तब-से ही उसका नाम दीर्घ तमा पड़ा। यह दीर्घ तमा जन्म का अन्धा था।

जैसा व्यवहार बृहस्पति जी ने किया उसी प्रकार ही चन्द्रमा ने अपने गुरु बृहस्पति की स्त्री को झपट लिया।

यह कथा देवी भागवत १० वें स्कन्द में है। विस्तार भय से अनेकों इस प्रकार की आचार भ्रष्ट कथाएँ छोड़ दी गई हैं।

* किन्दम की लीला *

३५—❀ किन्दम का हरिणी से संभोग ❀

राजा पाण्डु महारण्ये मृग व्याल निषेविते।
चरन्मैथुन धर्मस्थं ददर्श मृगयूथपम्॥ ५॥
ततस्तां च मगीं तं च रुक्मपुंखैः सुपत्रिभिः।
निर्बिभेद शरैस्तीक्ष्णैःपाण्डुः पञ्चभिराशुगैः॥६
स च राजन्महातेजा ऋषि पुत्रस्तपोधनः।
भार्यया सह तेजस्वी मृगरूप सङ्गतः॥ ७॥
सक्तश्च तथा मृग्या मानुषी मीरयन् गिरम्।
क्षणेन पतितो भूमौ विललापा कुलेन्द्रियः॥८॥
त्वामहं हिंसितो यस्मात्तस्मा त्वामप्यहं शपे॥२६
द्वयो र्नृशंस कर्त्तार मवशंकाम मोहितम्।
जीवितान्त करो भाव एवमेवा गमिष्यति॥२७
अहं हि किन्दमो नाम तपसो भावितो मुनिः।

व्यपत्रपन्मनुष्याणां मृग्यां मैथुनमाचरम् ॥२८॥
मृगो भूत्वा मृगैः सार्धं चरामि गहने वने।
न तु ते ब्रह्म हत्येयं भविष्य त्यविजानतः ॥२९॥
मृगरूपधरं हत्वा मामेवं काम मोहितम्।
अस्य तु त्वं फलं मूढ प्राप्स्यसी दृशमेव हि ॥३०
प्रियया सह संवासं प्राप्य काम विमोहितः।
त्वमप्यस्यामवस्थायां प्रेत लोकं गमिष्यसि ॥३१

महाभारत आदि पर्व अ० ११८ ॥

अर्थ—वैशम्पायन कहते हैं —कि मृग, सर्प आदि भरे हुवे किसी बड़े भारी वन में फिरते हुवे एक दिन राजा पाण्डु ने मृगों की टोली के स्वामी किसी मृग को मैथुन करते हुवे देखा। यह देख कर राजा पाण्डु ने सुन्दर परों वाले तीक्ष्ण और वेग भरे पांच श्रेष्ठ बाणों से मृग और मृगी को बींध डाला। तब मृगी के साथ समागम करता हुवा मृग मनुष्य कैसी वाणी बोल कर इन्द्रियों से व्याकुल हो भूमि पर गिरता हुवा विलाप करने लगा क्योंकि हे राजन्! वह मृग नहीं

था किन्तु तपस्वी और महा तेजस्वी मुनि कुमार अपनी स्त्री के साथ मृग का रूप धारण कर के क्रीड़ा कर रहा था। पाण्डु से कहा— तुम ने मेरा प्राण नाश किया इस कारण स्त्री और पुरुष का वध करने वाले पर वश और काम से मोहित हुये तुम्हें भी मैं शाप देता हूं कि—तुम्हारे मरने का भी ऐसा ही अवसर होगा। मैं एक तेपस्वी मुनि हूं मेरा नाम किन्दम है मनुष्यों को लज्जा आने के कारण मैं मृग का शरीर धारण कर आज अपनी स्त्री के साथ मैथुन कर रहा था। और निरन्तर मृग का रूप धारण कर मृगों के साथ गहन वन में घूमता हूं। काम के वश में हो मृग शरीर से मैथुन कर रहा था। ऐसे मुझे तुमने अज्ञान से मार दिया इस कारण तुझे ब्रह्म हत्या तो नहीं लगेगी परन्तु हे मूढ़! तुझे भी मेरी ही सी दशा का अनुभव करना पड़ेगा। जब तू अपनी स्त्री के साथ बैठ कर काम से मोहित हो मैथुन करता होगा उस समय मेरी सी अवस्था में तेरी मृत्यु होगी ॥३१॥

३६—❀ राजा वसु का आचार-तथा सत्यवती की उत्पत्ति ❀

मन्मथाभि परीतात्मा नापश्यद्दिगरिकां तदा।

अपश्यन् काम संतप्ततश्चरमाणो यदृच्छया ॥४६
पुष्प संछन्न शाखाग्रं पल्लवै रूप शोभितम् ।
अशोक स्तवकै श्छन्न रमणीय मपश्यत ॥४७॥
अधस्तात्तस्य छायायां सुखासीनो नराधिपः ।
मधु गन्धैश्च संयुक्त पुष्पगन्धं मनोहरम ॥४८
वायुना प्रेर्यमाणस्तु भ्र माय मुदमन्वगात ।
तस्य रेतः प्रस्कन्द चरतो गहने वने ॥४९॥
स्कन्न मात्रञ्च तद्रेतो वृक्ष पत्रे ण भूमिपः ।
प्रति जग्राह मिथ्या मे न पतेद्रेत इत्युत ॥५०
इदं मिथ्या परिष्कन्न रेतो मे न भवेदिति ।
तुश्च तस्याः पत्न्या मे न मोघःस्यादिति प्रभुः ।५१
सञ्चिन्त्यैवं तदा राजा विचार्य च पुनः पुनः ।
अमोघत्वञ्च विज्ञाय रेतसो राज सत्तमः ॥५२
शुक प्रस्थापने कालं महिष्याः प्रसवीक्ष्य वै ।
अभिमन्त्र्याथ तच्छुक्र मारात्तिष्ठन्त मा शुगम् ॥५३

सूक्ष्म धर्मार्थ तत्वज्ञो गत्वा श्येनं ततोऽब्रवीत।
मत्प्रियार्थ मिदं सौम्य शुक्रं ममगृहं नय ॥५४॥
गिरिकायाः प्रयच्छाशु तस्या ह्यार्त्तव मद्य वै।
गृहीत्वा तत्तदा श्येनस्तूर्ण मुत्पत्य वेगवान् ॥५५
जवं परम मास्थाय प्रदुद्राव विहङ्गमः।
तमपश्यदथायान्तं श्येनं श्येन स्तथापरः ॥५६॥
अभ्यद्रवच्च तं सद्यो दृष्ट्वै वामिष शंकया।
तुण्ड युद्ध मथाकाशे तावुभौ सम्प्रचक्रतुः ॥५७॥
युध्यतो रपतद्रे तस्त च्चापि यमुनां भसि।
तत्राद्रि कति बिख्याता ब्रह्म शापा द्वराप्सरा ॥५८
मीनभाव मनु प्राप्ता बभूव यमुनाचरी।
श्येन पाद परि भ्रष्टं तद्वीर्य मथ वासवम् ॥५९
जग्राह तरसो त्पत्य सादिका मत्स्य रूपिणी।
कदाचिदपि मत्स्यां तां ववन्धु र्मत्स्य जीविनः ॥६०
मासे च दशमे प्राप्ते तदा भरत सत्तम।

त उज्जह्रु रुदरात्तस्याः स्त्रीं पुमांसञ्च मानुषम् ।६१

महाभारत आदि पर्व अ० ६३ ॥

अर्थ—राजा का मन काम वासना से भरा हुआ था उस के मन में गिरिका से मिलने का विचार हुवा परन्तु देखने में नहीं आई इस लिये वह कामाग्नि से संतप्त होगया। और वन में चाहे तैसे विचरने लगा। इतने ही में उसने दैव की प्रेरणा से एक सुन्दर अशोक के वृक्ष को देखा। उसकी शाखाओं के अग्रभाग फूलों से ढके हुवे थे वह पत्तों से शोभायमान होरहा था और गुच्छों से छा रहा था॥४६-४७ राजा उस अशोक के वृक्ष की छाया के नीचे सुख से बैठ गया। उस समय वह अशोक मद की गन्ध से तथा फूलों की सुगन्ध से मनोहर दीख रहा था॥ ४८॥ सुगन्धित पवन की प्रेरणा से वह राजा सुरत कर्म करने के लिये आनन्द में आगया और तिस गहन वन में फिरते २ उस राजा का वीर्य स्खलित होगया॥ ४९॥ ज्यों ही राजा का वीर्य नीचे गिरा कि राजा ने मेरा वीर्य वृथा नहीं जाना चाहिये ऐसा विचार कर तत्काल उस वीर्य को अशोक के पत्ते में ले लिया। मेरा स्खलित हुवा वीर्य वृथा न जाय और ऋतु

मेरी स्त्री गिरिका का ऋतु काल भी निरर्थक न जाय ऐसा विचार कर उस महाराज ने बहुत बार चिन्ता करी तो उस वीर्य की सफलता उन के ध्यान में आई पटरानी को वीर्य भेजने का यह अवसर है ऐसा विचार कर पुत्र के उत्पन्न करने वाले मन्त्रों से वीर्य का अभिमन्त्रण किया और सूक्ष्म धर्म के विषय में तत्त्व के जानने वाले उस राजा ने अपने विमान के समीप बैठे हुवे वेग से उड़ने वाले एक बाज़ को ओर देख कर कहा कि—हे शान्त गुण वाले बाज ! मेरा हित करने के लिये तू मेरा अमोघ वीर्य मेरे घर ले जा। और मेरी गिरिका नाम वाली रानी को जो आज ही ऋतुदान कर के शुद्ध हुई है उस को तुरन्त ही दे देना। बाज़ राजा के समीप से उस वीर्य को लेकर उस समय बड़े ही वेग से तुरन्त उड़ गया ॥ ५५ ॥ परन्तु वह आकाश चारी पक्षी ज्यों ही परम वेग से आकर उड़ने लगा त्यों ही उस को एक दूसरे बाज़ ने आते देखा और उस के पास मांस है इस सन्देह से उसके ऊपर झपटा तथा वह दोनों पक्षी आकाश में चोंचों से युद्ध करने लगे ॥ ५६—५७ ॥ तब परस्पर लड़ने में उस बाज के पंजों में का वीर्य का डोना नीचे आकर यमुना नदी

के पानी में आकर गिर पड़ा। ब्रह्मा के शाप से एक अद्रिका नाम वाली उत्तम अप्सरा यमुना नदी में मछली बन कर रहती थी। मछली के रूप में रहने वाली वह अद्रिका झपाटे से उस डोने के पास जाकर बाज़ के पंजे से गिरे हुये उस वसु के वीर्य को निगल गई। अब दश महीने होने को आये तो मछलियों से आजीविका करने वाले धीवरों ने अद्रिका मछली को बांध लिया। और उस को बाहर निकाल कर चीरा तो हे भरत वंश में श्रेष्ठ राजन्! उस के पेट में एक पुरुष और एक स्त्री ऐसे दो मनुष्य निकले ॥ ५८—५९ ॥

उसी वसु के वीर्य ही से तो सत्यवती हुई जिस पर कि पराशर जी आसक्त होगये और उस से जबर दस्ती विषय भोग किया।

* ऋषि पराशरकी लीला *

३७- * पराशर ऋषि का सत्यवती से जबर-दस्ती विषय भोग करना *

रूप सत्व समायुक्ता सर्वैः समुदिता गुणैः।

सा तु सत्यवतीनाम मत्स्य द्यात्यभि संश्रयात ॥६८
तीर्थं यात्रां परिक्रामन्न पश्यद्वै पराशरः।
अतीव रूप सम्पन्नां सिद्धानामपि कांक्षिताम् ॥७०
दृष्ट्वैव स च तां धीमांश्चकमे चारुहासिनीम्।
दिव्यां तां वासवीं कन्यां रम्भोरुं मुनि पुंगवः।७१
संगमं मम कल्याणि कुरुष्वेत्यभ्यभाषत।
सा ऽब्रवीत्पश्य भगवन्पारावारे स्थिता नृपीन् ॥७२
आवयोर्दृष्टयोरेभिः कथं तुस्या त्समागमः।
एवं तयोक्तो भगवान्नीहार मसृजत्प्रभुः ॥ ७३ ॥
येन देशः स सर्वस्तु तमोभूतः इवाभवत।
दृष्ट्वा सृष्टं तु निहारं ततस्तं परमर्षिणा ॥७४
विस्मिता सा ऽभवत्कन्या व्रीड़िता च तपस्विनी।

सत्यवत्युवाच—

विद्धि मां भगवन्कन्यां सदा पितृ वशानुगाम्।७५
त्व त्संयोगाच्च दुष्येत कन्याभावो ममाऽनघ।

कन्यात्वे दूषिते वाऽपि कथं शक्ये द्विजोत्तम ॥७६
गृहं गन्तु मृषे चाहं धीमन्न स्थातु मुत्सहे ।
एतत्सं चिन्त्य भगवांस्त्विधत्स्व यदनन्तरम् ॥७७॥
एव मुक्तवतीं तां तु प्रीति मानृषि सत्तमः ।
उवाच मत्प्रियं कृत्वा कन्यैव त्वं भविष्यसि ॥७८
वृणीश्व च वरं भीरु यं त्वमिच्छसि भाविनि ।
वृथा हि न प्रमादो मे भूत पूर्व शुचि स्मिते ॥७९
एवमुक्ता वरं वव्रे गात्रसौगन्ध्य मुत्तमम् ।
स चास्यै भगवान् प्रादान्मनसः कांक्षितं भुवि ॥८०
ततो लब्ध वरा प्रीता स्त्रीभावगुण भूषिता ।
जगाम सह संसर्ग मृषिणाद्भुत कर्मणा ॥८१
पराशरेण संयुक्ता सद्यो गर्भं सुषाव सा ।
जज्ञे च यमुनाद्वीपे पाराशर्यः स वीर्यवान् ॥८४
एवं द्वैपायनो जज्ञे सत्यवत्यां पराशरात ॥८६
महाभारत आदि पर्व अ० ६३ ॥

अर्थ–इस मच्छवे ने उसको अपनी पुत्री बनाकर रखा। रूप सत्व वाली और सकल श्रेष्ठ गुणोंसे भरी हुई वह कन्या मच्छी मारों का आश्रय करने से सत्यवती हुई ॥ ६८ ॥

एक समय तीर्थ यात्रा करतेर पराशर मुनी यमुना के किनारे आ पहुंचे। उस समय पिता की सेवा रूपी सहायता के लिये जल में नौका चलती हुई मत्स्य गन्धा को उन्हों ने देखा। वह कन्या अत्यन्त रूपवती थी। सिद्ध पुरुष पर्य्यन्त उस की कामना करते थे। उसका हास्य सुन्दर और जंघा केले के समान थीं। वसु की उस कन्या को देखते साथ ही ऋषियों में श्रेष्ठ बुद्धिमान् पराशर ऋषि उस के ऊपर आसक्त होगये पराशर मुनी ने उस कन्या को देखते ही कहा कि हे कल्याणी ! तू मेरे साथ संगम कर। ऋषि के ऐसे वचन को सुन कर सत्यवती ने उतर दिया कि हे भगवन् ! देखो इन दोनों किनारों पर बहुत से ऋषि और मुनी खड़े हैं। इन सबों के देखते हुये हमारा संगम कैसे हो सकता है ? उसके ऐसे कहने को सुन कर समर्थ भगवान् पराशर ऋषि ने कुहरा को रचा ॥ ६९ – ७३ ॥

उससे तिस स्थान में अंधेरा घुटद् हो गया। उस परम ऋषि

के उत्पन्न किये हुवे कुहरे को देखकर अचरज मानती हुई वह तपस्विनी कन्या मत्स्यवती लजाती हुई बोली, कि हे निष्पाप भगवन् ! सदा पिता की इच्छानुसार चलने वाली मैं कन्या हूं ऐसा जानो ! यदि आप के संगम से मेरा कन्यापन नष्ट हो जायगा तो हे श्रेष्ठ ब्राह्मण ! मैं इस संसार में कैसे रह सकूंगी ? ७४—७६ ॥ और कन्या भाव दूषित हो जाने पर हे बुद्धिमान ऋषे ! मैं कौन मुख लेकर घर में जाकर खड़ी हो सकूंगी ! इन बातों का पूरा २ विचार करने के पीछे आपको जो उचित जचे सो करो ॥ ७७ ॥

इस प्रकार कहने वाली उस मत्स्यगन्धा से उस के ऊपर प्रसन्न हुवे ऋषियों में श्रेष्ठ पराशर ने कहा कि—

तू मेरा प्रिय करने के पीछे भी कन्या ही रहेगी। अर्थात् तेरा कन्यापन दूषित नहीं होगा ॥ ७८ ॥ और हे भीरु ! हे भामिनी ! तुझे जो वर मांगना हो वह आनन्द से मांग ले, हे पवित्र हास्य वाली ! मेरा अनुग्रह पहिले कभी भी वृथा नहीं गया है ॥ ७९ ॥

ऋषि के ऐसे वचन को सुन कर मत्स्य गन्धा ने यह वरदान मांगा, कि मेरा शरीर उत्तम सुगन्धि वाला हो जाय, ऋषि

ने पृथिवी पर उस की इच्छानुसार वरदान दिया ॥ ८० ॥ इस वर के मिलने पर प्रसन्न हुई और स्त्री भाव के गुण से भूषित हुई अर्थात् ऋतुमती हुई उस ने अद्भुत कर्म वाले मुनि के साथ बड़े आनन्द से समागम किया।

इस वरदान से वह सुगन्ध पर गन्ध वती नाम से प्रसिद्ध हुई उस के शरीर का सुगन्ध मनुष्यों को चार कोस से आने लगा ॥ ८१ ॥ इस के पीछे पराशर के देखते २ उस के सन्तान हुई वह वेद व्यास जी उत्पन्न हुवे ॥

पराशर के विषय में सत्यवती स्वयं कहती है देखो महाभारत आदि पर्व अ० १०५ में स्पष्ट है ॥

३८-❀स्त्री व्यभिचार से पतित नहीं होती❀

न स्त्री दुष्यति जारेण ब्राह्मणो वेद कर्मणा ॥ १९०

अर्थ—स्त्री जार कर्म (व्यभिचार) से पतित नहीं होती और ब्राह्मण वेद कर्म (पशु काटने) से पतित नहींहोत

३९-❀ स्त्री की शुद्धि ❀

असवर्णस्तु यो गर्भः स्त्रीणां योनौ निषिच्यते।
अशुद्धा सा भवेन्नारी यावद्गर्भं न मुञ्चति ॥ १९१

विमुक्ते तु ततः शल्ये रजश्चापि प्रदृश्यते।
तदा सा शुध्यते नारी विमलं काञ्चनं यथा ॥१६२

अत्रि स्मृति —

अर्थ—जो गर्भ स्त्री की योनि में किसी दूसरी जाति का रह जावे तो वह स्त्री केवल तब तक अशुद्ध रहती है जब तक गर्भ न छोड़े। जहां कांटा निकला और वह शुद्ध हुई मानो निर्मल सुवर्ण॥

४०—* कामासक्त राजा संवरण का सूर्य की पुत्री तपती के सम्मुख विलाप*

मन्मथाग्नि परीतात्मा सन्दिग्धा क्षरया गिरा।
साधु त्वमसितापांगी कामार्तं मत्त काशिनि॥
भजस्व भजमानं मां प्राणा हि प्रजहन्ति माम्।
त्वदर्थं हि विशालाक्षि मामयं निशितैः शरैः॥८
कामः कमल गर्भाभे प्रतिविध्यन्न शाम्यति।
दग्धमेव मनाक्रन्दे भद्रे काम महाग्निना ॥९॥

महाभारत आदि पर्व अ० १७२

अर्थ– जिस का आत्मा कामाग्नि से घिर गया है ऐसा वह राजा टूटे फूटे शब्दों से श्याम कटाक्ष वाली उस कन्या से कहने लगा हे श्याम पार्श्वि ? तेरा कल्याण हो। हे मद से दमकने वाली ? मैं काम से पीड़ित हो रहा हूं और तेरा भक्त हूं इसलिये तू मेरे साथ समागम कर। अब मेरे प्राण जाते रहे हैं। हे विशाल नयने ? तेरे लिये यह कामदेव तीखे बाण मार२कर मुझे बीन्धे डालता हैं एक क्षण को भी शान्त नहीं होता। हे कमल के गर्भ के समान वर्ण वाली कल्याणी ? कोई भी रक्षा न कर सके ऐसे समय में मुझे काम रूपी सूर्य ने डसा है। इस लिये हे विशाल और पृथु कटि वाली ? हे सुन्दर मुख वाली स्त्री ! तू मुझे स्वीकार कर। हे किन्नर के समान स्वर वाली ! मेरे प्राण तेरे आधीन हैं इत्यादि २

॥ ४—१० ॥

४१–❀ महात्मा और मुनियों का कहा हुवा प्राचीन धर्मतत्व ❀

अथ त्विदं प्रवक्ष्यामि धर्म तत्वं निबोध मे।
पुराणं ऋषिभिर्दृष्टं धर्म विद्धि महात्मभिः ॥३

अनावृताः किल पुरास्त्रिय आसन् वरानने ।
कामाचार विहारिण्यः स्वतन्त्राश्चारुहासिनी ॥४
तासां व्युच्चरमाणानां कौमारात सुभगे पतीन् ।
ना ऽधर्मो ऽभूद्वरारोहे स हि धर्मः पुरा भवत ॥५
तं चैव धर्मं पौराणं तिर्यग्योनिगता प्रजाः ।
अद्याऽप्यनु विधीयन्ते काम क्रोध विवर्जिताः॥६॥
प्रमाण दृष्टो धर्मो ऽयं पूज्यते च महर्षिभिः ।
उत्तरेषु च रम्भोरु कुरुष्वद्यापि पूज्यते ॥ ७ ॥

महाभारत आदि पर्व अ० १२२ ॥

पाण्डु ने कुन्ती से कहा कि— हे कल्याणी ?

अर्थ—अब मैं धर्मज्ञ महात्मा मुनियों का कहा हुआ प्राचीन धर्म का तत्व सुनाता हूं । उस को तू सुन ॥ ३ ॥ हे सुन्दर मुख वाली ! पहिले समय की स्त्रियों को फिरने फिरने की स्वाधीनता थी । और हे सुन्दर हास्य वाली ! पूर्वकाल की स्त्रियें बड़ी स्वतन्त्र थीं । इस कारण अपनी इच्छानुसार रति सुख के लिये विहार किया करती थीं ॥४॥

हे सुभगे ! बालक अवस्था से ही ये स्त्रियां अपने पति को छोड़ कर व्यभिचार किया करती थीं तो भी वह अधर्म नहीं गिना जाता था किन्तु हे सुजघे ! पहिले यह धर्म ही माना जाता था ॥ ५ ॥ इस पुराने धर्म का काम क्रोध से रहित पशु जाति अब भी अनुसरण करती है ॥ ६ ॥

और प्रमाण सूत इस धर्म का महर्षि सत्कार करते थे। और हे रम्भीरु ! उत्तर कुरु देश में अब भी यह धर्म आदर के साथ माना जाता है ॥ ७ ॥

४१—❀ गुरु की स्त्री से संभोग ❀

गुरु तल्पं हि गुर्वर्थं न दूषयति मानवम ।
उद्दालकः श्वेतकेतुं जनयामास शिष्यतः ॥२२

महाभारत शान्ति पर्व अध्याय ३४ ॥

अर्थ—गुरु की सेज उपकारार्थ मनुष्य को दूषित नहीं करती क्यों कि उद्दालक ऋषि ने अपने पुत्र श्वेत केतु को अपने शिष्य से उत्पन्न किया था ॥

४२—❀ खुला व्यभिचार सनातन धर्म है ❀

श्वेतकेतोः किल पुरा समक्षं मातरं पितुः ।

जग्राह ब्राह्मणः पाणौ गच्छाव इति चाब्रवीत॥११
ऋषि पुत्रस्ततः कोपं चकारामर्ष चोदितः।
मातरं तां तथा दृष्ट्वा नीयमानां बलादिव॥१२
क्रुद्धं तं तु पिता दृष्ट्वा श्वेतकेतुमुवाचह।
मातात कोषं कार्षीः स्वेषधर्म सनातनः॥१३॥

महा० आदि० अ० १२२॥

अर्थ—एक समय श्वेत केतु बैठा था उस के सामने ही उस के पिता के पास से किसी ब्राह्मण ने उस की माता का हाथ पकड़ कर अपने साथ चलने को कहा॥ ११॥
तब तो ऋषि के पुत्र ने आवेश में आकर क्रोध किया, तदनन्तर वह ब्राह्मण श्वेत केतु की माता को बलात्कार से लिये ले जाता था॥ १२॥
यह देख कर उस ऋषि पुत्र श्वेत केतु को बड़ा क्रोध आया, तब क्रुद्ध होते हुवे श्वेत केतु को देख कर उस का पिता उद्दालक उस से बोला कि— हे पुत्र! तू क्रोध न कर, यह तो सनातन धर्म है॥ १३॥

४४–❀ सेवा में तत्पर सृञ्जय की पुत्री पर नारद को आसक्ति. ❀

तस्या स्तेनो पचारेण रूपेणा प्रतिमेन च ॥१६
नारदं हृयच्छयस्तूर्णं सहसैवाभ्य पद्यत।
ववृधे हि ततस्तस्य हृदि कामो महात्मनः॥१७

महाभारत शान्ति पर्व अध्याय ३०॥

अर्थ—उस राज कन्या की सेवा और सुन्दरता से नारद जी के मन में सोया हुवा कामदेव एक दम जाग उठा जैसे शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा दिन २ बढ़ता जाता है तैसे ही उस के मन में धीरे २ बढ़ता रहा॥

* सूर्य देवता की लीला *

४५–❀ सूर्य्य ने कंवारी कुन्ती के गर्भ कर डाला ❀

नियुक्ता सा पितुर्गेहे ब्राह्मणातिथि पूजने।
उग्रं पर्यचरत्तत्र ब्राह्मणं शंसित व्रतम्॥ ४॥

निगूढ निश्चयं धर्मे यन्तं दुर्वासमं विदुः।
तमुग्रं शंसितात्मानं सर्वं यत्नै रतोषयत ॥५॥
तस्यै स प्रददौ मन्त्र मापद्धर्मान्व वेक्षया।
अभिचाराभि मंयुक्ता मब्रवीच्चैव तां मुनिः ॥६
यं यं देवं त्वमेतेन मन्त्रेणा ह्वयिष्यसि।
तस्य तस्य प्रभावेण तव पुत्रो भविष्यति ॥७॥
तथोक्ता सा तु विप्रेण कुन्ती कौतुहलान्विता।
कन्या सती देव मर्क माजुहाव यशस्विनी ॥८
सा ददर्श तमायान्तं भास्करं लोक भावनम्।
विस्मिता चानवद्याङ्गी दृष्ट्वा तन्महदद्भुतम् ॥९
तां समासाद्य देवस्तु विवस्वा निदमब्रवीत।
अयमस्म्यसितापाङ्गिब्रूहि किं करवाणि ते ॥१०
कुन्त्युवाच—
कश्चिन्मे ब्राह्मणः प्रादाद्वरं विद्याञ्च शत्रुहन्।
तद्विजिज्ञासया ह्वानं कृतवत्यास्मि ते विभो ॥११

एतस्मिन्नपराधे त्वां सिरसाहं प्रसादये ।
योषितो हि सदारक्ष्याः स्वापराधापि नित्यशः ॥१२
सूर्यउवाच—
वेदाहं सर्व मेवैतद्य दुर्वासा वरं ददौ ।
सन्त्यज्य भयमेवेह क्रियतां संगमो मम ॥१३॥
अमोघं दर्शनं मह्यमाहूतश्चास्मि ते शुभे ।
वृथाह्वानेऽपिते भीरु दोषः स्यान्नात्र संशयः ॥१४
वैशम्पायन उवाच—
एवमुक्ता बहूविधं सान्त्व पूर्वं विवस्वता ।
सा तु नैच्छद् वरारोहा वन्याहमिति भारत ॥१५
बन्धु पक्षभयाद्भीता लज्जया च यशस्विनी ।
तामर्कः पुनरेवेद मब्रवीद्भरतर्षभ ॥ १६ ॥
मत्प्रसादान्न ते राज्ञि भविता दोष इत्युत ।
एवमुक्त्वा स भगवान् कुन्तिराज सुतां तदा ॥१७
प्रकाश कर्त्ता तपनः सम्बभूव तया सह ॥१८॥

महाभारत आदि पर्व अध्याय १११ ॥

अर्थ—कुन्ती भोज ने इस पुत्री को अपने घरमें आने वाले अतिथि तथा ब्राह्मणों की पूजा का काम सौंप दिया था। तथा एक समय उग्र स्वभाव धर्म में दृढ़ निश्चय वाले अखण्ड व्रत धारी दुर्वासा मुनि आ पहुंचे तब आत्मा के जानने वाले भी उग्र कोपी उन मुनी की कुन्ती ने भले प्रकार सेवा की। और सकल यत्नों से प्रसन्न कर लिया। ४–५ ॥

इस कारण दुर्वासा मुनि ने आगे को आने वाली विपत्ति को देख कर उस को एक वशी करण मन्त्र दिया और कहा कि—। ६ ।

तू इस मन्त्र से जिस २ देवता का आह्वान करेगी उस २ देवता के प्रभाव से तेरे पुत्र उत्पन्न होगा। ७।

दुर्वासा मुनि का ऐसा वचन सुनकर कुन्ती अचरज में आगई और कन्या अवस्था वाली यशस्विनी कुन्ती ने मन्त्र का सत्य देखने के लिये सूर्य देवता का आह्वान किया ॥ ८ ॥ उस समय सब लोकों को प्रकाशित करते हुये सूर्य देव को आते देख कर पूर्ण अङ्ग वाली कुन्ती बड़े विस्मय में हो गई ॥ ९ ॥ तदनन्तर सूर्य उस के पास आकर इस प्रकार

कहने लगे कि— हे लाल कटाक्ष वाली स्त्री ! तेरे बुलाने से मैं आया हूं अब मुझे क्या करना चाहिये सो बता ॥१०
कुन्ती ने कहा कि— हे शत्रुओं का नाश करने वाले विभो! एक ब्राह्मण ने मुझे वरदान देकर यह विद्या सिखाई थी। उस की सत्यता देखने के लिये मैं ने आप का आवाहन किया है ॥ ११ ॥ इस अपने अपराध के लिये मैं आप को मस्तक से प्रणाम करके क्षमा मांगती हूं । आप मुझे क्षमा करिये । क्यों कि स्त्रियों का अपना अपराध हो तो भी क्षमा करनी चाहिये । और उन की सदा रक्षा करनी चाहिये ॥१२
सूर्य ने कहा कि— हे स्त्री ! यह वरदान तुझे दुर्वासा ऋषि ने दिया है यह बात मुझे मालूम है" इस कारण सकल भय त्याग कर तू मेरा समागम कर ॥ १३ ॥
हे शुभ स्त्री ! तूने ही मुझे बुलाया है इस कारण मेरा दर्शन तुझे निष्फल नहीं हो सकता । हे डरपोक स्त्री ! यदि तूने मेरा निष्प्रयोजन आवाहन किया होगा तो तुझे महा पाप लगेगा यह निश्चय है ॥ १४ ॥
वैशम्पायन कहतेहैं— हे भरत वंशी राजन् ! सूर्य देवता ने बहुत समझाया, कुन्ती ने बहुत कुछ कहा, परन्तु उस की

समझ में नहीं आया । और सुन्दर जंघा वाली कुन्ती कहने लगी कि— मैं कन्या हूं इस कारण मेरी इच्छा नही है । १५ । और अपने भाई बन्धुओं का मुझे बड़ा भय और लज्जा है हे भरतवंशी श्रेष्ठ राजन् ! उस यशस्विनी स्त्रीके ऐसे वचन सुन कर सूर्य नारायण उस से फिर कहने लगे कि—१६ ॥ हे रानी ! मेरी कृपा से तुझे ऐसा करने में किसी प्रकार का दोष नहीं लगेगा । इतना कह कर प्रकाश कर्ता सूर्य देव ने कुन्ती राजा की पुत्री के साथ संभोग किया ॥ १७ ॥ इसी से कर्ण पैदा हुवे थे ।

४६—❀ सूर्य ने घोड़ा बन कर घोड़ी के मुख और नाक में संभोग किया ❀

यह घोड़ी सूर्य की स्त्री (भतीजी) संज्ञा थी जो घोड़ी बन कर तप कर रही थी ।

कामातुरो हयो भूत्वा तत्र रेमे तया सह ॥३८

भविष्य पुराण प्रति सर्ग पर्व ३ खंड ४ अ० १८ में ।

अर्थ—सूर्य काम से बे वश होकर वहां घोड़ा बनकर अपनी संज्ञा के साथ रमण करने लगा ॥ ३८ ॥

अश्वरूपेण मार्त्तण्डस्तां मुखेन समासदत।
मैथुनाय विचेष्टन्तीं पर पुंसो विशंकया ॥५५
सा तं विवस्वतः शुक्रं नासाभ्यां समधारयत।
देवौ तस्यामजायेता मश्विनौ भिषजां वरौ ॥५६

भविष्य पुराण ब्राह्म पर्व अध्याय ७६ में ॥

अर्थ—सूर्य घोड़े का रूप धारण कर के उस पर पुरुष की शंका करने वाली अपनी स्त्री को भोग के लिये मुख द्वारा प्राप्त हुवा ॥ ५५ ॥

उस ने उस सूर्य के वीर्य को नाक द्वारा धारण किया। इस में से वैद्यों में श्रेष्ठ देवता आश्विनी कुमार पैदा हुये ॥ ५६ ॥

४७—❀ ऋषियों का शिव जी के वीर्य को अञ्जनी के कान में डालना ❀

तैर्गौतम सुतायां तद्वीर्यं शम्भो र्महर्षिभिः।
कर्ण द्वारा तथांजन्यां राम कार्यार्थ माहितम् ॥६
ततश्च समये तस्माद्धनु मानिति नामभाक्।
शंभुर्जज्ञे कपि तनु र्महाबल पराक्रमः ॥ ७ ॥

शिव पुराण रुद्र संहिता ३ अ० २० में ॥

अर्थ—उन महर्षियों ने उस महादेव के वीर्य को रामचन्द्र के काम के लिये गौतम की लड़की अन्जनी के कान के द्वारा अन्दर डाल दिया। कुछ समय पीछे हनुमान् नाम वाला पराक्रमी और बली वानर रूप धारी पैदा हुवा ॥

पवन देवता की लीला

८४- * काम मोहित पवन का अप्सरा अञ्जना से आलिंगन करना *

अप्सरा प्सरसां श्रेष्ठा विख्याता पुञ्जिकस्थला।
अञ्जनेति परिख्याता पत्नी केसरिणो हरेः ॥८
तस्या वस्त्रं विशालाक्ष्याः पीतरक्त दशशुभम्।
स्थितायाः पर्वतस्याग्रे मारुतो ऽपहरच्छनैः ॥९२
स ददर्श ततस्तस्या वृत्त वृरू सुसंहितौ।
स्तनौ च योनौ संहितौ सुजातं चारु चाननम् ॥९३
तां बल्वदापत श्रोणीं तनुमध्यां यशस्विनीम्।

दृष्ट्वैव शुभ सर्वाङ्गी पवनः काम मोहितः ॥१४
स तां भुजाभ्यां दीर्घाभ्यां पर्यस्वजत मारुतः।
मन्मथाविष्ट सर्वाङ्गो गतात्मा तामनिन्दिताम् ॥१५

वाल्मीकी रामायण किष्किन्धा काण्ड सर्ग ६६

अर्थ— वन में श्रेष्ठ अप्सरा अञ्जना नाम से प्रसिद्ध केसरी की धर्मपत्नी थी ॥ ८ ॥

उस पर्वत पर खड़ी हुई मृग नयनी का पीला लाल और सुन्दर वस्त्र आहिस्ता से वायु ने छीन लिया। १२।

उस समय पवन ने अञ्जना की चौड़ी और मिली जंघाऐं देखी। मोटे २ स्तन और सुन्दर मुख देखा ॥ १३ ॥

इस लम्बे बालों वाली और पतली कमर वाली अन्जना के सुन्दर अंगों को देख कर ही पवन जबरदस्ती काम से मोहित होगया ॥ १४ ॥

पवन ने अन्जना के सब अंगों से काम में फंस कर अपनी आत्मा को गिरा कर अपनी लम्बी २ दोनों भुजाओं से अपनी छाती से लगा कर भींच लिया ॥ १५ ॥

४९-❀ स्त्रियों को व्यभिचार की शिक्षा ❀

ऋतावृतौ राजपुत्रि स्त्रिया भर्त्ता पतिव्रते।
नाति वर्त्तव्य इत्येवं धर्मं धर्म विदो विदुः ॥२५
शेषेष्वन्येषु कालेषु स्वातन्त्र्यं स्त्री किलार्हति।
धर्ममेवं जनाः सन्तः पुराणं परिचक्षते ॥२६॥
भर्त्ता भार्यां राजपुत्रि धर्म्यं वाधर्म्य मेव वा।
यदब्रूयात्तत्तथा कार्यमिति वेद विदो विदुः॥२७

महाभारत आदि पर्व अ० १२२ ॥

अर्थ—हे पतिव्रता राजपुत्रि! हर एक काल में स्त्री को अपने स्वामी के पास जाना चाहिये। यह स्त्रियों का धर्म है ऐसा धर्म के जानने वाले कहते हैं ॥ २५ ॥

शेष अन्य सब समयों में स्त्री सब प्रकार से स्वतन्त्र है सन्त लोगों ने इस को पुराना धर्म कहा है ॥ २६ ॥

और हे राजपुत्रि! वेद के जानने वाले महात्मा कहते हैं कि— अपना पति चाहे धर्म की बात कहे चाहे अधर्म की बात कहे स्त्रियों को वैसा ही करना चाहिये ॥ २७ ॥

५०-❀ कौशल्या का घोड़े के साथ सोना ❀

पशूनां त्रिशतं तत्र यूपेषु नियतं तदा।
अश्वरत्नोत्तमं तत्र राज्ञो दशरथस्य ह॥ ३२॥
कौसल्या तं हयं तत्र परिचर्य समन्ततः।
कृपाणै विशशा सैनं त्रिभिः परमया मुदा॥३३
पतत्रिणा तदा सार्द्धं सुस्थितेन च चेतसा।
अवसद्रजनी मेकां कौसल्या धर्म काम्यया॥३४
होताऽध्वर्यु स्तथोद्गाता हयेन सम योजनम्।
महिष्या परिवृत्याथवा वाता मपरां तथा॥३५
पतत्रिण स्तस्य वपामुद्धृत्य नियतेन्द्रियः।
ऋत्विग् परम सम्पन्नः श्रपयामास शास्त्रतः॥३६
धूमगन्धं वपा यस्तु जिघ्रति स्मनराधिपः।
यथा कालं यथा न्यायं निर्णुदन् पाप मात्मनः॥३७
हयस्य यानि चांगानि तानि सर्वाणि ब्राह्मणाः।
अग्नौ प्रास्यन्ति विधिवत्समस्ताः शोड शार्त्विजः॥३८

वाल्मीकी रामायण बालकाण्ड सर्ग । १४ ।

अर्थ—पहिले कहे हुवे खम्भों में तीन सौ पशु और महाराज का अश्व प्रदक्षिणा आदि करके तीन खड्ग से प्रसन्नता पूर्वक उनका बध किया ॥ ३३ ॥

इसके बाद कौशल्याजी वहां धर्म प्राप्ति की कामना से स्वस्थचित्त हो इस घोड़े के पास एक रात्री तक रही । ३४ । तब होता अध्वर्यु और उद्गाता ने राजा रानी कौशल्या और परिवृत्ति समेत वावाता को यज्ञ के घोड़े के साथ नियोग करवाया ॥

५१—❀ नारद का स्त्री बनना और उस पर राजा तालध्वज का आसक्त होना ❀

यह कथा भविष्य पुराण उत्तर पर्व ३ अध्याय ३२ श्लोक ४७ से ७७ तक देखो—कि एकबार श्रीकृष्ण जी और नारद जी भ्रमण करते हुये कान्य कुब्ज के समीप एक वसिष्ठ नाम के तालाब पर पहुंचे पहिले कृष्ण ने स्नान किया बाद मे नारद जी स्नान करने लगे । जब नारद जी स्नान करके उठे तो बड़ी आखों वाली मोटे स्तनों वाली सुन्दर स्त्री बन गये

। इसी स्थान पर भ्रमण करते हुये नालध्वज नाम का एक राजा आगया वह इस स्त्री को देख कर आसक्त होगया और इस स्त्री को घोड़े पर बैठा कर अपने घर लेगया। इस के साथ विवाह करके खूब भोग विलास किया।

५२—❀ नारद के गर्भ और ५० नौजवानों की उत्पत्ति ❀

ततस्त्रयो दशे वर्षे तस्या गर्भो ऽभवन्महान् ॥
पञ्चाशत संख्यया जाताः उत्पत्ति वर्जिताः।
आरूढ़ यौवना सर्वे सुताः संग्राम कोविदाः ॥

अर्थ—इस के अनन्तर तेरहवें वर्ष मे इस के बड़ा भारी गर्भ होगया। जिस में से ५० नौजवान जो युद्ध में बड़े चतुर थे पैदा हुये॥

५३—❀ इन्द्र ने गोतम की अनुपस्थिती में उस की स्त्री से संभोग किया ❀

एक बार इन्द्र ने गौतम की अनुपस्थित देखकर स्वयं गौतम का रूप धारण करके उसके आश्रम में गया और गौतम की स्त्री अहिल्या से कहा कि—

ऋतुकालं प्रतीक्षन्ते नार्थिनः सुसमाहिते ।
संगमं त्वहमिच्छामि त्वया सह सुमध्यमे । १८ ।
मुनि वेशं सहस्राक्षं विज्ञाय रघुनन्दन ।
मतिं चकार दुर्मेधा देवराज कुतूहलात् ॥ १९ ॥

वाल्मीकी रामायण बाल काण्ड सर्ग ४८

—में सारी कथा पढ़ो

अर्थ—भोग की इच्छा करने वाले ऋतु काल की वाट नहीं देखते इस लिये हे सुन्दरी ! मेरे मन की कामना पूरी करो मैं तुम्हारे साथ संगम करना चाहता हूं ॥ १८ ॥ हे राम मंद बुद्धि अहिल्या गौतम रूप धारी इन्द्र को जान कर भी इन्द्र के साथ समागम करने में लग गई ॥

अहिल्या ने इस कारण को जान लिया कि यह इन्द्र ही है क्यों कि ऋषि लोग कभी भी बिना ऋतु काल अपनी स्त्री से समागम नहीं करते ।

यह वह इन्द्र है जिस ने अहिल्या से भोग किया और पुनः गौतम को पता लगने पर उसने उसको शाप दिया और उस के दोनों अण्डकोश गिर पडे पुनः देवताओं ने उसके स्थान

५६—❀ पर स्त्री के साथ भोग न करने से दोष ❀

पुराने जमाने की बात है सिन्धु द्वीप प्रतापी राजा तप कर रहा था उस के सामने एक सुन्दर स्त्री आई, सिन्धु द्वीप ने मन में चंचल होकर उस स्त्री से पूछा— सुन्दरि ! तुम कौन हो ? उस ने उत्तर दिया मैं जल पति वरुण की स्त्री हूं । वेत्रवती मेरा नाम है । और आप से संभोग की इच्छा रखती हुई यहां आप के पास आई हूं ॥ और— वराह पु० अ० २८

साभिलाषां परस्त्रीं च भजमानां विसर्जयेत ॥११
स पुरुषः पापोज्ञेयो ब्रह्म हत्यां च विन्दति ।
एवं ज्ञात्वा महाराज भजमानां भजस्व माम् ॥१२
एवमुक्तस्तया राजा साभिलाषोप भुक्तवान् ।
तस्य सद्यो ऽभवत पुत्रोद्वादशार्क समप्रभः ॥१३॥
वेत्रवत्युदरे जातो नाम्ना वेत्रासुरो ऽभवत् ।
बलवानति तेजस्वी प्राग्ज्योतिष पति स्त्वभूत ।१४

स कालेन युवा जातो बलवान दृढ़ विक्रमः ।
महायोगेन संयुक्तो जिगायेमां वसुन्धराम् ॥१५

अर्थ—जो पुरुष पास में आई हुई समागम की इच्छा-वती स्त्री को इन्कार कर देता है उसे पापी जानना चाहिये, और उसे ब्रह्म हत्या का पाप लगता है । इसलिये महाराज ! पास में आई हुई मेरे साथ आप समागम कीजिये ॥
तब राजा ने उस के साथ संयोग किया और तुरन्त ही बड़ा तेजस्वी एक पुत्र पैदा होगया ॥

क्योंकि वह वेत्रवतीके पेटसे पैदा हुवाथा इस लिये उस का नाम वेत्रासुर पड़ा । वह आसाम का शक्तिशाली राजा हुवा । युवा होने पर उस बलवान ने सम्पूर्ण पृथिवी को जीत लिया ॥

५७–❀ पुराण कर्त्ता व्यास जी और उन के पुत्र शुकदेव जी की व्यभिचार से उत्पत्ति ❀

पौराणिकानां व्यभिचार दोषो न शंकनीयः कृतिभिः कदाचित । पुराण कर्त्ता व्यभिचार

में मीगडे के अण्ड कोश लगाये ॥

१४-❀ उर्वसी से मित्र और वरुण का विषय भोग ❀

एक बार वरुण अपने घरपर बैठा हुवाथा अकस्मात् उस के पास उर्वसी आगई। उसको देख कर वरुण कामासक्त होगया इस ने उर्वसी से मैथुन करने को कहा— उर्वसी ने उत्तर दिया कि— मुझ को आप से पूर्व मित्र ने बुलाया है। पुनः मित्र के पास गई तो मित्र बड़ा क्रुद्ध हुवा और कहने लगा कि— तू पहिले वरुण के पास क्यों गई। इत्यादि सारी बातें होने पर मित्र और वरुण के सम्मिलित वीर्य से वसिष्ठ जो उत्पन्न हुवे देखिये—

तद्धि तेजस्तु मित्रस्य उर्वश्या पूर्व माहितम्।
तस्मिन्समभवत्कुम्भे तत्तेजो यत्र वारुणम् ॥ ६ ॥
कस्यचित्त्वथ कालस्य मित्रावरुण सम्भवः।
वशिष्ठस्तेजसा युक्तोजज्ञे ईक्ष्वाकु दैवतम् ॥७॥

वाल्मीकी रामायण उत्तर कांड सर्ग ५७ ॥

अर्थ—वही मित्र का तेज भी उसी पहिले घड़े में डाल दिया था इस लिये उस घड़े में मित्र और वरुण का तेज इकट्ठा हो गया किसी समय में इस से मित्र और वरुण के सम्मिलित वीर्य से वशिष्ठ जी की उत्पत्ति हुई जो कि ईक्ष्वाकु कुल के देवता हुवे ॥

५५❀-कामासक्त सूर्य के पुत्र का एक ब्राह्मणी से संभोग ❀

गच्छन्तीं तीर्थ यात्रायां ब्राह्मणीं रविनन्दनः ।
ददर्श कामुकः शांतः पुष्पोद्याने च निर्जने ॥१२६
तया निवारितो यत्नाद्बलेन बलवान् सुरः ।
अतीव सुन्दरीं दृष्ट्वा वीर्याधानं चकार सः ।१२

ब्रह्मवै० ब्रह्म० अ० १० में

अर्थ—सूर्य के पुत्र ने काम से आतुर हो कर बाग में एक ब्राह्मणी को तीर्थ यात्रा के लिये जाते हुये देखा। इस स्त्री के इनकार करने और हटाने पर भी उस बलवान देवता ने जबरदस्ती वीर्याधान कर दिया।

जातस्तस्यापि पुत्रो व्यभिचार जातः ॥

सुभाषित रत्नभाण्डागार ॥

अर्थ—पौराणिक लोगों के विषय में बुद्धिमान लोगों को व्यभिचार की शंका कभी भी नहीं करनी चाहिये। क्यों कि पुराणों के कर्त्ता व्यास जी भी व्यभिचार से ही उत्पन्न हुये थे और उनके पुत्र शुकदेव जी की उत्पत्ति भी व्यभिचार से ही हुई थी ॥

व्यभिचार प्रकरण समाप्तम्।

❀ ॐ ❀

द्यूत [जूआ] प्रकरण

आरम्भः ॥

[द्यूत (जूआ) प्रकरण]

* जूए जैसे महापाप का विधान *

१—❀ राजा को जूआ खेलने की आज्ञा ❀

कुर्य्यात्महोत्सवं राजा दिनानि नव सप्त वा ॥२४
वेश्याङ्गना नरै हृष्टै र्द्यूत क्रीड़ा महोत्सवैः ।
कर्पूर वस्त्रदानैश्च सम्मानैश्च परस्परम् ॥२६॥
रात्रौ प्रजागरः कार्यो रक्षणाय प्रयत्नतः ॥२७

भवि० उत्तर पर्व अध्याय १३६ ॥

अर्थ—राजा को चाहिये कि वह महेन्द्र ध्वज उत्सव सात या नौ दिन का करे ॥ २४ ॥ कन्जरियां और मनुष्य प्रसन्नता से जूआ खेलने और महोत्सवों से कापूर वस्त्रों के दान से परस्पर एक दूसरे के सत्कार से ॥ २६ ॥
रात्रि समय यत्न कर के रक्षार्थ जागरण करें ॥ २७ ॥

२—❀ दिवाली के दिन जूए में जीतने वाले की वर्ष भर जीत ❀

पराजयो विरुद्धः स्यात् प्रतिपद्यु दिते रवौ ।
प्रात र्गोवर्धनः पूज्यो द्यूतं रात्रौ समाचरेत ॥३०

पद्म पु० उत्तर खण्ड अध्याय १२४ में ।

अर्थ—यदि हार हो तो विरुद्ध रहे इस लिये दिवाली के अगले दिन प्रतिपदा को सूर्य के निकलने पर गोवर्धन की पूजा करे और रात्रि को जूआ खेले ॥

३-❀ महादेव की द्यूत क्रीड़ा ❀

तमब्रवीद्देवराजो ममेदं त्वं विद्धि विद्वन भुवनं वशे स्थितम् । ईशोऽहमस्मीति समन्युरब्रवीद द्रष्ट्वा तमक्षैः सुभृतं प्रमत्तम् ॥ १५ ॥
क्रुद्धश्च शक्रं प्रसमीक्ष्य देवौ जहास शक्रञ्च शनैरुदैक्षत । संस्तम्भितोऽभूदथ देवराजस्तेनेक्षितः स्थाणु रिवाव तस्थे ॥ १६ ॥

महाभारत आदि पर्व अ० १६७ ॥

अर्थ—यह देखकर देवराज इन्द्र ने कहा कि ओ विद्वान युवा पुरुष ! यह सब विश्व मेरा है और मेरे वश में है यह बात जान ले ! वह युवा पुरुष पाशे खेलने में इतना अधिक तल्लीन हो रहा था कि उस ने इन्द्र की बात सुनी भी नहीं। फिर इन्द्र ने क्रोध युक्त होकर कहा कि अरे तरुण पुरुष ! मैं इस सब विश्व का स्वामी हूं ॥ १५ ॥

इस प्रकार इन्द्र को कोप में भरा हुवा देख कर वह युवा जो साक्षात् महादेव थे उन को हंसी आगई और वह धीरे २ इन्द्र की ओर देखने लगे। इस युवा की दृष्टि पड़ने पर जैसे खम्भा अचल खड़ा हो तैसे इन्द्र स्थिर होगया ॥

४-❀जूआ खेलने की विधि रूप में आज्ञा❀

तस्मिन्द्यूतं प्रकर्त्तव्यं प्रभाते तत्र मानवैः।
तस्मिन्द्यूते जयो यस्य तस्य संवत्सरं जयः ॥
परा जयो विरुद्धश्च लाभ नाश करो भवेत्।
दयिताभिश्च सहितैर्नेया सा च भवेन्निशा इति ॥

निर्णय सिन्धु द्वितीय परिच्छेद कार्त्तिक शुक्ला प्रतिपदा निर्णय में हेमाद्रि ब्राह्म का प्रमाण।

अर्थ—प्रातःकाल जूआ खेले। उस जूए में जिसकी जीत हो उस की वर्ष भर तक जीत रहेगी। हारने वाले को हार भी रहेगी। और स्त्रियों के साथ रात्रि व्यतीत करे। इसी प्रकार स्कन्द पुराण में भी आता है।

"प्रातर्गोवर्धनं पूज्यद्यूतं चापि समाचरेत्"

अर्थात् प्रातः काल जूआ खेले और गोवर्धन की पूजा करे।

५ ❀ शिव पार्वती का जूआ खेलना- ❀

शंकरश्च भवानी च क्रीड़या द्यूत मास्थिते।
भवान्याभ्यर्चिता लक्ष्मी र्धेनुरुपेण संस्थिता २६
गौर्य्या जित्वा पुरा शम्भु र्नग्नो द्यूते विसर्जितः
अतोर्थं शंकरो दुःखी गौरी नित्यं सुखेस्थिता २७
प्रथमं विजयो यस्य तस्य संवत्सरं जयः।
एवं गते निशीथे तु जने निद्रान्धलोचने। २८

पद्म पुराण उत्तर खण्ड अ० १२४ श्लो० २६ से ३० तक

अर्थ—शिव पार्वती ने जूआ खेला। पार्वती ने लक्ष्मी की पूजा की थी अतः पहिले की गई प्रतिज्ञानुसार शिवजी

को जीत कर नंगा कर के घर से बाहिर निकाल दिया था पार्वती प्रसन्न और शिव जी दुःखी हुए। पहिले जिस को जीत हो वही संवत्सर भर जीतेगा। जब सब लोग सो जावें तब अन्धेरी रात्रि में जूआ खेले॥ ठीक है पौराणिक जो श्रीकृष्ण महाराज के विषय का "द्यूतं छलयतामस्मि" का पाठ करते हैं जब भगवान् को ही जूए का स्वरूप मान बैठे तो जूआ खेलने में क्या दोष मानें॥

जूआ प्रकरण समाप्तम्।

ॐ

विविध प्रकरण

प्रारम्भः ।

* विविध प्रकरण *

१-❀ आदि सृष्टि में ब्रह्मा के मुख से प्रथम रीछ की उत्पत्ति ❀

पूर्वमेव मया सृष्टो जाम्बवा नृक्ष पुंगवः ।
जृम्भमाणस्य मे सहसा मम वक्त्रा दजायत ॥७

गाल्मीकी रामायण बाल काण्ड सर्ग १७ में ।

अर्थ—ब्रह्मा जी ने बतलाया कि सब से पूर्व मैं ने जाम्बवन्त ऋक्ष को बनाया। जब जम्भाई लेने लगा तो मेरे मुख से कूद कर दूर जापड़ा ॥

२-❀ सूर्य के पैरों से ब्राह्मणों की उत्पत्ति ❀

चरणाभ्यां तथा द्वौ तु पादाभ्यां द्वौ तथा खग ॥२६
य एते मत्सुता राजन्नर्घ्या ब्राह्मण सत्तमाः ॥३१

भविष्य पुराण ब्राह्म पर्व १ अ० ११७ श्लो० ३३ से ३५

अर्थ—चरणों से दो, पैरों से दो पैदा हुए हे अर्जुन!

यह जो मेरे पुत्र हैं यह श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं और सदा पूजा के योग्य हैं।

३-❀ ऋषिमुनियों की उत्पत्ति ❀

जातो व्यासस्तु कैवर्त्यां श्वपाक्याश्च पराशरः।
शुक्याः शुकः कणादाख्यस्तथोलूक्याः सुतोऽभवत २२
मृगीजोऽथर्षशृंगोऽपि वशिष्ठो गणिकात्मजः।
मन्दपालो मुनि श्रेष्ठो नाविका पत्यमुच्यते॥ २३
माण्डव्यो मुनि राजस्तु माण्डुकी गर्भसम्भवः २४

भविष्य० ब्राह्म पर्व अध्याय ४२।

अर्थ—धीवरी के पेट से व्यासजी उत्पन्न हुवे, चाण्डालिनी के पेट से पराशर जी, तोती के पेट से शुकदेव जी, और कणाद मुनि उल्लूनी के पेट से पैदा हुवे॥ २२॥ हरिणी के पेट से ऋष्यशृंग, कन्जरी के पेट से वशिष्ठ मुनि और मन्दपाल मल्लाहिनी के पेट से पैदा हुवे॥ २४॥ मन्डूक मुनि मीन्डकी से पैदा हुवे और अन्य भी बहुत से ऋषि मुनि इसी प्रकार उत्पन्न हुवे॥ २४॥

५–* कल्युगी ब्राह्मणों के लिये देवीभागवत की सम्मति *

पूर्वं ये राक्षसा राजन् ते कलौ ब्राह्मणाः स्मृताः।
पाखण्ड निरताप्रायो भवन्ति जन वञ्चकाः ॥
असत्य वादिनः सर्वे वेद धर्म विवर्जिताः ॥
शूद्र सेवा परा केचित् नाना धर्म प्रवर्त्तकाः।
वेद निन्दा कराः क्रूराः धर्मभ्रष्टाति वादुकाः॥

देवी भागवत स्कन्द ६ अ० ११

अर्थ—हे राजन ! जो पूर्व काल में राक्षस थे वे ही इस वर्त्तमान कलियुग में ब्राह्मण कहे गये। जो पाखण्ड में लगे रहते हैं लोगों को ठगते हैं, झूट बोलते हैं वेद धर्म को नहीं मानते, शुद्रों की सेवा करते, अनेक धर्म चलाते हैं वेद की निन्दा करते हैं, स्वभाव से क्रूर अर्थात् दुराग्रही हठी हैं। और धर्म से भ्रष्ट तथा वाचाल होते है।

६–* विष्णु के अवतार पूजकों को मृत्यु का भय *

शप्तो हरिस्तु भृगुणा कुपितेन कामं,
मीनो बभूव कमठः खलु सूकरस्तु।
पश्चान्न सिंह इति यश्छल कृद्धरायां,
तान् सेवतां जननि मृत्यु भयं न किं स्यात ॥

देवी भागवत स्कन्द ५ अध्याय १६ ॥

अर्थ–जिस हरि ने विष्णु के शाप द्वारा मीन (मच्छली) कमठ (कछुआ) सूकर (सूअर) नृसिंह के अवतार धारण किये और पीछे वामन आदि बन कर संसार में छल किया जो उस विष्णु के अवतारों की भक्ति करेंगे उनको क्यों नहीं मृत्यु का भय प्राप्त होगा अर्थात् अवश्य ही होगा ॥

७—❀ शिव के पूजकों को दोनों लोकों में दुःख ❀

शम्भो पपात भुवि लिंग मिदं प्रसिद्ध',
शापेन तेन च भृगो विपिने गतस्य।
तं ये नराः भुवि भजन्ति कपालिनं तु,
तेषां सुखमिह कथ मिहापि परत्रमातः ॥१६॥

देवी भाग० स्कन्द ५ अ० १६ ॥

अर्थ—जिस शिव का भृगु के शाप से "लिंग" गिर गया था और जो हाथ में मनुष्यों की खोपड़ियां रखता है। उस शिवजी की जो उपासना करते हैं उनको इस लोक और पर लोक में भी दुःख मिलता है अर्थात् कहीं भी सुख नहीं मिलेगा।

८— * अज्ञानी लोग गणेश की पूजा करते हैं *

यो भूद गजानन गणाधिपति र्महेशात।
तं ये भजन्ति मनुजाः वितथ प्रयत्नाः ॥
जानन्ति ते न सकलाथ कलावदात्रीं,
त्वां देवी विश्व जननीं सुखसेवनीयाम् ॥२०॥

देवी भागवत् स्कन्द ५ अ० १६ ॥

अर्थ—जो गणों का अधिपति शिवजी पैदा हुवा हैं उस गणेश को जो मूर्ख मनुष्य पूजा करते हैं वह भी सकल कला देने वाली देवी आप को नहीं जानते। इसलिये मूर्खता से गणेश की पूजा करते हैं ॥

९—❀ सूर्य्य और अग्नि पूजकों को महा दुःख ❀

क्लिष्यन्ति ते ऽपि मुनयस्तव दुर्विभाव्यं ,
पादां बुजं नहि भजन्ति विमूढ चित्ताः ,,
सूर्याग्नि सेवन पराः परमार्थ तत्वं ।
ज्ञानंन ते शतै रपि वेद मारम् ॥ ३३ ॥

देवी भागवत् स्कन्द ५ अध्याय १६ ।

अर्थ—वे मुनि भी नरक में जायेंगे जो आपके चरणामृत को छोड़ कर सूर्य्य आदि की पूजा करते हैं । उन्हों ने सैंकड़ों वेद मंत्र भी पढ़ कर उनके सार को नहीं जाना ।

१०—❀ जल वाले तीर्थ और पत्थर के देवता पवित्र नहीं करते ❀

नाम्ब मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिला मयाः ।
ते पुनन्त्युरु कालेन दर्शनाद्देव साधवः ॥११

श्रीमद्भागवत स्कं० १० अ० ८४

अर्थ—पानी वाले तीर्थ नहीं होते मही और पत्थरों की मूर्त्तियां देवता नहीं होतीं। वे बहुत लम्बे चौड़े समय में भी पवित्र नहीं करते। साधु महात्मा दर्शन मात्र से ही पवित्र करते हैं।

११—❀ सूर्यादि ग्रहों की पूजा से पाप दूर नहीं होते ❀

नाग्निर्न सूर्यो न च चन्द्र तारकाः।
न भूर्जलं खंश्वसनो ऽथ वाङ् मनः।
उपासिता भेद कृता हरन्त्यघं,
विपश्चितो घ्नन्ति मुहूर्त सेवया॥ १२॥

श्रीमद्भागवत स्कं० १० अ० ८४

अर्थ—सूर्य, अग्नि, चन्द्र, तारा, भूमि, जल, आकाश वायु, वाणी, मन आदि पदार्थों की उपासना करने से पाप दूर नहीं होते। क्यों कि यह परमात्मा से भेद करने वाले हैं इनकी उपासना से परमात्मा की उपासना नहीं हो सकती।

❀ मूर्ति पूजकों को पदवी— ❀

यस्यात्म बुद्धि कुणपे त्रिधातु के।
स्वधीकल त्रादिषु भौम इत्यधीः।
यत्तीर्थ बुद्धि सलिलेन कर्हि चित्,
जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखरः॥ १३॥

श्रीमद्भागवत स्कं० १० अ० ८४

अर्थ—जो वात, पित्त, कफ तीन मलों से बने हुए शरीर में आत्म बुद्धि करता है स्त्री आदि में स्वबुद्धि पृथ्वी से बनी हुई मूर्तियों में जो पूज्य बुद्धि और पानी में तीर्थ बुद्धि कभी भी करता है वह गोखर अर्थात् गौओं का चारा ढोने वाला गधा है॥

१३—❀ मूर्त्ति पूजा किसने चलाई ❀

प्राप्ते कला वहह दुष्टतरे च काले,
न त्वां भजन्ति मनुजा न सुवञ्चितास्ते।
धूर्तैः पुराण चतुरैर्हरि शंकराणाम्,
सेवा पराश्च वहिता स्तवनिर्मितानाम्॥१२॥

देवी भा० स्कं० ५ अ० १६॥

अर्थ—इस घोर कलियुग में पुराणों के बनाने वाले धूर्त्त और चतुर लोगों ने शिव ब्रह्मा, विष्णु आदि की पूजा अपने पेट भरने के लिए चलाई है—

१४—❀ शिव पुराण में मूर्त्ति पूजा का खण्डन ❀

तीर्थानि तोय पूर्णानि देवान् पाषाण मृन्मयान्।
योगिनो न प्रपद्यन्ते स्वात्म प्रत्यय कारणात ॥२६

शिव पुराण वायु संहिता खं० २ अ० ३६

अर्थ—पानी से भरे हुवे तीर्थ और मिट्टी के बने हुए देवताओं को योगी लोग ग्रहण नहीं करते। क्योंकि इन को अपनी आत्मा पर विश्वास होता है॥

१५—❀ ब्रह्म वैवर्त्त पुराण में मूर्त्ति पूजा का खण्डन ❀

अवेद विहिता पूजा सर्व हानि करंडिका।
पूजेयमधुना वा ते किमु वा पुरुष क्रमात् ॥५२

दृष्टो देवस्त्वया कस्मिन् पूजेयं चानुसारिणी।
साक्षात खादति देवस्ते साक्षात् किं वा न खादति ५३
साक्षाद्भुंक्ते च यो देवः सुप्रशस्तं तदर्चनम्।
साक्षात खादति नैवेद्यं विप्ररूपी जनार्दनः ॥५४
ब्राह्मणे परितुष्टे च सन्तुष्टाः सर्वे देवताः।
किं तस्य देव पूजायां यो नियुक्तो द्विजार्चने ॥५५

ब्रह्म वैवर्त० खण्ड ४ अ० २१

कृष्ण ने नन्द से कहा कि यह इन्द्र की पूजा वेद विरुद्ध है-

अर्थ—वेदों के विरुद्ध जो पूजा है वह सब के लिये हानि कर है यह पूजा अब नई ही चलाई है या परम्परा से चली आती है ॥ ५२ ॥ तूने देव को कहां देखा है कि जिस के अनुसार पूजा करता है। तेरा देवता साक्षात् खाता है या नहीं खाता है। ५३। जो देवता साक्षात्। खाता है उस के प्रसन्न होने पर सब देवता प्रसन्न हो जाते हैं। जो ब्राह्मणों की पूजा में लगा हुवा है उसका और देवताओं की पूजा से क्या प्रयोजन है ॥ ५५ ॥

१६—❀ भविष्य पुराण में मूर्त्ति पूजा का खण्डन ❀

सत्ये तु मानसी पूजा देवानां तृप्ति हेतवे।
त्रेतायां वह्नि पूजा च यज्ञ दानादिका क्रिया॥११
द्वापरे मूर्त्ति पूजा च देवानां वै प्रियं करी।
कलौ तु दारुणे प्राप्ते ब्रह्म पूजनमुत्तमम॥१०

भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व ३ खण्ड ३ अ० ३२

अर्थ—देवताओं की तृप्ति के लिये सतयुग में मन में ईश्वर की पूजा की जाती थी। त्रेता युग में अग्नि की पूजा यज्ञ और दान आदि क्रिया। द्वापर में देवताओं की मूर्त्ति की पूजा प्यारी थी। और कलयुग में परमात्मा की ही पूजा सब से उत्तम है॥

१७—❀ जाटों का निरादर ❀

महीराजस्तु बलवान् तृतीयो देहली पतिः,
महो महीनस्य नृपते र्दश माप्य मृति गतः॥२५

चवहानेश्च सकुलं क्षापयित्वा दिवं ययौ ,
तस्य वंशे तु राजन्या स्तेषां पत्न्याः पिशाचकैः २६
म्लेच्छैश्च भुक्तवत्या बभूवुर्वर्ण संकराः ।
नवै आर्य्या नवै म्लेच्छा जट्टा जात्या च मेहनः।
मेहना म्लेच्छ जातीया जट्टा आर्य मया स्मृताः
क्वचित् क्वचिच्च ये शेषाः क्षत्रियाश्च वहानिजाः२८

भवि०पु०प्रति सर्ग खगड ४ अ०२ ।

अर्थ—पृथ्वीराज बहादुर देहली का तीसरा राजा था वह शहाबुद्दीन के वश पड़ कर मारा गया ॥२५॥ चौहानों का वह कुल तरकी करके मृत्यु को प्राप्त होगया और इन के वंश में जो राजा हुए उनकी स्त्रियों ने पिशाच ॥ २४ ॥ मुसलमानों से भोग किया इस से वर्ण संकर सन्तान उत्पन्न हुई और न तो वह आर्य्य ही बने और न म्लेच्छ बने । वह जाति के जाट और मेहन बन गये ॥ २७ ॥ इन में से जो मेहन थे वह तो मुसलमान बन गये और जो जाट थे वह आर्य्य बन गये और जो कहीं २ बाकी बचे वह चौहान क्षत्रिय कहलाये ॥ २८ ॥

१८—❀ कायस्थ और सुनारों का निरादर ❀

कायस्थेनो दरस्थेन मातुर्मांसं न खादितम् ।
तत्र नास्ति कृपा तस्य दंता भावेन केवलम् ॥३६
स्वर्णकारः स्वर्ण बनिक कायस्थश्च व्रजेश्वर ।
नरेषु मध्येते धूर्त्ता कृपाहीना महीतले ॥३७॥
हृदयं क्षुर धारा भं तेषां नास्ति च सादरम् ।
शतेषु सज्जना कोपि कायस्थो नेतरो चतौ ॥३८
सुबुद्धि शिव युक्तश्च शास्त्रज्ञो धर्म मानसः ।
न विश्व मेत्तेषु तात स्वात्म कल्याण हेतवे ॥३९

अर्थ—कायस्थ ने पेट में रहते हुये मां का मांस नहीं खाया इस में इस की कृपा नहीं है । बल्कि केवल इस लिए कि इस के दान्त न थे ॥ ३६ ॥ सुनार, सराफ और कायस्थ हे नन्द यह मनुष्यों में धूर्त कहे जाते हैं । और यह पृथ्वी पर कृपा से हीन होते हैं ॥ ३७ ॥ इन का हृदय छुरे की धारा के समान तीक्ष्ण होता है । इन के हृदय में दया नहीं होती सैंकड़ों में से कोई एक कायस्थ तो सज्जन मिल जाता

है। परन्तु जो अन्य रहे उन में से तो कोई मिलता ही नहीं ॥ ३८ ॥ जो बुद्धिमान पुरुष कल्याण चाहने वाला शास्त्रों का ज्ञाता और धर्मात्मा हो प्यारे इसका अपने आत्मा के कल्याण के लिये इन पर विश्वास नहीं करना चाहिये ॥३९

१६—❀ बालक को धाया का दूध पिलाना ❀

बिदारी कन्द स्व रसं मूलं का यसजं तथा।
धात्री स्तन्य विशुद्धयर्थं मुद्गपूय रसाशिनी ॥१३
कुष्ठा वचा मया ब्राह्मी मधुरा क्षौद्र सर्पिषा।
वर्णायुः कान्ति जननं लेह्यं बालस्य दापयेत ॥१४
स्तन्याभावे पयश्छागं गव्यं वा तद्गुणं पिबेत ॥१५

गरूड़ पुराण आचार काण्ड अ० १७२

अर्थ—धाया के दूध को साफ करने लिये बिदारी कन्द आदि का रस धाया को पिलाया जावे। और मूंगी आदि के रस का भी प्रयोग किया जावे ॥ १३ ॥ कुट, चव, हरड़, ब्राह्मी आदि औषधियों को शहद और घृत के साथ चिटनी बालक को चटाई हुई वर्ण आयु और तेज को

पैदा करती है। दाई के दूध के अभाव में बकरी या गाय का दूध मां या दाई जैसा दूध बना कर पिलाना चाहिये ॥ १४—१५ ॥

२०—❀श्री कृष्ण गोपियों से क्या कहते हैं❀

जब कृष्ण जी गोपियों के कपड़े लेकर वृक्ष पर चढ़गये और गोपियों ने वस्त्रों की तलाश की तो कृष्ण ने ताना दे कर यह बात कहीं—

आताराध्या कथं सा च वस्तूनि किं न रक्षति ६८
चिन्तां कुरुत तां पूज्यां तुष्टाव बलिरीश्वरीम्।
युष्माक मीदृशी देवी न शक्ता वस्तु रक्षणे ॥६९
कथं व्रत फलं सा वा दातुं शक्ता सुरेश्वरी।
फलं प्रदातुं या शक्ता सा शक्ता सर्व कर्मणि ७०
व्रता राध्या च या देवी सा वा मे किं करिष्यति ॥७४

ब्रह्म वैवर्त्त० खण्ड ४ अ० २७ ॥

अर्थ—वह व्रत से पूजा की हुई देवी कैसी है! जो वस्तुओं की रक्षा नहीं करती। इस पूजा की जाने वाली

देवी की चिन्ता करो और स्तुति करो। क्या तुम्हारी ऐसी देवी है जो वस्तुओं की रक्षा करने की भी शक्ती नहीं रखती फिर वह व्रत का फल देने में कैसे समर्थ हो सकती है! जो व्रत का फल देने में शक्ती रखती है वही सब कामों में समर्थ हो सकती है। मैं देखूंगा कि वह तुम्हारी व्रत से पूजा की हुई देवी मेरा क्या बिगाड़ेगी॥

२१—❀ चारों वर्णों का यज्ञोपवीत ❀

कुश सूत्रं द्विजानां स्याद्राज्ञां कौशेय पट्टकम्।
वैश्यानां चीरणं श्रौमं शूद्राणां शण वल्कजम् ॥९
कार्पासं पद्मजं चैव सर्वेषां शस्तमीश्वर।
ब्राह्मण्या कर्तितं सूत्रं त्रिगुणं त्रिगुणीकृतम् ॥१०

गरुड़ आचार० अ० ४३॥

अर्थ—कुश की यज्ञोपवीत ब्राह्मणों का, क्षत्रियों का, रेशम का, वैश्यों का सूत का और शूद्रों का शण का यज्ञोपवीत होना चाहिये। हे राजन्! अथवा सब के लिये ही सूत का होना उचित है। जो ब्राह्मणी के हाथ का कता हुवा तीन बार तेहरा किया गया हो।

२२—❀ मथुरा महात्म्य और उस का दुष्परिणाम ❀

मथुरायां कृतं पापं तत्रैव च विनश्यति।
एषा पुरी महा पुण्यायस्यां पापं न विद्यते ॥५८॥
कृतघ्नश्च सुरापश्च चौरो भग्न व्रतस्तथा।
मथुरां प्राप्य मनुजो मुच्यते सर्व किल्विषैः ॥५९
तिष्ठेद् युग सहस्त्रं तु पादेनैकेन यः पुमान्।
तस्याधिकं भवेत्पुण्यं मथुरायां निवासिनः ॥६०
पर दाररता ये च ये नरा अजितेन्द्रियाः।
मथुरा निवासिनः सर्वे ते देवानर विग्रहाः ॥६१
यदन्येषां सहस्त्रेण ब्राह्मणानां महात्मनाम्।
एकेन पूजितेन स्यान्माथुरेणाखिलं हि तत् ६२
अनृग् वै माथुरो यत्र चतुर्वेदस्त थापरः।
न च वेदै श्चतुर्भिः स्यान्माथुरेण समः कश्चित् ६४

वराह पुराण अ० १६६ ॥

अर्थ—मथुरा में किया हुवा पाप वहीं नष्ट हो जाता है। यह महा पवित्र नगरी है। इस में पाप का नाम भी नहीं ॥ ५८ ॥ कृतघ्न, शराबी, चोर, समय से पहिले अपने ब्रह्मचर्य को तोड़ने वाला, मनुष्य मथुरा में आकर सब पापों से छूट जाता है ॥ ५९ ॥ एक हजार युगों तक एक पैर पर खड़ा हो कर तप करने वाले से मथुरा के निवासी का अधिक पुण्य होता है ॥ ६० ॥ जो मथुरा के निवासी दूसरों की स्त्रियों से व्यभिचार करने वाले और जो इन्द्रिय लोलुप हों वे सभी नर रूप धारी देवता हैं ॥ ६१ ॥

जो फल हजारों ब्राह्मणों के पूजने से होता है वह सम्पूर्ण फल मथुरा निवासी एक ब्राह्मण के पूजने से होता है ॥६३ जहां एक मन्त्र को भी न पढ़ा हुवा मथुरा निवासी हो और दूसरा चारों वेदों का विद्वान हो उन में से चारों वेदों का विद्वान मथुरा निवासी की कभी बराबरी नहीं कर सकता ॥ ६४ ॥

२३-❀ पांच प्रकार के ब्राह्मण चाण्डाल हैं ❀

आह्वायका देवलका नक्षत्र ग्रामयाजकाः।

एते ब्राह्मणचाण्डालाः महा पथिक पञ्चमः ॥६

महाभारत शान्ति० अ० ७६ ॥

अर्थ—जो ब्राह्मण (धर्माधिकारी) कचरी में नौकर हों, ज्योतिष का धन्दा करते हों, सब ग्राम को यज्ञ कराते हों, धन लेकर पुजारी का काम करते हों, और जहाजमें चढ कर समुद्र की यात्रा करते हों,

यह पांच प्रकार के ब्राह्मण चांडाल कहलाते हैं।

२४- ❀ वेद और यज्ञ हीन ब्राह्मण से राजा बेगार उठवावे ❀

अश्रोत्रिया सर्व एव सर्वे चानहिताग्नयः ।
तान् सर्वान् धार्मिको राजा बलिविष्ठिञ्च कारयेत ४

महाभारत शान्ति पर्व अ० ७६ ॥

अर्थ—जो ब्राह्मण वेद न पढे हों और अग्नि में होम न करते हों उन सब ब्राह्मणों से धर्मात्मा राजा कर लेवे और बेगार भी करावे ॥ ५ ॥

२५—❀ब्रह्मा के मस्तक पर गर्भ ❀

ब्रह्मा यिय क्षु भगवान् सर्व लोक पितामहः।
ऋत्विजो नात्मन स्तुल्यान्द दर्शों ति हिनः श्रु तम १५
स गर्भं शिरसा देवो बहु वर्षाण्यधारयत्।
पूर्णे वर्ष सहस्रे तु स गर्भः क्षु पतोऽपतत। १६
स क्षु पो नाम सम्भूतः प्रजापति ररिन्दम।
ऋत्विगासी न्महाराज यज्ञे तस्य महात्मनः।१७

महा भारत शान्ति पर्व अध्याय १२२॥

अर्थ मैंने सुना है कि किसी समय सब लोकों के पिता मह भगवान् ब्रह्माजी को यज्ञ करने की इच्छा हुई परन्तु उन्हों ने अपने समान किसी भी ऋत्विज को नहीं देखा ॥ १५ ॥ तब ब्रह्मा ने बहुत से वर्षों तक अपने मस्तक पर एक गर्भ को धारण किया। जब एक हजार वर्ष पूरे हुवे तब ब्रह्मा को छींक आई और वह गर्भ मस्तक पर से नीचे पृथिवी पर गिर पड़ा॥ १६ ॥

हे शत्रुओं को दमन करने वाले महाराज! वह गर्भ नीचे गिरते ही उस में से क्षुप नाम का प्रजापति उत्पन्न हुवा। और वह महात्मा ब्रह्मा के यज्ञ में ऋत्विज बना॥ १७॥

२६—❀ शालग्राम की उत्पत्ति ❀

गण्डक्यापि पुरातप्तं वर्षाणां मयुतं विधो।
शीर्ण पर्णाशनं कृत्वा वायु भक्षाय्यन्तरम् ॥३९
दिव्यं वर्ष शतं तेपे विष्णुं चिन्तयंती तदा।
ततः साक्षाज्जगन्नाथो हरिर्भक्त जन प्रियः ॥४०
उवाच मधुरं वाक्यं प्रीतः प्रणत वत्सलः।
गण्डकि त्वां प्रसन्नो ऽस्मि तपसा विस्मितो ऽनघे ४१
अनविच्छिन्नया भक्त्या वयं वरय सुव्रते।
किं देयं तद्वद स्वाशु प्रीतो ऽस्मि वर वर्णिनि॥४३
ततो हिमांशो! सा देवा गण्डकी लोक तारिणी ५७
प्रांजलिः प्रणता भूत्वा मधुरं वाक्य म ब्रवीत्।
यदि देव प्रसन्नो ऽसि देयो मे वाञ्छितो वरः ५८
मम गर्भगतोभूत्वा विष्णो मत्पुत्र तां व्रज।
ततः प्रसन्नो भगवां श्चिन्तयामास गोपते॥५९
किं याचितं निम्नगया नित्यं मत्संग लुब्धया।

दास्यामि याचितं येन लोकानां भवमोक्षगम् ॥६०
इत्येवं कृपया देवो निश्चित्य मनसा स्वयम् ।
गण्डकी मब्रवीत् प्रीतः शृणुदेवी वचो मम ॥६१॥
शालग्राम शिला रूपी तवगर्भगतः सदा ।
स्थास्यामि तव पुत्रत्वे भक्तानुग्रह कारणात ॥६२

वराह पुराण अध्याय १४४ ।

अर्थ—हे चन्द्र ! पुराणे जमाने में प्रथम सूखे पत्ते खा कर और फिर वायु के आधार पर गण्ड की ने दश हजार वर्ष तक तप किया ॥ ३६ ॥ जब सौ दिव्य वर्ष तक विष्णु का ध्यान करते उस ने तप किया तब भक्तजन प्रिय जगन्नाथ विष्णु ने भी ॥ ४० ॥ मीठे शब्दों में कहा गण्डकी ! मैं तेरे तप से विस्मित और प्रसन्न हूं निरन्तर भक्ति से प्रसन्न हूं । वर मांग मैं बड़ा प्रसन्न हूं । वरो क्या दूं । ४२ ।

हे चन्द्र तब लोक तारणी गण्ड की ने हाथ जोड़ कर प्रणाम कर मधुर शब्दों में कहा हे देव ! यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे आप यही वरदान दीजिये ॥ ५७—५८ ॥

आप मेरे गर्भ में आकर मेरे पुत्र बनें । हे चन्द्र ! प्रसन्न

हुये भगवान यह सोचनेलगे। नित्य मेरा संग चाहनेवाली इस नदी ने क्या मांगा ? अच्छी, दूगा जिस से मनुष्यों का संसार से छुटकारा हो ॥ ५९-६० ॥

भगवान् ने मन में यह सोच कर कृपा पूर्वक गण्डकी से कहा देवी ! मेरी बात सुनो ॥ ६१ ॥

शालग्राम पत्थर का रूप धारण कर तेरे गर्भ में आ भक्तों पर कृपा करने के कारण से सदा तेरा पुत्र बना रहूंगा । ६२

८७-❀अप्सराओं पर विष्णुजी की प्रसन्नता❀

भगवन् ब्रह्मतनय भर्तृकामा वयं द्विज ।
नारायणश्च भर्त्ता नोयथास्यात्तत्प्रचक्ष्वनः ॥ ५ ॥
नारद उवाच-वसन्त शुक्लपक्षस्य द्वादशी या भवेच्छुभा ९
तस्यामुपोष्य विधिवन्निशायां हरिमर्चयेत ।
तस्योपरि रक्त पुष्पै मण्डलं कारयेद्बुधः ॥ १० ॥
एवमुक्त्वा स देवार्षिः प्रययौ नारद क्षणात ।
ता अप्येतद्व्रतं चक्रुस्तुष्ट श्चासां स्वयं हरि ॥ २०

वराह पुराण अ० ५४ ॥

अर्थ—उत्तम पति प्राप्त करने का व्रत बतलाते हुवे वराह जी कहते हैं जब नारद जी स्वर्ग में पहुंचे तब अप्सराओं ने उन से कहा— भगवन् ! जिस प्रकार विष्णु हमारे पति हों यह उपाय बतलाइये। नारद ने कहा—वसन्त में शुल्क पक्ष की द्वादशी को सारा दिन उपवास कर के रात्रि में विष्णु की पूजा करे। विष्णु के ऊपर लाल फूल चढ़ाये इत्यादि। इतना कह कर नारद तो चले गये। और अप्सराओं ने वह व्रत किया जिस से विष्णु भी उन पर प्रसन्न हुवे॥

२८—❀ असम्भव आयु और ब्रह्मलोक में अप्सराओं से विहार ❀

कल्प मेकं ब्रह्मलोक उषित्वा प्सरसां गणैः।
क्रीड़न्ति ते पुनः सृष्टौ जायन्ते चक्रवर्त्तिनः॥२०
त्रिंशत्कल्प सहस्राणि जीवन्ते नात्र शंशयः॥२१

वराह पुराण अध्याय ४४॥

पुत्र के लिये तप करते हुवे राजा वीरसेन से याज्ञवल्क्य ने कहा कि इतना कठिन व्रत क्यों करते हो। तुम वैशाख शुक्ल पक्ष की जन्मदग्नि द्वादशी का व्रत करो। राजा

वीर सेन ने तप किया। और उन्हें धार्मिक पुत्र नल की प्राप्ति हुई। जो अब भी व्रत करें तो उन्हें उत्तम पुत्र, लक्ष्मी, कान्ति प्राप्त होती है। परलोक में भी उस को फल मिलता है उसे सुनो—

अर्थ—वे ब्रह्मलोक में अप्सराओं के साथ एक कल्प (८ अरब ६४ करोड़ ३६०००) वर्ष तक रह कर क्रीड़ा करते हैं। और फिर संसार में जन्म लेकर चक्रवर्त्ती राजा बन कर ३० हजार कल्प तक जीते हैं। इस में कुछ भी संशय नहीं ॥ २१ ॥

२६—❀ द्विजों के साथ शूद्रों का विष्णु मन्दिर में प्रवेश ❀

प्रतिष्ठाने पुर वरे विष्णो रायतनं महत् ॥३८
प्रभात समये तत्र विष्णोरायते शुभे।
ब्राह्मणाः क्षत्रियाः वैश्याः शूद्रास्तत्र समागताः ३९
वाचकस्तत्र पठति कथां पौराणिकीं शुभाम्।
मम मित्रञ्च तत्रैव नित्य कालं च गच्छति ॥४०

वराह पुराण अ० १६५ ॥

श्री वराह जीएक प्रेतऔर एक पथिक कीबात चीत सुनाते हैं। प्रेत ने कहा—

अर्थ—प्रतिष्ठान नामक उत्तम नगर में एक बड़ा विष्णु का मन्दिर है। प्रातः काल उस विष्णु के मन्दिर में ब्राह्मण शूद्र सब एक जगह इकट्ठे होते थे। और कथा वाचक वहां पुराणों की कथा कहता था।

मेरा मित्र वहां प्रति दिन जाता था। एक दिन मित्र के आग्रह से मैंने भी वहां इस चातुः सामुद्रिक नामक कूर्गों का महात्म्य सुना। कथा की समाप्ति पर कथा वाचक के लिये सब ने दान दिया परन्तु मैंने कुछ भी न दिया अतः मर कर मुझे प्रेत योनि मिली ॥ ४० ॥

२०—❀ शूद्रों के वेद पढ़ने का अधिकार ब्राह्मणों ने छीन लिया ❀

समः सर्वेषु भूतेषु स्थावरेषु चरेषु च।
धर्मराज महाबाहो पितृतुल्य पराक्रमः ॥ २ ॥
ब्राह्मणानां हितार्थाय यदुक्तं मे प्रदक्षिणम्।

इदं श्रेयः समाख्यानं श्रुतं श्रुतपरं पदम् ॥३
त्रयो वर्णा महाभाग यज्ञ सामान्य भागिनः ।
शूद्रा वेद पवित्रेभ्यो ब्राह्मणैस्तु बहिष्कृताः ॥४

वराह पुराण अ० २११ ॥

यम से नारद जी कहते हैं—हे धर्म राज ! आप चराचर सब जगत्

अर्थ—पर सम दृष्टि रखते हैं। ब्राह्मणों के हितार्थ आप ने जो यह प्रदक्षिणा (उत्तम) कल्याण कारी उपदेश किया वह सुना— हे महाभाग ! ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तो यज्ञ के समान भाग वाले हैं परन्तु शूद्रों को ब्राह्मणों ने पवित्र वेदों और यज्ञों से बहिष्कृत कर दिया ॥ ४ ॥

३१—❀ शूद्र की प्रशंसा ❀

अथ शूद्रस्य वक्ष्यामि कर्माणि शृणु माधवि ॥३५
निरहंकार शुद्धात्मा आतिथेयो विनीतवान् ।
श्रद्दधानो ऽति पूतात्मा लोभ मोह विवर्जितः ३८
नमस्कार प्रियो नित्यं मम चिन्ता व्यवस्थितः ।

शूद्रः कर्माणि मे देवि! य एवं समाचरेत् ॥३६॥
त्यक्त्वा ऋषि सहस्राणि शूद्रमेवभजाम्यहम् ॥

वराह पुराण अ० ११५ ॥

श्री वराह भगवान पृथ्वी से कहते हैं—

अर्थ—हे देवी! पृथिवी! अब शूद्रों का कर्म कहूंगा सुनो—जो शूद्र निरभिमान, पवित्रान्तः करण, अतिथीसत्कार करने वाला, विनम्र, श्रद्धालु, निर्लोभ, निर्मोह, बड़ों को नमस्कार करने वाला और मेरा ध्यान करने वाला हो। मैं हजारों ऋषियों को छोड़ कर उस शूद्र को ही प्यार करता हूं॥

३२—❀ विना दंगे ब्राह्मणों की निष्फलता ❀

हुताग्नि नैव संतप्य सर्व पापापनुत्तये।
धारयित्वैव विधिवत् ब्रह्मकर्म समाचरेत
चक्रचिह्न विहीनस्तु यः पूजयति केशवम् ॥३१
वैफल्यं तस्य तद्याति पूजा मन्त्र जपादिकम् ॥३३
अग्नि तप्तेन चक्रेण ब्राह्मणो बाहु मूलयोः।३४

पद्म पुराण ई उत्तर खण्ड अध्याय । २५१

अर्थ—ब्राह्मण सब पापों की निवृत्ति के लिये अपनी भुजाओं पर अग्नि में तपे चक्र से दाग देकर विधिवत् सब वैदिक कर्मों को करे । जो ब्राह्मण इस चक्र चिन्ह से विहीन होकर परमात्मा की पूजा करता है । उस का पूजा, मन्त्र, जप आदि सब निष्फल जाता है । इस से आगे ३७ वें श्लोक में तो श्राद्ध में दगे ब्राह्मण के बिना अन्य को भोजन करानी निषिद्ध है । क्यों कि पितर निराश जाते हैं ॥

३३—❀ बिना दगे ब्राह्मण को गधे पर चढ़ा कर शहर से बाहिर निकलना ❀

ऊर्ध्वपुण्ड्र विहीनस्तु शंख चक्र विवर्जितः ।
तं गर्दभे समारोप्य बहिः कुर्यात्स्वपत्तनात ॥४४
तप्ते नैवांकनं कुर्यात् ब्राह्मणस्य विधानतः ॥४६
अचक्र धारिणं विप्रं दूरतः परिवर्जयेत ॥५१

पद्म पुराण ई उत्तर खण्ड अध्याय २५१ ॥

अर्थ—पुण्ड्र और शंख चक्रादि के बिना दगे ब्राह्मण

को गधे पर चढ़ा कर शहर से बाहिर निकाल दे वा दूर करदे यहां पर आपस्तम्ब शाखा का भी प्रमाण दिया है।

इससे आगे श्लोक ७३ में तो स्त्री, पुत्र, भृत्य तक को दागना लिखा है।

३४—❀ राम चन्द्र जी नारायण नहीं थे किन्तु मनुष्य ही थे ❀

रावण की आज्ञा पाकर प्रहस्त मन्त्री हनुमान् से पूछता है।

विष्णुना प्रेषितो वापि दूतो विजय कांक्षिणा।
न हि ते वानरं तेजो रूप मात्रन्तु वानरम् ॥१०
तत्वतः कथयस्वाद्य नातो वानर मोक्ष्यसे।
अनृतं वदतश्चापि दुर्लभं तव जीवितम् ॥११

बालमीकी० सर्ग ५०

अर्थ—हे वानर! तू इन्द्र, वरुण, कुबेर, यम इन में से किस का दूत है। अथवा तुझे विष्णु ने भेजा है। झूठ मत बोलना हनुमान् ने उत्तर दिया— कि—

एवमुक्तो हरिवरस्तदा रक्षो गणेश्वरम्।

अब्रवीन्नास्मि शक्रस्य यमस्य वरुणस्य च ।
धनदेन न मे सख्यं विष्णुना नास्मि चोदितः ॥१३

वाल्मीकी रामा० सर्ग ५० ॥

अर्थ—मैं इन्द्र, वरुण, कुबेर, विष्णु का भेजा हुवा नहीं हूं । आगे और भी स्पष्ट है—

सुग्रीवो न च देवोयं न यक्षो न च राक्षसः ।
मानुषो राघवो राजन्सुग्रीवश्च हरीश्वरः ॥
तस्मात्प्राण परित्राणं कथं राजन्करिष्यसि ॥२७

वाल्मीकी रामा० सर्ग ५१ ॥

अर्थ—सुग्रीव न देवता है न यक्ष न राक्षस। रामचन्द्रजी मनुष्य हैं सुग्रीव वहरीश्वर हैं ॥

३४—❀ पुराण कलयुग में बने और व्यास जी भी कलयुग में हुवे ❀

कृष्णे युगे च सम्प्राप्ते कृष्ण वर्णो भविष्यसि ४५
धर्माणां विविधानां च कर्त्ता ज्ञान करस्तथा ।
भविष्यसि तपो युक्तो न च रागाद्विमोक्ष्यसे ॥६४

वीतरागश्च पुत्रस्ते परमात्मा भविष्यति।
महेश्वर प्रसादेन न तद्वचन मन्यथा ॥ ४७ ॥

महाभारत शान्ति पर्व अ० ३४६।

अर्थ—कलयुग में तुम काले रंग के (कृष्णद्वैपायन) होगे। विविध धर्म के ज्ञाता तथा कर्त्ता होगे। तेरा पुत्र शिव की कृपा से महात्मा तपस्वी होगा। शिव का वचन झूठ न होगा॥

३६—❀ कलयुग में देवता कहां रहें ❀

इदं कृतं युगं नाम कालः श्रेष्ठः प्रवर्त्तितः।
अहिंस्या यज्ञ पशवो युगे ऽस्मिन्कृत दन्यथा ॥७७
चतुष्पात्सकलो धर्मो भविष्यत्यत्र वै सुराः।
ततस्त्रेता युगं नाम त्रयी तत्र भविष्यति ॥७८
प्रोक्षिता यत्र पशवो वधं प्राप्स्यन्ति वै मखे।
यत्र पादश्चतुर्थो वै धर्मस्य न भविष्यति ॥७९
ततो वै द्वापरं नाम मिश्रः कालो भविष्यति।
द्विपाद हीनो धर्मश्च युगे तस्मिन्भविष्यति ॥८०

ततस्तिष्ठेऽथ संप्राप्ते युगे कलि पुरस्कृते ॥८१
यत्र वेदाश्च यज्ञाश्च तपः सत्यं दमस्तथा।
अहिंसा धर्म संयुक्ताः प्रचरेयुः सुरोत्तमाः ॥८२

महाभारत शान्ति पर्व अध्याय। ३४०

अर्थ—यह सत्ययुग नामी सुन्दर समय प्रवृत्त किया हैं इस युगमेंयज्ञ में पशु वध नहीं होता। इसीलिये चारों चरण धर्म के रहेगें। इस से आगे त्रेतायुग आवेगा उसमें प्रोक्षित पशु यज्ञ में मारे जावेंगे। इसलिये धर्म के तीन चरण रह जायेंगे। आगे द्वापर में मिश्रित यज्ञ होगा। तब दो पाद धर्म के रहेगें। तब कलियुग आवेगा तब हे देवता लोगों, तुम लोग जहां हिंसान हो, वेदहो, सत्य हो, तप हो, वहां (आर्य समाज में) रहना।

३७—❀ नियोग को भीष्म ने परम धर्म बतलाया ❀

असंशयं परो धर्मस्त्वया मात रुदाहृतः।
त्वमपत्यं प्रति च मे प्रतिज्ञां वेत्थ वै पराम् ॥१३

महाभारत आदि पर्व अध्याय १०३

अर्थ—हे मातः! निस्सन्देह तुम ने परम धर्म करने के लिये कहा परन्तु सन्तान उत्पन्न करने के बारे में मेरी बड़ी प्रतिज्ञा को जानती हो ॥ १३ ॥ अर्थात् प्रतिज्ञा के कारण मैं सन्तान उत्पन्न न करूंगा ॥

३८—❀ जटिला के एक साथ सात पति ❀

श्रूयते हि पुराणे ऽपि जटिलानाम गोतमी।
पीनध्यासित वती सप्त धर्मभृतां वरा ॥१४॥

महाभारत आदि पर्व अध्याय १६६ ॥

अर्थ—पुराणों में सुनते हैं कि जटिला नामक गोतम ऋषि की लड़की ने सात ऋषियों के साथ सहवास किया अर्थात् एक साथ ७ पति किये।

३६—❀ वार्क्षी के एक साथ १० पति ❀

तथैव मुनिजा वार्क्षी तपोभिर्भावितात्मनः।
सङ्गता ऽभूदृश भ्रातृ नेकनाम्नः प्रचेतसः ॥१५॥

महाभात आदि पर्व अध्याय १६६।

अर्थ—ऐसे ही वार्क्षी ने प्रचेतस नाम के दश तपस्वी

भाईयों से गमन किया ॥

४०–❀ दिव्या देवी के २१ पति ❀

पद्मपुराण भूमि खण्ड २ अध्याय ८५ में श्लोक ५० से ७० तक वेन के प्रति विष्णु देव उज्जल कुञ्जल सम्वाद सुनाते हैं। इस संवाद के पूर्व। ध्याय ३८ से यह प्रसंग है कि वेन शुद्ध मति होगया तब कथा भी कही कि—

लक्ष द्वीप में दिवो दास राजा सत्य धर्म परायण था उस की दिव्या देवी कन्या का विवाह चित्रसैन से कर दिया। विवाह के अनन्तर वह राजा चित्रसेन मर गया। चित्र सेन की मृत्यु के पीछे राजा दिवोदास ने ब्राह्मणों से पूछा कि मेरी लड़की विधवा होगई है अब क्या करना चाहिये तब ब्राह्मण बोले—

विवाहो जायते राजन्कन्यायास्तु विधानतः।
पतिर्मृत्युं प्रयात्यस्या नोचेत्संगं करोति च॥५९
महा व्याध्यभिभूतश्च त्यागं कृत्वा प्रयाति वा।
प्रव्राजितोभवेद्राजन् धर्म शास्त्रेषु दृश्यते॥६०

अविवाहितायां कन्याया मुद्वाहः क्रियते बुधैः।
न स्याद्रजस्वला यावद् अन्येष्वपि विधीयते ६१

अर्थ—हे राजन्! ऐसी अवस्था में धर्मशास्त्रानुसार कन्या का विवाह हो सकता है। (जब तक पति संयोग न हो) पति मर जावे वा महाव्याधि (कोढ़ी) आदि होजावे। या त्याग कर चला जावे। वा सन्यासी हो जावे। तब विवाहिता कन्या का भी फिर विवाह हो सकता है।

और जब तक रजस्वला न हो तब तक तो अन्य कारणों से भी विधि पूर्वक पुनः संस्कार हो सकता है इस में कुछ भी सन्देह नहीं॥ ऐसा होने पर राजा ने स्वयम्बर रचा। तब सब उस के रूप लावण्य को देख कर आपस में लड़कर मर गये। इस प्रकार २१ बार विवाह हुवा। परन्तु वह सभी मृत्यु को प्राप्त होगये।

क्षत्रियों के नष्ट होने पर दिव्या देवी दुखी होकर पर्वत की गुफा में जाकर रोने लगी।

४१-❀ द्रौपदी के एक साथ ५ पति ❀

क्रमेणचानेन नराधिपात्मजावरस्त्रियस्ते जगृहु-

स्तदा करम्। अहन्य हन्युत्तम रूप धारिणो महारथाः
कौरव वंश वर्द्धनः ॥१३॥ महा० आदिपर्व अ० १६८

अर्थ—तदनन्तर प्रत्येक उत्तम रूप धारी कुरुवंश की शोभा बढ़ाने वाले राजकुमार महारथी पाण्डुओं ने विधि पूर्वक राजकुमारी का पाणिग्रहण किया ॥ १३ ॥

४२—❀धृतराष्ट्र को ब्राह्मण ने नमस्ते कहा❀

स राजन्मानसं दुःखमपनीय युधिष्ठिरात् ।
कुरु कार्य्याणि धर्म्याणि 'नमस्ते' भरतर्षभ ५०

अर्थ—हे राजन् ! युधिष्ठिर से मानसिक दुःख दूर कर के धर्म युक्त कार्य करो । हे भरतर्षभ ! तुझे नमस्कार हो ॥

४३—❀श्री कृष्ण जो ईश्वर को मानते थे❀

ईश्वरः सर्व भूतानां हृद्देशे अर्जुन तिष्ठति ॥गीता

अर्थ—हे अर्जुन ! प्रभु सब प्राणियों के हृदय में विराजमान है

४४—❀ श्री कृष्ण को यादवों तथा उस समय के लोगों ने भी ईश्वर का अवतार नहीं माना❀

दुर्भगवत लोको ऽयं यदवो नितरामपि ।
ये संवसन्तो न विदुर्हरि मीना इवोडुपम् ॥

भागवत ३-२-८ ॥

अर्थ– कृष्ण को पास बसते हुवे भी मन्द भाग्य दुनियां ने विषेश कर यादवों ने ईश्वर का अवतार नहीं माना।

४५-❀कलियुग में विधवा विवाह का विधान❀

पुरा सत्य युगे नारी चोत्तमा च पति व्रता।
त्रेतायां मध्यमा जाता निकृष्टाद्वापरे पुनः ॥२
अधमा हि कलौ नारी पर पुंसो पभोगिनी ।८
अतस्तु कलि काले वैवाहो विधवा स्त्रियाः ॥ ९

भविष्य पुराण प्रति सर्ग पर्व ३ खण्ड ३ अध्याय ३१

अर्थ–पहिले सत्ययुग में स्त्री उत्तम पतिव्रता होती थी। त्रेता में मध्यम होगई। और द्वापर में निकृष्ट होगई। २८। कलि युगमेंस्त्री पर पुरुष के साथ भोग करने वाली अधम होगई। ईस लिये कलियुग में विधवा स्त्री का विवाह होजानाचाहिये।

४६–❀ पुराणों में पुराण श्रवण निषेध ❀

स्कान्दंपाद्मं वामनं वै वाराहं तथाग्नेयं भविष्यं पूर्वं भृष्टौ। एतान्याहुः राजसानीति विप्रास्तत्र क देशः सात्विकस्तामसश्च ॥ ५३ ॥ रजः प्राचुर्या द्राजसा नीति चाहुः श्राव्याणि नैतानि मुमुक्षुभिस्सदा ॥ ५४ ॥

गरुड़ पुराण ब्रह्म कांण्ड अ० १

अ०—स्कन्द, पद्म वामन, वराह अग्नि, भविष्य पुराण इनको विद्वान् राजस पुराण कहते हैं। इन में कोई२ अन्श सात्विक और तामस भी है ॥ ५३ । रजोगुण की प्रधानता के कारण इन्हें राजस कहते हैं सो मोक्षाभिलाषी इन पुराणों को कभी भी न सुनें। ५४। और

ब्रह्माण्ड लैंग्ये ब्रह्मवैवर्त्तकं वै मार्कंडेयं ब्राह्मादित्यकं च। एतान्याहु स्तामसानीति विप्रास्तत्रैकदेशः सात्विको राजसश्च ॥५५॥ श्राव्याणि नैतानि मनुष्य लोके तत्त्वेच्छुभि स्तामसानीत्यतो हि ॥ ५६ ॥

गरुड पुराण ब्राह्म कां० अ० १ ।

अ० ब्रह्माण्ड, लिंग, ब्रह्मवैवर्त्त, मार्कंडेय ब्राह्म और आदित्य पुराण इन पुराणों को विद्वान तामस पुराण कहते हैं। इनमें से कोई २ स्थल सात्विक और राजस भी हैं ॥ ५५ । तत्वाभिलाषी लोग मनुष्य लोक में इन्हें न सुनें क्योंकि यह तामस हैं ॥ ५६ ॥

४७—❀ पुराण भ्रम में फंसाते हैं ❀

व्यामोहाय चराचरस्य जगतश्चैते पुराणागमास्तां तामेवहि देवतां परत्रिकां जल्पन्ति कल्पा

वधि।सिद्धान्ते पुनरेक एव भगवान् विष्णु स-
मस्तागमो। व्यापारेषु विवेचनं व्यतिकरं नित्येषु
निश्चीयते॥ पद्म पु०

अर्थ—जितने पुराण हैं सब मनुष्य को भ्रम जाल में फंसाने वाले वा डालने वाले हैं उनमें अनेक देव ठहराये हैं, एक ईश्वर का निश्चय ही नहीं होता, केवल एक विष्णु भगवान पूज्य हैं॥

४८—❀ वेद प्रामाण्य ❀

सत्यं सत्यं पुनःसत्य मुद्धृत्य भुजमुच्यते। वेदाच्छास्त्र
परं नास्ति न देवः केशवात्परः॥ ग०पु० ब्रह्म०अ०१०

अर्थ—मैं दुहाई देकर सत्य १ कहता हूं कि वेद से बढ़कर कोई शास्त्र नहीं और परमात्मा से बढ़कर कोई देवता नहीं। इस गरुड़ पुराणमें पुराण नाम नहीं बल्कि वेद को ही परम प्रमाण अर्थात् सब से उत्तम माना है। सो सब पुरुषों को प्रभु की पवित्र वाणी वेद पर ही श्रद्धा और पूर्ण विश्वास होना चाहिये क्योंकि-धर्मंजिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः॥ से मनुजी ने भी वेदको ही धर्म की जिज्ञासा में परम प्रमाण माना है। वेदानुकूल कर्म करते हुवे हीं हम अपने जीवन को उच्च और पवित्र बना सकते हैं। "अतः संश्रुतेन गमेमहि माश्रुतेन विराधिषि॥ इस वेद आज्ञा के अनुसार हम वेद से मिले रहें और कभी वेद से पृथक न हों। इसी से हम सब का कल्याण होगा न कि कपोल कल्पित वेद विरुद्ध पुराणों से।

गुरुकुल विश्वविद्यालय काङ्गड़ी पुस्तकालय
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु० परिग्रहण क्रमांक 2862
दयानन्द महिम्ना महा...

२५९१
582

२५९१/582

लेखक की अन्य पुस्तकें—

जो शीघ्र ही छप कर तैयार होने वाली हैं।

१— पौराणिक मत विचित्र लीला द्वितीय भाग।

२— वैदिक अधिकार मार्तण्ड (अर्थात वेदयज्ञ और यज्ञोपवीत का मनुष्य मात्रके अधिकार)

इस पुस्तकमें वेद, शास्त्र ब्राह्मण अन्य सूत्र अन्य स्मृति पुराण वाल्मिकीय रामायण महाभारत आदि ग्रन्थों के १५० के लगभग पृष्ठ प्रमाण दिये गये हैं जिन से वेद, यज्ञ, और यज्ञोपवीत का अधिकार मनुष्य मात्र के लिये सिद्ध है।

३— वैदिक सुभाषित रत्न माला (गुटका)।

४—महर्षि दयानन्द जी का उपकार और हमारा कर्त्तव्य (ट्रैक्ट)

५— उपदेशामृत अर्थात् वेदोपदेश शतक।

पुस्तक मिलने का पता:—

पण्डित गोपालसिंह

"विद्यावाचस्पतिः"

धर्माध्यापक

सी० ए० वी० हाई स्कूल हिसार।